मानस भवन में आओ उतारें आरती ।
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि हो नागरी ॥

रेशम भारती

जून-2019

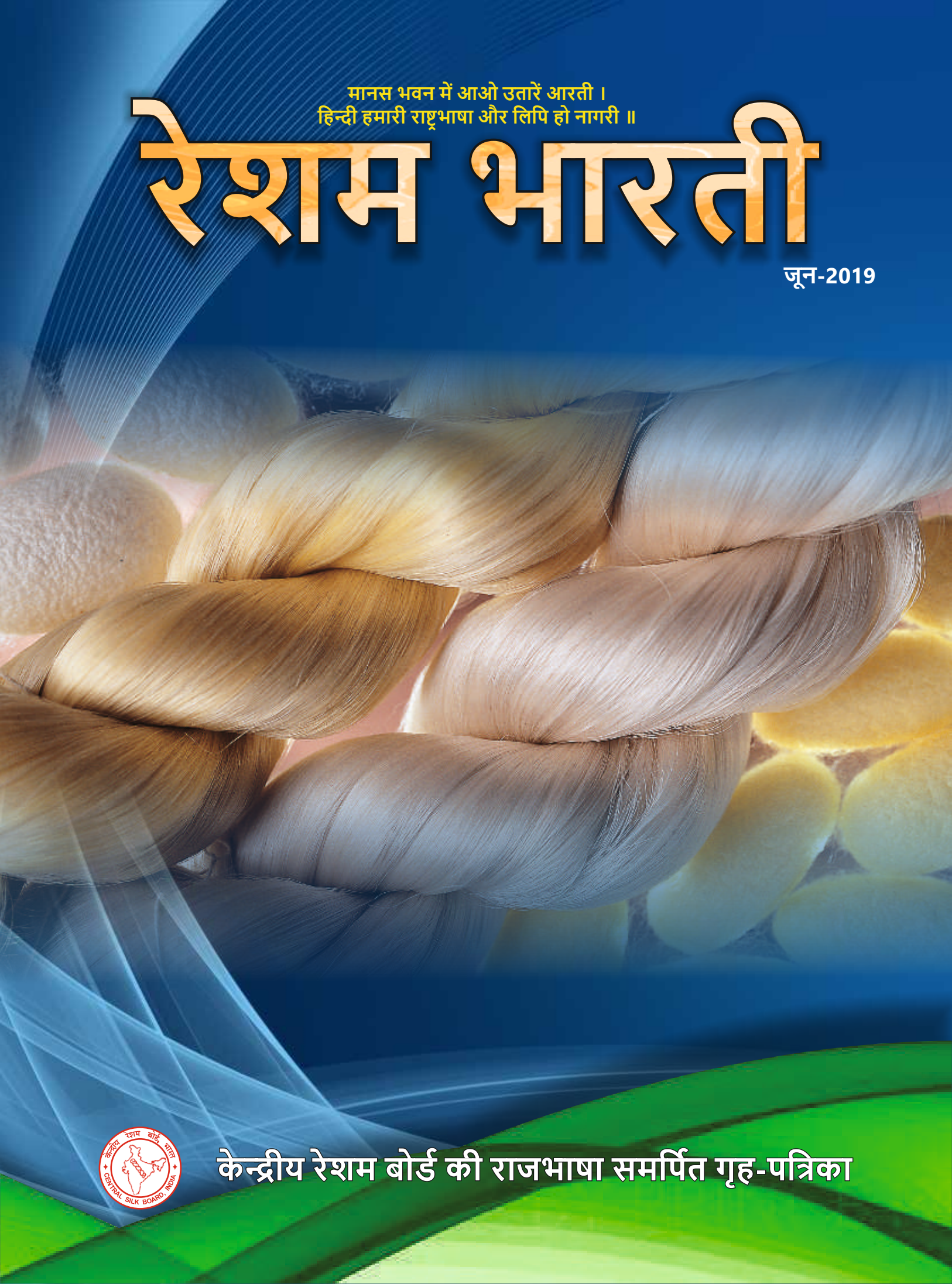

केन्द्रीय रेशम बोर्ड की राजभाषा समर्पित गृह-पत्रिका

विविधा

नई दिल्ली में आयोजित सर्जिंग सिल्क कार्यक्रम में बुनियाद मशीन का वितरण

बोर्ड मुख्यालय, बेंगलूरु में आयोजित "लक्ष्य" कार्यक्रम में व्याख्यान हेतु सदस्य सचिव श्री राजित रंजन ओखण्डियार

बोर्ड मुख्यालय, बेंगलूरु में आयोजित राभाकास की बैठक का एक दृश्य

बोर्ड मुख्यालय, बेंगलूरु की हिन्दी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलूरु के उपनिदेशक श्री टेक चन्द

केन्द्रीय रेशम बोर्ड की राजभाषा कार्ययोजना को अंतिम रूप देने हेतु विचार विमर्श

नराकास, बेंगलूरु के तत्वावधान में केरेबो द्वारा आयोजित 'हिन्दी टिप्पण आलेखन' प्रतियोगिता

हिन्दी प्रतियोगिता में भाग लेते हुए कर्मचारीगण

क्षेरेअके, देहरादून में आयोजित हिन्दी कार्यशाला का एक दृश्य

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान दीप प्रज्जविल करते हुए सदस्य सचिव श्री राजित रंजन ओखण्डियार

हिन्दी पखवाड़ा के समापन समारोह में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी

सदस्य सचिव से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री के. एस. गोपाल

क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली में हिन्दी पखवाड़ा के उद्घाटन में दीप प्रज्जवलन

क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई में आयोजित हिन्दी दिवस कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

प्रदर्शन-सह-तकनीकी सेवा केन्द्र, भागलपुर में आयोजित हिन्दी दिवस कार्यक्रम में मंचासीन अतिथिगण

रेबीउके, कलिथा में हिन्दी पखवाड़ा समारोह का एक दृश्य

बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, बोइरदादर, रायगढ़ में आयोजित व्याख्यान देते हुए डॉ. एम. के. रघुनाथ

केरेबो राजभाषा शील्ड समारोह

सदस्य सचिव से शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र ग्रहण करते हुए रेजैप्रौप्र, कोड़ती के निदेशक डॉ. आर. के. मिश्र एवं अन्य अधिकारीगण

बिल अनुभाग में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति प्रशस्ति-पत्र ग्रहण करते हुए निदेशक (वित्त), डॉ. नरेन्द्र रेबेल्ली एवं अन्य अधिकारी

राजभाषा कार्यान्वयन में श्रेष्ठ निष्पादन के लिए प्रशस्ति-पत्र ग्रहण करते हुए केरेप्रौअसं, बेंगलूरु के निदेशक डॉ. सुभाष वि. नायिक

क्षेरेअके, देहरादून की ओर से शील्ड ग्रहण करते हुए श्री राजेश कुमार सिन्हा

प्रमाणन केन्द्र, वाराणसी द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में सर्वश्रेष्ठ निष्पादन के लिए शील्ड ग्रहण करते हुए श्री एम. ए. मून

राँची संस्थान द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में सर्वश्रेष्ठ निष्पादन के लिए शील्ड ग्रहण करते हुए डॉ. कर्मवीर जैना

क्षेरेअके, कोरापुट,ओडिशा के मोहम्मद खसरू आलम सदस्य सचिव से प्रशस्ति-पत्र ग्रहण करते हुए

प्रचार अनुभाग के श्री एम. एन. रमेश सदस्य सचिव से शील्ड ग्रहण करते हुए

संरक्षक
राजित रंजन ओखंडियार

संपादक
आर.डी.शुक्ल

संपादन सहायता
आशा राव
मीना एस.कामत
डेक्का नारायण राव

प्रबंधन
सुनिल कुमार पी.
रणजीत कुमार
वी.एस.प्रमीला देवी
सुलेखा कुमारी
अभिनव श्रीवास्तव

मुख पृष्ठ
रविन्द्र एस.बडिगेर

पत्र व्यवहार
संपादक
रेशम भारती
केन्द्रीय रेशम बोर्ड
प्रथम तल, केरेबो काम्प्लेक्स
मडिवाला, बी टी एम लेआउट
बेंगलूरु-560068

रेशम भारती

खंड 30 **अंक 60-61** **जून-2019**

इस अंक में ...	1
सदस्य सचिव की कलम से	2
संपादकीय ...	3
सूचना प्रौद्योगिकी और देवनागरी लिपि	4
वे थे पापा	6
बताना तो है	6
राष्ट्रभाषा : राष्ट्र-हृदय की वाणी	7
...यह भी एक जीवन है!!	8
सफल रेशम गाथाएँ	9
यहाँ कौन है तेरा	18
श्रद्धांजलि	19
ईश्वर की डायरी	20
वाचाल समय	20
फकीर की खुशी	20
परिवार से पर्यटन तक	21
रेशम कृषि में महिला पात्र	25
चुप्पी	27
अन्नदाता	27
स्मृति-रेखा	28
पुरस्कार और कुछ पुरस्कार-वितरक-संस्थान	31
विवशता ने हमको डाँटा	33
हत्थे पर हमीं चढ़े	33
महिला दिवस	33
प्रत्याशा	34
आदमी के हुजूम में इन्सान की खोज	35
आदिम करघे एवं इनकी सार्थकता	36
शिक्षिका के उद्गार	38
स्त्री विमर्श एवं स्त्री साहित्य स्वतंत्र लेखन	39
कैसे हुई पृथ्वी की उत्पत्ति?	40
हिन्दी पखवाड़ा	42
केरेबो राजभाषा शील्ड समारोह	47
स्कटल फ्लाई: रेशम कीट बीज उत्पादन केंद्र के लिए एक नया खतरा	48
हिन्दी कार्यशाला	50
आपके पत्र	55

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से केंद्रीय रेशम बोर्ड का सहमत होना आवश्यक नहीं है । बिक्री के लिए नहीं, केवल आंतरिक परिचालन के लिए ।

मुद्रण: शक्ति प्रिंटेक, आर सी पुरम, बेंगलूरू – 560 002 **दूरभाष:** 080 2313 3313
sales@shakthiprintech.com info@shakthiprintech.com

सदस्य सचिव की कलम से

प्रगति की परिकल्पना को कर्मनिष्ठ प्रयास ही मूर्त रूप दे सकता है, इसकी प्रत्याशा तब और प्रखर हो उठती है जब इसकी वर्तमान प्रासंगिकता और भावी उपयोगिता स्पष्ट हो। रेशम उद्योग के विकास की परिकल्पना आज के परिप्रेक्ष्य में कितनी प्रासंगिक है तथा यह किस स्तर तक उपयोगी है, उसका प्रतिभ ज्ञान भारत जैसे देश की वर्तमान परिस्थितियों में सहज ही प्रेक्ष्य हो जाता है। रेशम उद्योग में स्व-रोज़गार की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान हैं और इससे बेरोजगारी की समस्या का काफी हद तक निदान मिल सकता है। यही नहीं, इस उद्योग से जुड़कर कृषक वर्ग से लेकर अंतिम उत्पाद के बड़े व्यापारी तक के लोग अपनी आय का श्रम-आधारित स्रोत सुनिश्चित कर सकते हैं। भावी उपयोगिता की दृष्टि से यदि हम रेशम-उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर चिंतन करें तो स्पष्ट रूप से यह परिलक्षित होता है कि इस कार्य में रेशम के खाद्य पौधों एवं वन्य रेशम के उत्पादनार्थ वृक्षारोपण से ग्लोबल वार्मिंग जैसी विकट समस्या में निःसंदेह कुछ मदद मिल सकती है। रेशम के निर्यात से व्यक्ति, समाज एवं देश की आर्थिक स्थिति पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और हम विश्व-व्यापी रेशम-बाज़ार की प्रतिस्पर्धा में अपने देश को अग्रणी कर एक कीर्तिमान भी स्थापित कर सकेंगे। यह तभी संभव है जब हम सब संकल्पमयी इच्छाशक्ति के साथ एकजुट होकर ध्येय परक लक्ष्य के सापेक्ष अथक शक्ति से कार्य करें।

इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि आज भी हम अपनी आवश्यकता के अनुरूप कच्चे रेशम के उत्पादन में पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर नहीं बन सकें हैं। अतः हमें यह आत्म-विश्लेषण करना होगा कि ऐसी कौन सी कार्यनीति अपनायी जाएं जिसके माध्यम से हम अपने संसाधनों का उपयोग करते हुए कच्चे रेशम के उत्पादन में पूर्ण सक्षम बन सकें। इस कार्य में गुणवत्ता की भूमिका को भी हमें अपने अंतःकरण में उतारना होगा। द्विप्रज रेशम उत्पादन के प्रति यद्यपि हमारे कदम तो बढ़े हैं, किन्तु इस दिशा में हमारे वैज्ञानिकों को और मंथन करना होगा तथा उन्हें ऐसी प्रजाति एवं प्रौद्योगिकी विकसित करनी होगी जो उत्पाद कोटि की गौरवपूर्ण उत्कृष्टता को सिद्ध कर सके। अनुसंधान केन्द्रों में चल रहे कार्यक्रमों की सटीक समीक्षा आवश्यक है तथा अनुप्रयोग विज्ञान के व्यावहारिक पक्ष को सशक्त एवं सुदृढ़ बनाना परमावश्यक है। हमारे वैज्ञानिकों के लिए यह भी यथेष्ट होगा कि वे अपनी मनःस्थिति में जनित अनुसंधानपरक परिकल्पना के पहले यह विचार कर लें कि इसकी परिणति समग्र रेशम विकास में कितनी सहायक होगी तथा **प्रयोगशाला से प्रक्षेत्र तक** इसकी यात्रा कितनी सुगम, सहज एवं व्यावहारिक होगी। मुझे पूरा विश्वास है कि नव-विकसित प्रजातियों एवं प्रौद्योगिकियों को प्रक्षेत्र तक पहुँचाने में हमें राज्य सरकार के रेशम उत्पादन विभाग से भरपूर सहयोग मिलेगा और इस उद्योग की मूल्य श्रृखंला से जुड़े रेशम-समाज का व्यापक वर्ग लाभान्वित हो सकेगा।

रेशम साड़ी 'वस्त्रों की रानी' के रूप में विख्यात है। अन्य पोशाकों के प्रति रेशम की ख्याति अभी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच सकी है। अतः, उत्पाद विविधता भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है जिस पर हमें ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। रेशम की टाई, कुर्ता, शर्ट, पर्दा एवं साज-सज्जा के सामान आदि अनेक वस्त्र हैं जहाँ रेशम की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए इसे और लोकप्रिय बनाया जा सकता है। गारमेंट के रूप में यद्यपि रेशम का प्रयोग हो तो रहा है, किन्तु व्यापक तौर पर यह उतना लोकप्रिय नहीं हो सका है। ब्राण्डेड सिल्क गारमेंट से संभवतः इसकी खपत बढ़ाई जा सकती है। परदे एवं बेडशीट के रूप में भी रेशम के उपयोग को और बढ़ाने की गुंजाइश है। इसे लोकप्रिय बनाने के लिए प्रचार-प्रसार के माध्यम से वांछित परिणाम प्राप्त किया जा सकता है।

हमारे देश में विभिन्न भाषाएं बोली जाती है। दक्षिण क्षेत्र में हिन्दी का प्रचार-प्रसार तो हुआ है, किन्तु व्यावहारिक तौर पर कार्यालय में प्रयुक्त होने वाली भाषा की दृष्टि से, खास तौर से केन्द्र सरकार के कार्यालयों में अंग्रेजी अभी भी चल रही है। हिन्दी का प्रयोग हो तो रहा है किन्तु इसमें अपेक्षित गति का त्वरण नहीं आया है। हम चाहते हैं कि केन्द्रीय रेशम बोर्ड में हिन्दी, केवल प्रशासन की भाषा तक सीमित न रहे, अपितु यह वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए। वैज्ञानिक व तकनीकी लेख हिन्दी में भी लिखे जाएं, कार्य विधि संबंधी साहित्य कृषकों अथवा उपभोक्ताओं की भाषा में भी उपलब्ध हो तथा प्रत्येक स्तर के अधिकारी/कर्मचारी सहज भाव से हिन्दी का प्रयोग सुनिश्चित करें। हम सभी जानते हैं कि अपनी भाषा विदेशों में भी राष्ट्रीय अस्मिता की परिचायक है। अपनी भाषा ही अपनी अलग पहचान बनाती है। अतः, हिन्दी के प्रति यदि किसी के मन में कुंठित विचार है तो इसे त्यागकर हमें गर्व से हिन्दी अथवा भारतीय भाषाओं का उपयोग हर क्षेत्र में करना चाहिए।

(राजित रंजन ओखंडियार)

संपादकीय

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत सत्य है। यह परिकल्पना कदापि तर्कसंगत नहीं कि आज जो, जैसा है, आगे भी वैसा ही रहेगा। प्रकृति ने भाषा को भी अपने इस चिरंतन नियम से अछूता नहीं छोड़ा है। कभी संस्कृत उत्कृष्ट समाज की प्रतिष्ठित भाषा हुआ करती थी। जनसामान्य की व्यावहारिक अपेक्षाओं एवं आकांक्षाओं ने इसे हिंदी तथा अन्य भाषाओं की तरफ मोड़ दिया। हिंदी की आदिकालीन पवित्र जलधारा भक्तिकालीन सगुण एवं ज्ञानमार्गी पथ से गुजरती हुई रीतिकाल का स्पर्श कर आधुनिक काल के छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद तक आ पहुँची। स्वतंत्रयोत्तर भारत की हिंदी, भाषागत उदारता के नए-नए शिल्प – शैलीगत मार्ग से गुजर रही है। यह स्वयं अपना मार्ग प्रशस्त करते हुए निरंतर बहुविध धाराओं में बहती हुई आगे बढ़ रही है। अदृश्य महासागर की ओर उन्मुख हिंदी आगे कौन-सा मार्ग पकड़ेगी, समय ही निर्धारित कर सकता है।

आधुनिक काल के नौजवान भारत की प्रवृत्तियाँ भी बदल रही हैं। भारतीय – पाश्चात्य की नव-संस्कृति, बड़े उद्वेग से अपना आयाम क्षेत्र विस्तृत कर रही है। भाषा के प्रयोग में 'स्व' की अनुभूतियाँ नया रूप ले रही हैं। 'स्व' का गौरवमयी उन्मेष धीरे-धीरे क्षीण-सा होता जा रहा है, लोगों में स्वभाषा का साहित्यिक स्नेह हाशिए पर पड़ता जा रहा है और यांत्रिक जीवन के सद्यःसुख के सापेक्ष मनःप्रसूत स्थिर आनंद प्रस्थान करता जा रहा है। भाषा ही नहीं, आत्मीय संबंधों का लोप भी इस स्तर तक हो गया है कि यह सीमित होते-होते आज बिल्कुल सिकुड़ गया है। हमारी पृष्ठभूमि में अपने लोग, अपना देश, अपनी भाषा अर्थात् 'स्व' की भावना का दायरा इतना व्यापक और उदात्त था कि अन्य देशों के लिए यह अनुकरणीय आदर्श हुआ करता था। अब, न तो अपनी भाषा पर गर्व रह गया है, न ही अपने व्यापक संबंधों का आत्मीय सुख।

आस्था एवं विश्वास लक्ष्य को लभ्य बनाने के प्रेरणास्रोत होते हैं। यही वे अवलंब हैं जो अगले कदम के अंतर को निरंतर करते हुए हममें अदृश्य शक्ति का संचार करते रहते हैं और हम अदम्य साहस से प्रतिकूलता को परास्त करते हुए प्रगति पथ पर आगे बढ़ते रहते हैं। इसमें संदेह नहीं कि आज की हिंदी, व्यापकता का विविध आयाम पकड़ चुकी है। समाज के विविध क्षेत्रों में इसने अपना रूप स्वतः निर्धारित किया है। कार्यालयीन हिंदी, साहित्यिक हिंदी, बोल-चाल की हिंदी, क्षेत्रीय भाषाओं के मध्य पनपी हिंदी, लोगों से संपर्क साधती हिंदी, व्यापार की हिंदी, राष्ट्रीय एकता के सपनों को साकार करती हिंदी आदि विविध पक्षों से समृद्ध होते हुए यह अपना पथ स्वयं प्रशस्त करती जा रही है। आगे बढ़ते हुए यह विश्व भाषा की परिधि में प्रवेश कर चुकी है।

प्रासंगिक प्रतीत होता है कि हमारे देश की शिक्षा-प्रणाली में स्वभाषा के अस्तित्व को गौरव प्रदान करते हुए माध्यम के रूप में हिंदी को प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक प्रतिष्ठापित किया जाए ताकि मौलिक परिकल्पनाओं का स्वाभाविक विकास स्वतः हो सके। आइए, समस्त देशवासी जहाँ, जिस स्थिति में भी हैं, अपने स्तर से अपनी भाषा में स्वजनित परिकल्पनाओं, मौलिक सोच तथा स्वाभाविक शोध में अपना समर्पित सहयोग दें और हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों को चरितार्थ करते हुए गर्व से कह सकें कि **'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'।**

सूचना प्रौद्योगिकी और देवनागरी लिपि

-डॉ. प्रभु चौधरी

विज्ञान या तकनीक का अस्तित्व और उसकी उपयोगिता इस बात में निहित रहती है कि समाज का एक आम व्यक्ति उसे अपने फायदे के लिए किस तरह इस्तेमाल करता है अथवा दूसरे शब्दों में कहें तो वह आम जन तक किस रूप में पहुँचती है। सूचना प्रौद्योगिकी, आईटी नाम से ज्यादा लोकप्रिय है और इंटरनेट का आविष्कार भी इसका अपवाद नहीं है । जब विश्व में सूचना क्रांति की बात चल रहीं थी, तो इसके साथ ही सूचनाओं को पहुंचाने के लिए माध्यम यानी भाषाओं पर ध्यान जाना स्वाभाविक था। शीघ्र ही विशेषज्ञ इन प्रयासों में लग गए कि भाषाओं को तकनीक के साथ किस प्रकार मिलाया जाए, ताकि भाषाएँ अपना अस्तित्व खोए बगैर ही तकनीक से जुड़कर कम्प्यूटर तथा इंटरनेट को जन-जन तक पहुंचा सके।

तकनीकी परिप्रेक्ष्य में भाषाओं की परिभाषा - भाषाएँ वे माध्यम है, जो सूचनाओं को एक स्थान अथवा व्यक्ति से दूसरे स्थान अथवा व्यक्ति तक पहुँचाती है। संवाद में इनका अहम स्थान है। बिना भाषाओं के सार्थक संवाद की कल्पना ही कठिन है और संवाद ही वास्तविक संसार की नींव है। लिहाजा यह देखा गया है कि यदि भारत जैसे विशाल तथा विविधताओं से भरे बहुभाषी देश में यदि आई टी क्रान्ति लाना है तथा सूचनाओं के आदान-प्रदान को इंटरनेट के माध्यम से सफल बनाना है तो भाषाओं को तकनीक में ढलने की क्षमता देनी होगी। तकनीक के लिए कोई भी भाषा अछूत नहीं है, वह अपनी सीमाओं में रहकर किसी भी भाषा के साथ तालमेल बिठाने के लिए हमेशा तत्पर रहती है। भारतीय भाषाएं तकनीक सक्षम बने, इसके प्रयास भाषाओं की ओर से नहीं, बल्कि भाषाओं को बोलने वाले समाज की ओर से हो सकते हैं। इस दिशा में सराहनीय पहल इंदौर की एक कम्पनी सुवि इन्फॉरमेशन सिस्टम्स ने 11 भारतीय भाषाओं में ई-मेल सुविधा प्रदान करके की । देश में यह प्रयोग बिलकुल अनूठा था तथा बाद में भारतीय भाषाओं की नेटयात्रा में दूसरे लोगों के लिए यह प्रयोग अनुकरणीय भी बना।

कम्प्यूटर तथा इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के लिए अवसर - भारत में सूचना क्रान्ति की सफलता तो इसके भारतीय भाषाओं में उपलब्ध संस्करणों से ही तय होगी। इस दिशा में अभी सबसे बड़ा कार्य होने जा रहा है। वह है विण्डो के हिन्दी तथा तमिल संस्करण का लांच होना। दूसरी ओर यदि इंटरनेट को मीडिया तथा सूचनाओं के प्रसारण और वितरण का हिस्सा मानें तो भारतीय भाषाओं के लिए इंटरनेट में अच्छी खासी संभावनाएं दिखाई दे रही है। लिहाजा भाषाओं पर कार्य करने वाले कम्प्यूटर पेशेवरों की कैरियर लाईन भी उज्जवल है। भाषाओं की मीडिया पर पकड़ का पक्ष निम्नलिखित तथ्यों को पढ़कर आसानी से समझा जा सकता है:

- देश में शिक्षित लोगों में 70 प्रतिशत लोग गैर अंग्रेजी माध्यम से कार्य निष्पादन, पठन-पाठन तथा सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं।
- विश्व में हिन्दी तथा बंगाली भाषा बोलने वालों की संख्या 400 मिलियन है, जबकि अंग्रेजी या स्पेनिश बोलने वालो की कुल संख्या 330 मिलियन है।
- भारत के 10 सर्वाधिक पढ़े जाने वाले समाचार-पत्र भारतीय भाषाओं के है।
- देश में टी. वी. पर दिखाये जाने वाले कार्यक्रमों में 80 प्रतिशत कार्यक्रम क्षेत्रीय भाषाओं अथवा हिन्दी में हैं। अंग्रेजी में मात्र 20 प्रतिशत कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं। इन आंकड़ों पर विचार करने से समझा जा सकता है कि भारत में इंटरनेट का विकास भारतीय भाषाओं में ही होना है। हाँ, इस बात में कोई संकोच नहीं है कि भारत में नेट विकास की प्रारंभिक यात्रा अंग्रेजी भाषा से शुरू हुई और इंटरनेट तथा ई-मेल का देश में माहौल अंग्रेजी जानने वाले लोगों ने ही बनाया।

अपने शुरूवाती दौर में तकनीकी कम्पनियों तथा निवेशकों ने ज्यादातर उन भारतीय वेबसाइट्स या पोर्टल्स में निवेश किया, जो अंग्रेजी में संचालित हो रहे थे। इस तरह के निर्णयों ने देश में इंटरनेट का प्रचार-प्रसार तो किया, लेकिन जिन पोर्टल्स में निवेश किया गया था, वे बिजनेस करने में असफल रहे। दूसरी ओर हिन्दी तथा अन्य देश की भाषाओं की वेबसाइट में किए गए निवेश का निर्णय अपेक्षाकृत ठीक साबित हुआ। इसका एक महत्वूपर्ण कारण था – भारतीय जनसमुदाय की भाषा में व्यापार करना। भारत में नेट यूजर्स की वर्तमान स्थिति पर गौर करके भी भाषाओं में हो रहे बड़े परिवर्तनों को समझा जा सकता है।

1. आज भारत में कुल इंटरनेट युजर्स का 48 प्रतिशत भाग भारतीय भाषाओं के युजर्स का है 2003 तक बढ़कर 70 प्रतिशत हो जाने की संभावना है।
2. भारत की सर्वश्रेष्ठ नेट कम्पनियां आज विभिन्न भाषाओं में अपनी सेवाएं दे रही हैं। उदाहरण के लिए याहू, अल्टा विस्टा, हॉटमेल तथा लायकोस आदि।
3. ब्राउजर नेटस्केप 23 भाषाओं में उपलब्ध है। विण्डो शीघ्र ही हिन्दी तथा तमिल भाषा में आ रहा है । मुकाबला करना पड़ रहा है।

भारतीय भाषाओं का इंटरनेट के साथ तालमेल: बाधाएँ – यह सत्य है कि नेट पर उपलब्ध लगभग सभी तरह की सामग्री भारतीय भाषाओं में देखी जा सकती है। लेकिन इस कार्य को अभी बहुत आगे तक ले जाना बाकी है। यह बाधारहित कार्य नहीं है। भारतीय भाषाओं को नेट सक्षम बनाने के प्रयासों में कई तरह की बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। उनमें से कुछ को निम्न प्रकार से सूचीबद्ध किया जा सकता है –

1. हिन्दी या भारतीय भाषाओं के अलग-अलग फॉण्ट्स तथा कुंजी-पटल पर उनमें मानकीकरण का अभाव।
2. भारतीय भाषाओं के फॉण्ट्स-आकृति का अधिक डिजिटल स्वरूप में उपलब्धता का अभाव।

3. मार्केट में उपलब्ध अग्रणी सॉफ्टवेयर कम्पनियों के सॉफ्टवेयर भारतीय भाषाओं को सपोर्ट नहीं करते तथा नेट पर आते ही फॉण्ट्स टूटने लगते है।
4. भारतीय भाषाओं के फॉण्ट्स नेट पर पहुंच को और अधिक सस्ता बना रहे हैं।

चुनौतियाँ

मानकीकरण: आज भारतीय भाषाओं में उत्पादों तथा कम्प्यूटर एप्लीकेशन से भारतीय बाजार भरे पड़े है। आवश्यकता इस बात की है कि इन उत्पादों तथा अनुप्रयोगों का मानकीकरण किया जाए, ताकि इनकी उपयोगिता तथा गतिशीलता और अधिक बढ़े। उपर्युक्त दिशा में प्रयासों को गति देने के लिए निम्न क्षेत्रों में मानकीकरण को आवश्यक समझा गया है।

1. **आईटी शब्दावली का विभिन्न भाषाओं में मानकीकरण:** इसके लिए विभिन्न भाषाओं के विशेषज्ञ तथा सूचना प्रौद्योगिकी के जानकारों को साथ बैठकर एक नामकरण पद्धति तैयार करनी पड़ेगी।
2. नाम तथा सर्वनाम के लिए ट्रांसलिटरेशन के नियमों का निर्धारण। डेटा प्रोसेसिंग डेटा निर्धारण के लिए यह बहुत आवश्यक है। इसके केवल एक भाग (मान ले अंग्रेजी) में डेटा तैयार होगा तथा सभी अन्य भाषाओं में यह रिपोर्ट जनरेट करेगा।
3. भारतीय भाषाओं में विभिन्न एप्लीकेशन्स जैसे – ग्राफिक्स, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग, स्ट्रिंग प्रोसेसिंग आदि के लिए कोई मानकीकरण करना।
4. सांस्कृतिक क्लिप आर्ट्स आदि के लिए मानकीकरण करना। यह उस समय जरूरी है, जब खासकर आप विभिन्न भाषाओं में किसी दस्तावेज को तैयार कर रहे हों और आपको सांस्कृतिक चिहनों आदि का उपयोग करना हो।

ट्रांसलिटरेशन प्रोसेसिंग: यूनीकोड की प्रोसेसिंग करने के लिए ट्रांसलिटरेशन एक सामान्य पैकेज प्रदान करता है। मूल रूप से देखा जाए तो ट्रांसलिटरेशन को एक भाषा के शब्दों को दूसरी भाषा के शब्दों में बदलने में उपयोग हेतु तैयार किया गया था, जैसे-ग्रीक को जापानी आदि में बदलने के लिए लेकिन अब ट्रांसलिटरेशन का दायरा बढ़ गया है, तथा यह अब ज्यादा बड़े कार्य करने में सक्षम है। भारतीय भाषाओं को तकनीक से मित्रवत बनाने के लिए तकनीक कई प्रकार से काम में आती है।

इंटरनेट आधारित एप्लीकेशन सिस्टम्स: भारत में इंटरनेट का उपयोग करने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। आज देखा जाए तो शिक्षा से लेकर, पर्यटन, सरकार आदि सभी की सूचनाएँ इंटरनेट पर उपलब्ध है। इन सभी क्षेत्रों की सूचनाओं को आसानी से भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने के लिए टूल विकसित करने वाले प्रोग्रामर्स की बड़ी संख्या में मांग है।

मशीन की सहायता से ट्रांसलेशन सिस्टम विकसित करना : इंटरनेट के विकास के साथ ही सूचनाओं की बाढ़ सी आ गई है। ऐसे में हमारे जैसे बहुभावी समाज के लिए अनूदित दस्तावेजों के अनुवाद की बड़ी मांग है। अधिकांश राज्य सरकारों तथा अंग्रेजी और अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में दस्तावेज तैयार किए जाते हैं, जबकि केन्द्र सरकार में सभी दस्तावेज अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी तैयार होते हैं। मानव संसाधन तथा अनुवादकों की सीमाओं को देखते हुए मशीन एडेड ट्रांसलेशन सिस्टम अथवा ट्रांसलेटर वर्क स्टेशन को विकसित किया जा रहा है। डोमेन स्पेसिफिक ट्रांस्लेशन सिस्टम के विकास को इस तरह से पहचाना जा सकता है – (1) सरकार द्वारा प्रशासित प्रक्रिया तथा फॉर्मेट (2) संसदीय प्रश्न एवं उत्तर (3) फार्मास्यूटिकल सूचनाएं (4) कानूनी शब्दावली तथा महत्वपूर्ण निर्णय आदि। इसके अलावा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं की क्षमता सिद्ध करने के लिए बहुत सारे अन्य क्षेत्र हैं, जिनके विकास में आईटी पेशेवरों की बेहद मांग है। इन क्षेत्रों में कुछ इस प्रकार है - (1) ह्यूमन मशीन इंटरफेस सिस्टम (2) मल्टीमीडिया मल्टी लैंग्युल सिस्टम, यूनिवर्सल नेटवर्किंग लैंग्वेज या यूएनएल, जिसमें यूएनएनएल एडीटर्स, यूएनएल व्यूअर्स आदि शामिल हैं। मूलत: इस तकनीक द्वारा किसी भाषा में लिए संदेश को यूएनएल तथा यूएनएल में लिखे गए संदेश को किसी भाषा में ट्रांसलेट किया जा सकता है।

आज इंटरनेट पर हिन्दी और दूसरी अन्य भाषाओं में कार्य करना अत्यंत लोकप्रिय हो चुका है। यह तकनीकी के विकास से संभव हुआ है। विशेष रूप से तैयार फोटो के द्वारा लिखित सामग्री को नेट पर भेजने की सुविधा आ जाने से, इस क्षेत्र में अंग्रेजी (रोमन लिपि) का एकाधिकार टूट गया है। यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्रसंघ की ओर से बहुभाषीय इंटरनेट पर आयोजित एक समारोह में, इस बात का अनुमान जताया गया कि 'वर्ल्ड वाइड वेब' पर 2003 तक एक तिहाई उपभोक्ता अंग्रेजी से हटकर होंगे और 2007 तक चीनी भाषा मंडेरिन का कब्जा इंटरनेट पर होगा। जब चीन की एक विशेष भाषा में यह संभव है तो भला हिन्दी या देवनागरी लिपि में कैसे संभव नहीं है? व्यापक संभावनाओं को देखकर ही भारतीय वैज्ञानिकों ने कम्प्यूटर पर देवनागरी को लेकर प्रयोग प्रारंभ कर दिए थे। देवनागरी लिपि में कम्प्यूटर पर कार्य करने के प्रयास 1965 के आस-पास प्रारंभ हो गए थे। 1970 के बाद उन्हें सफलता मिलनी प्रारंभ हो गई थी। इस प्रसंग में आई.आई टी. कानपुर और हैदराबाद के इलेक्ट्रॉनिकी कार्पोरेशन ऑफ इंडिया ने उल्लेखनीय कार्य किए। 1971-72 में आई. आई. टी. कानपुर में एक बहुत सरल कुंजी-फलक और उसकी प्रणाली तैयार की गई, जिसे भारतीय भाषाओं के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था। इससे देवनागरी में कार्य करने वालों को जटिल प्रक्रिया से मुक्ति मिली है।

✸ मुख्य समन्वयक एवं अध्यक्ष राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना, महिदपुर रोड, जिला उज्जैन, मध्य प्रदेश 456440 मो. 9893072718

वे थे पापा

- मुरलीधर देवांगन

मम्मी जब डांट रही थी, तो किनारे खड़े,
चुपके से कोई हँसे जा रहे थे,
वे थे पापा।

जब मैं सो रही थी तब निःशब्द,
मेरे सिर पर हाथ फिरा रहे थे,
वे थे पापा।

सपने तो मेरे थे, पर उन्हें पूरा करने का,
रास्ता बताए जा रहे थे,
वे थे पापा।

भूख उन्हें थी पर,
खिलाए मुझे जा रहे थे,
वे थे पापा।

सब मुझे भटका रहे थे,
पर मंजिल की राह दिखाए जा रहे थे,
वे थे पापा।

कष्ट मुझे था पर,
मुझसे भी अधिक दुखी थे,
वे थे पापा।

मैं हँसती थी तो मेरी हँसी देखकर,
अपना गम भुलाये जा रहे थे,
वे थे पापा।

उनसे मिलकर खुश मैं होती थी,
आने की खुशी मनाए जा रहे थे,
वे थे पापा।

पैसे की जरूरत मुझे थी पर,
हमारे लिए पैसे कमाए जा रहे थे,
वे थे पापा।

घर में सब प्यार दिखाते थे पर,
दिखाए बिना प्यार किए जा रहे थे,
वे थे पापा।

"बेटी" शब्द को मैं सार्थक बना पाई या नहीं,
"पिता" शब्द को निःस्वार्थ सार्थक बनाए जा रहे थे,
वे थे पापा।

अकल्पित कल्पना में खोई, मैं विदा हो रही थी,
निर्झर आँसू बहाये जा रहे थे,
वे थे पापा।

✸ तकनीकी सहायक, बुबीप्रवप्रके, बोइदादर, रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

बताना तो है

- ईश्वर चंद्र मिश्र

दिल न चाहे मगर मुस्कुराना तो है
रस्में दुनियां हमें भी निभाना तो है।

एक उजड़ा हुआ और वीराना सही
इस चमन में मेरा आशियाना तो है।

मुबारक खुशी चाहे जितनी मिली
पीछे गुजरा हुआ एक जमाना तो है।

वार करते सदा वे, मैं सहता रहा
मेरी खातिर ही उनका निशाना तो है।

हाथ में हाथ ले के मिलाते रहे
आधे मन से लगन यह लगाना तो है।

बात पैसों, ज़मीनों की करते रहे
प्यार से प्यार का धन कमाना तो है।

देश अपना पुराना इसका गौरव बहुत
विश्व को आज भी यह दिखाना तो है।

जीवन में किया था तो वादे बहुत
क्या सच में किया यह बताना तो है।

✸ सहायक निदेशक एवं केंद्र प्रभारी, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, बेंगलूरु

है कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके वीर नर के मग में
खम ठोंक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पाँव उखड़,
मानव जब जोर लगाता है
पत्थर पानी बन जाता है
गुण बड़े एक से एक प्रखर
हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेंहदी में जैसे लाली हो,
वर्तिका बीच उजियाली हो।
बत्ती जो नहीं जलाता है
रोशनी नहीं वह पाता है।
'

-दिनकर' की रश्मिरथी
(तृतीय सर्ग) से

राष्ट्रभाषा : राष्ट्र-हृदय की वाणी

-डॉ. प्रकाश वि. जीवने

राष्ट्रभाषा राष्ट्र में निवास करने वाले नागरिकों के अन्तर्जगत की वाणी होती है, उनकी नाना भाव दशाओं की अभिव्यक्ति का सफलतम माध्यम होती है और उनकी अस्मिता को स्वस्थ, निर्दोष व विकासमान जीवन प्रदान करने वाली प्राणवायु होती है। उसमें मातृ-हृदय की सीमाहीन स्नेह वत्सलता उसी प्रकार मातृ मानस के भाव लोक की विपुल-सम्पदा होती है। मातृ शक्ति की प्रचण्ड ऊष्मा से उसका प्रत्येक शब्द अजस्वित रहता है। उसकी प्रत्येक वर्ण ध्वनि में दया, करुणा और त्याग की त्रिवेणी लहराती रहती है। हरेक अभिव्यक्ति में माँ की आत्मीय सौंदर्यता दृष्टिगोचर होती है। अपनी मातृभाषा के सहारे करोड़ों राष्ट्रवासी अपनी अंतर-व्यथा को बाहर निकालते हैं। विविध प्रेरणा संदेशों को उसी के सहारे ग्रहण तथा विपत्तिकाल में उसी के द्वारा हताश हृदयों में आशा का विद्युत्संचार करते हैं। अत:, राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह राष्ट्र भाषा के महत्व को पहचानते हुए उसके प्रभावों से स्वयं के साथ पूरे राष्ट्र को लाभान्वित करे।

आज भी, राष्ट्रभाषा हिन्दी अपनी धात्री 'संस्कृत' के समान ही प्रत्येक स्तर की भावानुभूतियों की अभिव्यक्ति में सर्वाधिक सक्षम है। भावों के अनुरूप एकाधिक शब्द-निर्माण की धातु सम्पदा उसके पास सुरक्षित है। इसे यथोचित सम्मान देकर भारत अपनी खोई हुई गरिमा फिर से प्राप्त कर सकता है। करोड़ों भारतवासी अपने विचारों का आदान-प्रदान जितनी जीवन्तता एवं सहजता से राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से कर सकते हैं, उतनी अंग्रेजी आदि किसी विदेशी भाषा से नहीं। अंग्रेजी हमारे वैचारिक आदान-प्रदान का काम चलाऊ माध्यम भले बन जाए किन्तु वह हमारी आत्मा की वाणी नहीं बन सकती। हमारी हार्दिक उत्फुल्लता, सौंदर्यता को प्रकट नहीं कर सकती। किसी तीव्रतम भावना को वह हमारे अंत:करण तक नहीं पहुँचा सकती। हमारी अंतर्व्यथा को वह वहन नहीं कर सकती। हमारे अमूल्य आंसुओं की भाषा वह कदापि नहीं बन सकती। उसके माध्यम से प्रसारित किया गया कोई भी राष्ट्रीय संदेश हमारी अंतरात्मा को स्पर्श नहीं कर पायेगा।

अपनी मातृभाषा से मिलने वाली आत्मिक संतुष्टि की बराबरी हजारों भाषाएँ एक साथ मिलकर भी नहीं कर सकती। बच्चों के स्वास्थ्य संवर्धन के लिए माता के दूध की जो उपयोगी भूमिका होती है, उसका निर्वाह किसी भी दूध से सम्भव नहीं है। हम भारतवासी राष्ट्रभाषा हिन्दी में जो कुछ भी सुनेंगे, समझेंगे तथा बोलेंगे वह अपना होने के कारण अति सुन्दर और रुचिकर होगा। अपनत्व-भाव-भरी अपनी वाणी में की गई प्रत्येक अभिव्यक्ति आनन्ददायी होती है। कवि की ये पंक्तियाँ राष्ट्रभाषा मातृभाषा के विषय में उतनी ही सत्य है, जितनी की माता और मातृ-भूमि के विषय में -

सुन्दर होंगे देश बहुत से,
बहुत बड़ी है यह धरती।
पर अपनी माँ अपनी ही है,
अमित प्यार जो करती ॥

राष्ट्रभाषा, राष्ट्र की पहचान होती है। वह देश तथा राज्य को राष्ट्र का स्वरूप प्रदान करती है। विशिष्ट भू-भाग और जनसंख्या से मिलकर देश बनता है। सत्ता से सम्पन्न होकर समाज, राज्य में परिणत हो जाता है। भू-भाग और जनसंख्या के बीच जब माता-पुत्र का सम्बन्ध भाव जुड़ जाता है, तब राष्ट्र का निर्माण होता है। माता-पुत्र का यह पवित्र संबंध-भाव पैदा करती है मातृभाषा। जिस भाषावाणी में देशवासी अनादिकाल से अपने अन्तर्जगत की अनन्त अनुभूतियों को प्रकट करते रहे हैं, जिसकी शब्द शक्तियों द्वारा प्राणों को अपना विद्युत ऊर्जा से भरते रहे हैं तथा जिसके सुदृढ़ स्नेह तन्तु में बंधा हुआ करोड़ों हृदय एकता का अनुभव करता आ रहा है, उसी मूल भाषा (देववाणी) में अभिव्यक्ति का अभ्यास, संस्कार के रूप में हमारे अचेतन की गहनतम पर्त में समा गया है। इसलिए भावावेश के चरम क्षणों में हमारी आत्मा अपनी वाणी में अभिव्यक्ति के लिए जागृत हो जाती है। उसी अनादि मूलभाषा का विकास संस्कत से होता हुआ, हिन्दी, मराठी, गुजराती आदि अनेक भाषा रूपों में हुआ। पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिकों ने जिन तमिल, तेलुगू, कन्नड़ व मलयालम आदि भाषाओं को द्रविण परिवार का बताया है, वे भी उसी मूलभाषा की परंपरा में विकसित भाषाएं हैं। इनकी संरचना भी संस्कृत से मिलती-जुलती है।

भारत में बोली जाने वाली अनेकानेक भाषाएं संस्कृत की पुत्रियां हैं। सभी संस्कृत के रक्त से पली और बढ़ी हैं। सभी में माता के प्राणों का तेज और आत्मा की ऊर्जा है। किसी भी स्तर की भावाभिव्यक्ति के लिए वे संस्कृत के समान सक्षम भी हैं, किन्तु विशाल भारत में प्रचलित सहस्राधिक भाषा-बोलियों को सीख पाना संभव नहीं है। अत:, संस्कृत के सर्वाधिक निकट पड़ने, देश के अधिकांश क्षेत्र में विस्तृत होने तथा सीखने की सुगमता से युक्त व अधिक वैज्ञानिकता के कारण, विद्वानों की सलाह पर संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया। 14 सितम्बर, 1949 को अत्यंत विचार-विमर्श के पश्चात जिसमें सभी प्रदेशों के प्रतिनिधि थे, भारतीय संविधान सभा ने राजभाषा के रूप में हिन्दी को मान्यता प्रदान की थी। हिन्दी को अपनी सहोदर भाषाओं से कोई विरोध नहीं है। जो कुछ विरोध दिखाई भी पड़ा वह विदेशियों की भेदनीति के कारण। उसी भेदनीति से प्रेरित कूट यंत्र से संचालित होकर हिन्दी भाषी लोग भी हिन्दी भाषा में विदेशी शब्दों का व्यवहार करने लगे। अप्रचालित विदेशी शब्दों के अति प्रयोग से वह भयाक्रान्त हो उठी। क्षेत्रीय भाषा शब्दों से रहित हिन्दी, अहिन्दी भाषियों को परायी लगी। फिर तो विरोध स्वाभाविक था। हिन्दी शब्द भंडार की शोभा तमिल, तेलगू, मराठी, गुजराती आदि भारतीय भाषाओं के प्रचालित शब्दों से बढ़ेगी न कि विदेशी भाषा शब्दों से। इन्हीं भाषा शब्दों से सम्पन्न हिन्दी पूरे भारत की सम्पर्क भाषा बन सकेगी। कहना न होगा कि भारत की सभी भाषाओं में अंग्रेजी के शब्दों की घुसपैठ ने आज अपनी ही भाषा की शुद्धता पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

महात्मा गाँधी जी ने हिन्दी के द्वारा ही इस बहुभाषी देश की एकता तथा अखंडता की कल्पना कर 1918 ई में चेन्नई में हिन्दी शिक्षण का कार्य आरंभ किया था। चेन्नई के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ सी. राजगोपालाचारी का भरपूर सहयोग भी मिला था। आज देश की आवश्यकता है कि हिन्दी को बढ़ावा देकर, राजभाषा के रूप में निरुपित होकर केन्द्रीय शासन और अंतर-प्रांतीय संपर्क की भाषा के रूप में हिन्दी को अग्रेनीत किया जाए। इसके लिए हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी और संविधान सम्मत हिन्दी को अपने दैनिक कार्यों में महत्व प्रदान करना होगा। तभी हम इस देश की कोई अपनी भाषा, राजभाषा, के सही मायने में न होने के कलंक से मुक्ति पा सकेंगे।

✸ 158, चंडिका नं. 2, मानेवाडा बेला रोड,
नागपुर – 440 027 (महाराष्ट्र)

.....यह भी एक जीवन है !!

- राधेश्याम यादव

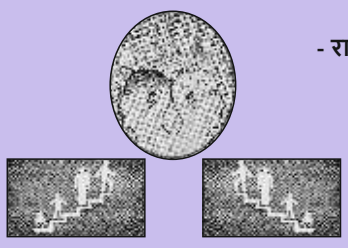

कभी भूख को खाकर प्यास को पीकर
उदर-जिगर की आग बुझाना भी एक जीवन है।
कभी डर को डराकर हार को हराकर
'हार की जीत' का जश्न मनाना भी एक जीवन है।

कभी महसूस कर हिम की तपिश, अग्नि की शीतलता
शिखर पर कूँच कर जाना भी एक जीवन है।

सुदूर संवेदन कर चाँद तारों से, अंतरिक्ष अलग नजारों से,
जमीं के तारों संग रम जाना भी एक जीवन है।
कभी जड़ बन जमीं चीरकर, जीवन जल खींचकर
पुष्प-पल्लवों की प्यास बुझाना भी एक जीवन है।
कभी दिलों दिमाग में समेटकर तूफ़ाँ, आँखों में बादल
भीगी पलकों से मुस्कराना भी एक जीवन है।

कभी सुनकर खामोशी की आवाज़, सन्नाटे का शोर
वीराने में कदम बढ़ाना भी एक जीवन है।
कभी महसूस कर जड़ की चेतना, चेतना की जड़ता
चित चैतन्य बनाना भी एक जीवन है।

✸ हिंदी अनुवादक, क्षेत्रीय सुदूर संवदन केन्द्र, इसरो, बेंगलूरु

सफल रेशम गाथाएँ

रेशम उत्पादन के समग्र विकास हेतु केंद्रीय रेशम बोर्ड एवं राज्य के रेशम उत्पादन विभाग सतत प्रयासशील हैं। कहना न होगा कि केंद्रीय रेशम बोर्ड द्वारा विकसित नव-प्रौद्योगिकियों के व्यावहारिक उपयोग के प्रति कृषकों में नवचेतना का संचार हुआ है तथा कृषक-गण यह महसूस करने लगे हैं कि आधुनिक कृषि अपनाते हुए आय में आशातीत वृद्धि सुनिश्चित की जा सकती है। भारत के अधिकांश प्रांतों में रेशम उत्पादन का प्रवेश हो चुका है। आज आवश्यकता इस बात की है कि देश स्तर पर रेशम उत्पादन को इस स्तर पर लाया जा सके कि हमें अन्य देशों से इसके आयात की आवश्यकता ही न पड़े और हम रेशम क्षेत्र में पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर बन सकें।

केंद्रीय रेशम बोर्ड के संगठनों से कुछ सफल कृषकों की गाथाएँ रेशम भारती के प्रकाशनार्थ प्राप्त हुई हैं। संक्षेप में उनका विवरण आगे दिया जा रहा है:

छत्तीसगढ़

भारत में छत्तीसगढ़ राज्य बहुत ही भाग्यशाली है, इस प्रदेश में प्राकृतिक संसाधनों की बहुलता है। छत्तीसगढ़ राज्य का क्षेत्रफल 135191 वर्ग किलोमीटर है इसकी जनसंख्या 2.55 करोड़ है। यह पूरे देश का 4.14 प्रतिशत है। यह राज्य मध्यप्रदेश से अलग 1 नवम्बर, 2001 से प्रभाव में आ गया है। यह राज्य आदिवासी हरिजन दलित वर्ग बाहुल्य क्षेत्र है फिर भी अति पिछड़ी-पिछड़ी एवं सवर्ण जाति के लोग भी हैं। इससे इस राज्य को परिश्रमी राज्य कह जाता है। इसका वन क्षेत्र 59772 वर्ग किलोमीटर है। भारतवर्ष में कर्क रेखा विभिन्न राज्यों जैसे गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, मिजोरम से होकर गुजरती है जिससे तापमान अप्रैल-मई माह में 45 से 50 डिग्री सेन्टीग्रेड और आर्द्रता 8 से 10 के बीच में आ जाता है। इसे प्राकृतिक रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्र (गर्म प्रदेश) कहा जाता है। इन राज्यों में तसर रेशम उत्पादन किया जाता है। छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश में रायपुर, बिलासपुर, राजगढ़, कोरबा, सरगुजा, जसपुर, बस्तर, जांजगीर, चांपा आदि जिलों में तसर रेशम कोसाफलों का उत्पादन किया जाता है। वस्त्र के रूप में सुन्दर व सुहावन (मुहर) बनाये जाते हैं।

बिलासपुर जिले में और जांजगीर चांपा में बहुत ही तसर रेशम कोसाफलों का उत्पादनकिया जाता है, पूर्व से आज तक तसर रेशम कोसाफलों का उत्पादन घटते-बढ़ते क्रम में रिकार्ड उत्पादन बढ़ता ही जा रहा है, वनों में पहले से ही व्यक्तिगत रूप से केवल-भील मल्लाह (मछुआरा) परिवार मिलकर तसर रेशम का उत्पादन किया करते थे, इनका कीटपालन का तरीका तसर भोज्य पौधों के पेड़ों में कोसाफलों को टांगकर ऊपर से मछली पकड़ने वाला लाज से ढ़क दिया करते थे, इस विधि से जो भी कोसाफल 400 से 50 मिलता था उससे मछली पकड़ने का जाल बना लिया करते थे।

तसर रेशम ग्राम-रामपुर तहसील-बलौदा जिला जांजगीर-चांपा कृषकों के सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार निम्न प्रकार से किया जा सकता है, तसर रेशम कोसाफल उत्पादक कृषकों को सर्वप्रथम कीटपालन हेतु सर्वे के दौरान ग्राम पंचायत के सरपंच व वार्ड मेंम्बर से मिलकर रेशम के बारे में जानकारी दी गयी और दिमागी तौर पर बदलाव लाया गया। सरपंच व वार्ड मेम्बर से मिलकर रेशम के बारे में जानकारी दी गयी और दिमागी तौर पर बदलाव लाया गया। सरपंच ने अपने गाँव के स्तर पर आर्थिक, नैतिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिए रेशम के कीटपालन कार्य को बेहतर माना और गरीब/जरूरतमंत/अति पिछड़ा/अनुसूचित/अनुसूचित जन-जाति एवं पिछड़ा और सवर्ण वर्ग के जातिओं को सूचित किया गया जैसा कि एक आम सभा में पंचायत बुलाकर सभी से पूछ-पूछ कर लाभ-हानि बताया गया जिनको रेशम कीटपालन कार्य अच्छा लगा सुनने से ही वे लोग तैयार हो गये। यहाँ के कीटपालक अभिग्रहित किसान/कृषक बहुत ही कर्मठ परिश्रमी और शान्त स्वभाव के है। रामपुर फार्म मुख्य रूप से सफल रेशम उत्पादक कृषक **श्री सत्यनारायण तिवारी** का समिति/समूह है। वर्ष में दो फसल डाबा द्विप्रज का कीटपालन कर कोसाफलों का उत्पादन करते हैं। कीटपालक समिति में 15 सदस्य हैं ये लोग बड़े अनुभवी तरीके अपनाकर और प्रशिक्षण प्राप्त तकनीक को अपना कर कीटपालन करने से उन सदस्यों को फायदा ही फायदा है इसमें हरिजन आदिवासी दलित वर्ग अति पिछड़ी-पिछड़ा एवं गरीब सवर्ण जाति के सदस्य सम्मिलित हैं।

आज के समयानुसार प्राकृतिक रूप से रामपुर तसर बीज फार्म में कीटपालन कार्य कर कोसाफलों का उत्पादन बहुत ही अच्छा होता आ रहा है। कीटपालन के दौरान वैज्ञानिक व तकनीकी ज्ञान व अनुभव को केंद्रीय रेशम बोर्ड के वैज्ञानिक व तकनीकी कर्मचारियों के द्वारा अवगत कराया जाता है।

सत्यनारायण तिवारी एवं समूह का विगत तीन वर्षों का कोसा उत्पादन का ब्यौरा

#	वर्ष/फसल	स्व.डि.स.	उत्पादन	औसत	बीज कोसा (सं.)	आय (रु.)
1	2016-17 - प्रथम	1500	158425	105.62	153500	307000
2	2016-17 - प्रथम	1000	36075	63.08	22500	67500
3	2017-18 - प्रथम	1000	115615	115.62	112500	225000
4	2017-18 - द्वितीय	1500	144945	96.63	138500	415500
5	2018-19 - प्रथम	1860	114660	61.64	100400	200800
6	2017-18 - द्वितीय	2400	166370	69.30	144100	432300

स्त्रोत: बुबीप्रवप्रके,बिलासपुर; प्रजाति: डाबा द्विप्रज

केरेबो निम्न मापदण्डों के अनुसार बीज कोसा क्रय करता है:

#	विवरण	कोसा का कवच भार (ग्राम)	दर प्रति हजार (रु.)
1	प्रथम फलस कोसाफल-डाबा द्विप्रज	1.4	2000
2	द्वितीय फसल कोसाफल-डाबा द्विप्रज	1.7	3000

उक्त दिये गये मापदण्डों के अनुसार रामपुर के अभिग्रहित कृषकों के द्वारा बीज कोसाफलों का उत्पादन किया जा रहा है जोकि एक सफल रेशमकीट पालक के रूप में अग्रसर है।

अभिग्रहित कृषकों से बीज कोसाफल केंद्रीय रेशम बोर्ड के केन्द्र द्वारा क्रय करने के बाद शेष बचे कोसाफलों का क्रय निम्न मापदण्डों के आधार पर छत्तीसगढ़ राज्य रेशम विभाग द्वारा किया जाता है-

#	विवरण	कोसा का कवच भार	दर प्रति हजार (रु.)
1	कोसाफल ग्रेड-1	1.4 ग्राम से अधिक	1350
2	कोसाफल ग्रेड-2	1.12 ग्राम से 13.39 ग्राम	1000
3	कोसाफल ग्रेड-3	0.85 ग्राम से 1.19 ग्राम	650
4	कोसाफल ग्रेड-4	0.85 से कम	300

उनके द्वारा पूर्व में परम्परागत तरीके से कीटपालन कार्य किया जाता था, जिससे लाभ कम प्राप्त होता था किन्तु कीटपालन में नई तकनीक अपना कर जैसे प्रक्षेत्र का साफ-सफाई, 9:1 के अनुपात में चूना:ब्लीचिंग से प्रक्षेत्र का नि:संक्रमण करना, जीवन सुधा पाउडर का उपयोग करना, लेबेक्स पाउडर का उपयोग करना एवं अन्य तकनीकी अपनाकर उसके अनुसार कार्य करने से उत्पादन में वृद्धि हुई जिसका आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर सुधार हुआ, जिससे इस समूल की उन्नति देखकर आप-पास के अन्य कीटपालकों के ऊपर प्रभाव पड़ा और वे लोग भी नई तकनीकी अपनाकर कार्य करने के लिए अग्रसर हुए।

रिपोर्ट: श्री राकेश कुमार, तकनीकी सहायक, बु.बी.प्र.व प्र.के., पेण्डारी, बिलासपुर

श्री कमल सिंह पुत्र श्री भगाऊ, उम्र 30 वर्ष ग्राम/पोस्ट-बार, तहसील-बामकेला, जिला रायगढ़ (छत्तीसगढ़) के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र के निवासी हैं जो पिछले 10-12 वर्षों से बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, बोईरदादर के मार्गदर्शन में राज्य के रेशम विभाग, रायगढ़ के माध्यम से रोगमुक्त चकत्ते प्राप्त कर तसर कीटपालन का कार्य करते हैं। श्री कमल सिंह के परिश्रम से आमदनी में प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही है। जिसका विवरण तालिकानुसार दर्शाया गया है:

उनके द्वारा बताया गया कि वे केंद्रीय रेशम बोर्ड, बोईरदादर रायगढ़ के निर्देशानुसार रसायनिक खाद के स्थान पर आर्गेनिक खाद जैसे – वन प्रक्षेत्र से प्राप्त सूखी पत्यों को गोबर में मिलाकर खाद का उपयोग किया जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ने से तसर कोसा उत्पादन में वृद्धि पाई गईं और खाद्य पौधों में पत्तों की बढ़ोत्तरी भी देखी गई। इस प्रकार वे लगनपूर्वक कार्य किये एवं खुशहाल जीवन यापन करते हुए परिवार के 5 बड़े एवं 2 छोटे बच्चों का संतोषजनक ढंग से पालन पोषण कर आगे बढ़ रहें हैं। श्री कमल सिंह ने यह भी बताया कि उनके परिवार में बुजुर्ग माता-पिता थे एवं आय का साधन भी नहीं था परन्तु कीटपालन कार्य में बचपन से जुड़े रहने के कारण उनकी पढ़ाई 8वीं कक्षा तक ही हो पायी एवं आगे रोजी रोजगार की समस्या होने पर गांव में ही मजदूरी कार्य के अलावा कीटपालन कार्य को भी अपना कर कड़ी मेहनत की। पिछले 5-6 वर्षों की परिश्रम के फलस्वरूप वे 2000 वर्ग फीट में पक्का मकान निर्माण कराये तथा टू- ह्वीलर, कूलर, फ्रिज, सिलाई मशीन आदि की खरीद की। साथ ही साथ इस वर्ष उन्होंने अपने बड़े बेटे की शादी की और बेटी 8वीं कक्षा में अच्छे स्कूल में पढ़ाई कर रही है। इसके अतिरिक्त उन्होंने डेढ़ एकड़ जमीन भी खरीदी है और आज वे अपने अन्य साथियों को भी तसर कीटपालन कार्य से जोड़ने का प्रयास कर रहें हैं ताकि यह अन्य परिवार की आय का भी साधन बन सके।

श्री गणेशराम पुत्र श्री रंजीत उम्र 44 वर्ष ग्राम/पोस्ट-बार, तहसील-बरमकेला, जिला रायगढ़ (छत्तीसगढ़) के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र के निवासी हैं जो पिछले 22 वर्षों से बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, बोईरदादर के मार्गदर्शन में राज्य के रेशम विभाग, रायगढ़ के माध्यम से रोगमुक्त चकत्ते प्राप्त कर तसर कीटपालन का कार्य करते आ रहे हैं। समयानुसार उन्हें बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, बोईरदादर द्वारा प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जाता रहा है और उनके अथक परिश्रम से आमदनी में प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही है। वर्ष 2016-17 में उनकी आय रु.69772 थी जो 2018-19 में बढ़कर रु.116813 हो गयी। उन्होंने बताया कि वे "पिछले 6-7 वर्षों से कीटपालन कार्य में ज्यादा ध्यान दे रहे हैं और उनकी आय में वृद्धि भी हो रही है। वर्षा की कमी के कारण खेती एवं मजदूरी से परिवार का पालन-पोषण ठीक से नहीं हो पाता था, इसलिए राज्य के रेशम उत्पादन विभाग एवं बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, बोईरदादर के समन्वय से रोगमुक्त चकत्ते प्राप्त कर तसर कीटपालन कर रहा हूँ। केंद्रीय रेशम बोर्ड, बोईरदादर के तकनीकी मार्गदर्शन का लाभ उठाते हुए मैने प्रक्षेत्र में रासायनिक खाद के अलावा गोबर की खाद, नीम की खली आदि का प्रयोग कर कोसा उत्पादन किया। अपनी मेहनत की कमाई से मैं 6 बड़े सदस्य, 1 पुत्र एवं 2 पुत्रियों का पालन-पोषण कर रहा हूँ और बच्चों को हाई स्कूल में पढ़ा रहा हूँ। कीटपालन की कमाई से ही एक मकान का निर्माण तथा बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कर सका हूँ। समय का सदुपयोग कर अतिरिक्त समय में भेड़पालन भी कर रहा हूँ और अपने कार्य से संतुष्ट हूँ।

प्रस्तुति: बी आर पटेल, मुरलीधर देवांगन, डॉ.एम.के.रघुनाथ एवं आर.बी.सिन्हा, बुबीप्रवप्रके, बोईरदादर एवं बुतरेबीसं बिलासपुर

केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं तथा इसके घटकों की सहयोगात्मक भूमिका से एक गरीब वर्ग के व्यक्ति का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन स्तर कैसे सुधर सकता है, इसका उदाहरण, एक परित्यकता महिला के जीवन के आर्थिक स्तर को केन्द्रीय रेशम बोर्ड के अन्तर्गत संचालित कार्यक्रम ने किस स्तर तक मजबूत किया है, को आपके समक्ष रखते हैं।

हम आपको जिला मुख्यालय बस्तर से 22-25 किलोमीटर दूरी पर स्थित ग्राम राजनगर, बाकावण्ड में रहने वाली श्रीमती रेयवती पत्नी श्री बंशीधर की पृष्ठभूमि से आपको रूबरू कराना चाहेंगे। श्रीमती रेयवती एक अत्यंत ही गरीब महिला हैं जो अपने पति के साथ रहती थीं। उनका एक बेटा है जो जन्म से गूंगा है। उसके घर का पूरा लालन-पोषण उनके पति की कमाई से होता था, लेकिन तब उसके जीवन में एक भूचाल सा आ गया जब उनके पति बंशीधर उसे व उसके गूंगे बच्चे को उसी गरीबी की हालत में छोड़कर चला गया। अब रेयवती के पास अपने व अपने बच्चे के पालन-पोषण की भयंकर समस्या आन पड़ी। लेकिन उसे तो जीवन में आई इस अकस्मात समस्या से जूझना व निपटना ही था और वह अपने ग्राम्य क्षेत्र में मनरेगा के अंतर्गत चलने वाली निर्माण अथवा अन्य प्रकार के कार्यों में मजदूर के रूप में मजदूरी का कार्य करनी चली लेकिन इससे प्राप्त होने वाली राशि उसके व उसके बच्चे के समुचित देखरेख के लिए पर्याप्त नहीं थी। इसी बीच राज्य शासन के रेशम विभाग के अधीन कार्यों में मजदूरी का कार्य करते हुए उसे केंद्रीय रेशम बोर्ड के अधीन संचालित रेशम कीटपालन प्रशिक्षण एवं उससे होने वाले फायदे की जानकारी हुई और उसने इस प्रशिक्षण में शामिल होने की ठानी और उसने पूरी लगन व निष्ठा से सफलतापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त किया। केंद्रीय रेशम बोर्ड के अधिकारी एवं कर्मचारियों ने उसकी लगन एवं मेहनत को देखते हुए उसे इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया। जो रेयवती इधर-उधर भटकते हुए जगह-जगह मजदूरी कर अपना और अपने बच्चे का गुजर-बसर कर रही थी वह रेशम कीटपालन का प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वयं रेशम कीटपालन करने की ठानी। प्रारंभ में तो दिक्कतें जरूर आईं लेकिन अब वह इस क्षेत्र में पारंगत हो गई हैं। जो महिला मजदूरी करके वर्ष में मात्र 15000-20000 रुपये कमाती थी वह अब रेशम कीटपालन के द्वारा वर्ष में 30000-40000 रुपये कमा लेती है। वह भी अपने बच्चे का अच्छी तरह से देखरेख करते हुए। श्रीमती रेयवती अब हमारे लिए एक उदाहरण बन चुकी हैं जो विभिन्न मंचों पर निरंतर प्रशंसा पा रही हैं वह और भी लोगों के लिए प्रेरणास्रोत का कार्य कर रही हैं।

श्रीमती रेयवती द्वारा विगत 3 वर्षों में किए गए कीटपालन के आंकड़े आगे दिया गया है:

	फसल	पालित रो.मु.च	कुल उत्पादिक कोसा (नग)	कोसा उत्पादन/ रो.मु.च.	कुल आय (रुपये)
1	प्रथम द्वितीय	200 200	10400 11400	52/रो.मु.च. 57/रो.मु.च.	13520.00 14700.00
		400	21800	54.50/रो.मु.च.	28220.00
2	प्रथम द्वितीय	200 200	10600 11800	53/रो.मु.च. 59/रो.मु.च.	13780.00 15340.00
		400	22400	56/रो.मु.च.	29120.00
3	प्रथम द्वितीय	200 200	11500 12250	57.50/रो.मु.च. 61.25//रो.मु.च.	14600.00 15925.00
		400	23750	59.37/रो.मु.च.	30525.00

तेलंगाना

श्री टी.अमृत रेड्डी पुत्र श्री गोपाल रेड्डी, ग्राम-नन्दयाला वारी गुडेम, मंडल-आत्माकुरु, जिला-सूर्यापेट, तेलंगाना के रहने वाले हैं। उन्होंने वर्ष 2013 में 2 एकड़ भूमि में शहतूत पौधारोपण कर 1800 रोमुच को कूर्चित किया। कीटपालन शेड, शेल्फ नेटरीकस आदि के लिए उन्हें सब्सिडी के रूप में प्राप्त रु.1,53,500/- की राशि प्रदान की गई। वे इस दौरान 7 (सात) द्विप्रज फसलों की पैदावार में जुटे रहे और कुल 1505.91 किग्रा द्विप्रज संकर कोसों का उत्पादन किया। इन कोसों की बिक्री से उन्हें रु. 5.68 लाख की राशि प्राप्त हुई। उन्हें राज्य सरकार से भी रु.75/- प्रति किलो की दर से रु.1.12 लाख की प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई। इस तरह उनको कुल आय के रूप में रु.6.81 लाख का अर्जन हुआ, इसमें से लागत के रूप में मात्र 1.50 लाख का खर्चा हुआ था। इस प्रकार वर्ष में उन्हें रु.5.31 लाख की शुद्ध आय हुई। श्री टी.अमृत रेड्डी, रेशम उत्पादन के क्षेत्र में कम लागत पर अधिक आय प्राप्त करने से काफी प्रोत्साहित हुए हैं और वे अन्य कृषकों के प्रेरणास्रोत सिद्ध हुए हैं।

श्री एन. रवीन्द्र रेड्डी पुत्र श्री गोपी रेड्डी, ग्राम नेलामर्री, मंडल-मुनागाला, जिला-सूर्यापेट, तेलंगाना के रहने वाले हैं। उन्होंने वर्ष 2013 में 2 एकड़ भूमि पर शहतूत का पौधारोपण करके 1600 रोमुच को कूर्चित किया जिसके लिए उन्हें सब्सिडी के रूप में रु. 1,53,500 की राशि प्राप्ति हुई। वे इस दौरान 8 (आठ) द्विप्रज फसलों की पैदावार में जुटे रहे और 1451 किग्रा द्विप्रज संकर कोसों का उत्पादन किया। तत्पश्चात् इन कोसों की बिक्री के द्वारा उन्हें रु. 5.17 लाख की राशि प्राप्ति हुई। उन्हें राज्य सरकार से भी रु.75/- प्रति किलो की दर से रु.1.08 लाख की प्रोत्साहन

राशि प्रदान की गई। इस तरह उनकी कुल आय रु.6.26 लाख की हुई, जबकि उन्होंने रेशम उत्पादन में मात्र रु.1.50 लाख की राशि खर्च की। अतः उन्हें शुद्ध वार्षिक आय के रूप में रु.4.76 लाख की राशि प्राप्त हुई। इस तरह श्री एन.रविन्दर रेड्डी रेशम उत्पादन के क्षेत्र में एक सफल एवं अग्रणी रेशम कृषक की भूमिका निभा रहे हैं।

श्री टी. मल्ला रेड्डी पुत्र श्री राम रेड्डी, ग्राम नन्दयालावारीगुडेम, मंडल-आत्माकुरु, जिला-सूर्यापेट, तेलंगाना ने वर्ष 2013 में 2 एकड़ भूमि में शहतूत पौधारोपण कर 1700 रोमुच का कूर्चन किया। कीटपालन शेड, शेल्फ नेटरीकस आदि के लिए उन्हें सब्सिडी के रूप में प्राप्त रु.1,53,500/- की राशि प्रदान की गई। इसका उन्होंने भरपूर उपयोग किया। इस दौरान उन्होंने 7 (सात) द्विप्रज फसलों की पैदावार ली और 1503.70 किग्रा संकर द्विप्रज कोसों का उत्पादन किया। इन कोसों की बिक्री से उन्हें रु.5.82 लाख की राशि प्राप्त हुई। उन्हें राज्य सरकार से भी रु.75/- प्रति किलो की दर से रु.1.12 लाख की प्रोत्साहन प्राप्त हुई। इस तरह उनको कुल आय के रूप में रु.6.95 लाख का अर्जन हुआ जबकि उन्होंने लागत के रूप में मात्र रु.1.45 लाख की राशि खर्च की। इस प्रकार उनकी वार्षिक शुद्ध आय रु.5.50 लाख हुई। इस तरह श्री टी.मल्ला रेड्डी रेशम उत्पादन के क्षेत्र में एक सफल एवं अग्रणी रेशम कृषक बने हुए हैं।

श्रीमती जी. भाग्यलक्ष्मी पत्नी श्री यादय्या गौड़, ग्राम-तुमन्नपल्ली, मंडल-हुजुराबाद, जिला-करीमनगर, तेलंगाना ने वर्ष 2013 में 3 एकड़ भूमि पर शहतूत पौधारोपण कर 2100 रोमुच का कूर्चन किया। कीटपालन शेड, शेल्फ, नेटरीकस आदि के लिए सब्सिडी के रूप में प्राप्त रु.1,36,000/- की राशि का उन्होंने तत्संबंधी कार्यों में उपयोग किया। इस दौरान उन्होंने 7 (सात) द्विप्रज फसलों की पैदावार ली और 1300.25 किग्रा संकर द्विप्रज कोसों का उत्पादन किया। इन कोसों की बिक्री से उन्हें रु.4.73 लाख की राशि का अर्जन हुआ। उन्हें राज्य सरकार से भी रु.75/- प्रति किलो की दर पर रु.0.9967 लाख की प्रोत्साहन राशि प्राप्त हुई। इस तरह उनको कुल आय के रूप में रु.5.72 लाख का अर्जन हुआ, जबकि उन्होंने रेशम उत्पादन में मात्र रु.1.10 लाख का खर्चा किया। इस प्रकार शुद्ध वार्षिक आय के रूप में उन्हें रु.4.62 लाख की राशि प्राप्त हुई। इस तरह श्रीमती जी.भाग्यलक्ष्मी रेशम उत्पादन के क्षेत्र में अन्य कृषकों के लिए एक आदर्श रेशम कृषक बनी हुई हैं।

आंध्र प्रदेश

श्री एस. हबीबुल्लाह पुत्र श्री हुसैन साहेब, ग्राम एवं मंडल-आत्माकुर, जिला-करनूल, आंध्र प्रदेश ने वर्ष 2015-16 के दौरान राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत 2 एकड़ भूमि में 3 द्विप्रज फसलों का पौधारोपण किया। उन्होंने 1500 रोमुच का कूर्चन कर 1082 संकर द्विप्रज कोसों की पैदावार ली। इस प्रकार प्रति 100 रोमुच के लिए उन्हें 72 किग्रा कोसों की उपज मिली। कोसा बिक्री से उन्हें प्रति किलोग्राम रु.79 की औसत कोसा दर से रु.4.10 लाख की राशि प्राप्त हुई। वर्ष 2017-18 में रेशम उत्पादन द्वारा उन्हें रु.1.23 लाख की आय हुई। उन्होंने नई प्रौद्योगिकियों को महत्व देते हुए 4X2 अंतराल का अनुपालन किया तथा शीतलन प्रणाली का अनुपालन किया।

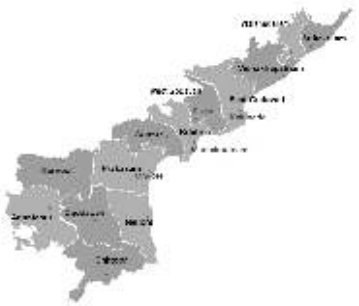

श्री राधाकृष्ण पुत्र श्री रामचंद्रुडू, ग्राम-सुडेपल्ली, जिला-करनूल, आंध्र प्रदेश ने वर्ष 2017-18 के दौरान 2 एकड़ भूमि में शहतूत पौधा रोपण किया। इससे उन्होंने 4 द्विप्रज कोसों की फसल ली तथा 1025 रोमुच का कूर्चन कर कुल 787 किग्रा संकर द्विप्रज कोसों का उत्पादन किया। इस प्रकार प्रति 100 रोमुच से उन्हें 77 किग्रा की कोसा फसल मिली। रु.513 की औसत कोसा दर से कोसों की बिक्री कर उन्हें रु.4.06 की राशि प्राप्त हुई। उन्हें रेशम उत्पादन से वर्ष में रु.4.00 का लाभ हुआ। श्री राधाकृष्ण ने रासायनिक खाद के बजाय गोबर की खाद तथा नीम की खली के इस्तेमाल को बेहतर समझा और इसका उन्हें अच्छा परिणाम मिला। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत उन्होंने एक अच्छे कीटपालन शेड का निर्माण किया है।

श्री के. संकरप्पा गौडू पुत्र श्री जयप्पा गौडू, ग्राम-कुरुवूरु, मंडल-बैरेड्डीपल्ली, जिला-चित्तूर, आंध्र प्रदेश ने वर्ष 2017-18 के दौरान 4 एकड़ भूमि में शहतूत पौधारोपण किया। इससे उन्होंने 9 द्विप्रज कोसों की फसलें लीं तथा 2250 रोमुच का कूर्चन कर कुल 1687 किलोग्राम संकर द्विप्रज कोसों का उत्पादन किया। इस प्रकार प्रति 100 रोमुच (किग्रा.) 75 किग्रा कोसों की पैदावार हुई। रु.475 की औसत कोसा दर से कोसों की बिक्री से उन्हें कुल रु.8.00 लाख की राशि मिली। रेशम उत्पादन से उन्हें प्रति एकड़ प्रति वर्ष रु.2.00 लाख की आमदनी हुई। नई प्रौद्योगिकियों का विशेष ध्यान रखते हुए उन्होंने फार्म में इसका यथोचित इस्तेमाल किया।

श्री एन. गोपी, ग्राम-नदिमीपल्ली, मंडल-सोमन्डेपल्ली, जिला-अनंतपुर, आंध्र प्रदेश के रहने वाले हैं। उन्होंने वर्ष 2017-18 के दौरान 2.00 एकड़ भूमि में शहतूत पौधारोपण किया। श्री गोपी ने 8 द्विप्रज कोसों की फसलें ली तथा 2500 रोमुच का कूर्चन कर 2125 किग्रा संकर द्विप्रज कोसों का उत्पादन किया। इस प्रकार प्रति 100 रोमुच 70 किग्रा कोसो का उत्पादन हुआ। प्रति किग्रा. रु.350 की औसत कोसा दर पर बिक्री द्वारा उन्हें 7.43 लाख की राशि प्राप्त हुई। रेशम उत्पादन से उन्हें प्रति एकड़ प्रति वर्ष रु. 3.72 लाख की आमदनी हुई।

श्री सी.एच. आंजनेयुलू, ग्राम-बोक्समपल्ली, मंडल-रोड्डम, जिला-अनंतपुर, आंध्र प्रदेश ने वर्ष 2017-18 के दौरान 2.50 एकड़ भूमि पर शहतूत पौधारोपण किया। उन्होंने 7 द्विप्रज फसलें ली तथा 3125 रोमुच का कूर्चन कर 2125 किग्रा संकर द्विप्रज कोसों का उत्पादन किया। इस प्रकार प्रति 100 रोमुच 72 किग्रा कोसों का उत्पादन हुआ। प्रति किग्रा. रु.285 के औसत कोसा दर की बिक्री से उन्हें 6.05 लाख की राशि प्राप्त हुई। उन्हें प्रति वर्ष प्रति एकड़ रु. 2.42 लाख की आमदनी हुई।

असम

असम में गुवाहाटी उत्तर- पूर्व क्षेत्र का एक प्रमुख स्थल है। गुवाहाटी में ही बक्सा बीटीसी जिले में एक गांव है जिसका नाम है "दारा"। इस गांव के लगभग 230 कृषक रेशम उत्पादन संबंधी गतिविधियों में लगे हुए हैं। पहाड़ी क्षेत्र होने के नाते सिचाई की सुविधा न हो पाने के कारण यहाँ धान की खेती नहीं की जा सकती। सब्जियों की खेती ही हो पाती है। इसी गाँव की **श्रीमती लवरी बोरो पत्नी श्री चंद्रकांत बोरो** तथा **श्रीमती गीता वारी पत्नी श्री धनेश्वर बारी** सफल रेशम उत्पादन संबंधी गतिविधियों में लगी हुई हैं। श्रीमती लवरी बोरो ने एक एकड़ में कसेरू तथा 1 एकड़ में सोम पौधारोपण के साथ ही साथ 0.5 एकड़ में टेपिओका की खेती हैं, जबकि श्रीमती गीता वारी 1 एकड़ में कसेरू तथा 1.5 एकड़ में टेपिओका लगाई हुई हैं। एनईआरटीपीएस के आईईएसडीपी के अन्तर्गत केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा क्षेत्र दिवस आदि के आयोजन से इस क्षेत्र के कृषकों को रेशम उत्पादन संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की गई हैं। परिणामत: इस क्षेत्र के लोग वन्य रेशम के संवर्धन हेतु आगे आये हैं। श्रीमती बोरो तथा श्रीमती गीता वारी ने रेशम उत्पादन संबंधी गतिविधियों को सम्पन्न करने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी को अपनाया है और इस प्रकार श्रीमती बोरो रेशम उत्पादन से प्रति वर्ष 50,000-65,000 रुपये तथा श्रीमती गीता वारी 65,000-1,00,000 रुपये तक कमा लेती हैं। रेशम उत्पादन की आय से इन महिलाओं का जीवन स्तर सुधरा है तथा दोनों परिवार के बच्चों का लालन-पालन अच्छे ढंग से हो रहा है।

श्री तरुण देवरी पुत्र स्वर्गीय श्री रंजीत देवरी, गुवाहाटी के बक्सा बीटीसी जिले के बगुलामारी गाँव के निवासी हैं। वे अपने पिता से बहुत प्रोत्साहित हुए हैं क्योंकि उनके पिता बड़े ही सक्षम कीटपालक थे। क्षेत्रीय अधिकारियों ने उन्हें अपने परिवार के लिए आय के स्रोत के रूप में रेशम उत्पादन को अपनाने की सलाह दी। उनके गाँव में 25 कृषक रेशम उत्पादन कार्यकलापों में लगे हैं। श्री तरुण देवरी ने 1.5 एकड़ केस्सेरु तथा 0.5 एकड़ भूमि में एरंडी का पौधारोपण किया है। वे नये प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए सदा उत्सुक रहते हैं। वे अपने कोसों को स्थानीय बाजार और मुशालपुर में जिला मुख्यालय के कोसा बाजार में विक्रय करते हैं। वे बाजार सुविधाओं से बड़े संतुष्ट हैं। रेशम उत्पादन अपनाने से उनके जीवनस्तर में सुधार हुआ है। उन्हें रेशम उत्पादन से प्रति वर्ष 1,00,000-1,00,500 रुपये और कृषि से 15,000-30,000 रुपये की आय होने लगी। रेशम उत्पादन से उनका जीवन स्तर सुधरा है तथा आस-पास के लोग भी उनसे प्रोत्साहित होकर रेशम उत्पादन करने लगे हैं।

श्री संजय मुछाहारी पुत्र श्री संतोष मुछाहारी, गुवाहाटी के बक्सा बीटीसी जिले के जोपाडांग गाँव निवासी को क्षेत्रीय अधिकारी ने रेशम उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित किया और उनके परिवार के लिए आय के स्रोत के रूप में रेशम उत्पादन को अपनाने की सलाह दी। उनके गाँव में 5 कृषक रेशम उत्पादन कार्यकलापों में लगे हैं। श्री संजय मुछाहारी ने 1.5 एकड़ भूमि में सोम का पौधारोपण किया। उनको केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा कार्यान्वित एन ई आर टी पी एस योजनाओं के अंतर्गत आई एस डी पी से सहयोग प्राप्त हो रहा है और वे मूगा कीटपालक के रूप में पंजीकृत हैं। वे अपने कोसों को स्थानीय बाजार और मुशालपुर में जिला मुख्यालय के कोसा बाजार में विक्रय करते हैं। वे बाजार सुविधाओं से बड़े संतुष्ट हैं। केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा भी उनसे बीज कोसों की खरीद की जाती है। उन्हें रेशम उत्पादन से प्रति वर्ष 80,000-1,00,500 रुपये और कृषि से 65,000-70,000 रुपये की आय होती है।

श्री ब्रजकांत डेका पुत्र श्री जतिन चंद्र डेका, गुवाहाटी के उदलगुरी जिले के फकिदिया गाँव के निवासी हैं। रेशम उत्पादन संबंधी कार्यों के प्रति जागरुकता पैदा करने के लिए विभिन्न विभागीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों से प्रेरित होकर उनके गाँव में 35 कृषक रेशम उत्पादन कार्यकलापों में लगे हैं। रेशम उत्पादन अपनाने में कृषकों को प्रतिकूल मौसम की स्थिति से फसल खराब होने की समस्या आती है। श्री ब्रजकांत डेका ने 2 एकड़ भूमि में शहतूत पौधारोपण किया। उनके फार्म में ड्रिप सिंचाई की सुविधा है। केन्द्रीय रेशम बोर्ड के द्वारा उन्हें रेशम क्षेत्र में आधुनिक उन्नत प्रौद्योगिकियों तथा पौधारोपण कीटपालन प्रौद्योगिकियों की जानकारी मिली। उन्होंने गुणधर्मी कोसों का उत्पादन कर अधिक आय प्राप्त की और ए डी एस उदलगुरी के अंतर्गत कोसा बाजार में कोसों की बिक्री की। वे बाजार सुविधाओं से बड़े संतुष्ट हैं तथा नई प्रोद्योगिकियों को अपनाने के लिए सदा उत्सुक रहते हैं। उन्हें रेशम उत्पादन से प्रति वर्ष 1,35,000-1,50,000 रुपये की औसत आय प्राप्त होने लगी। वे प्रति वर्ष चार फसलों के अंतर्गत 1200 रोमुच चकत्तों से 500-600 किग्रा और प्रति किग्रा रु. 300 की दर से 500-600

किग्रा कोसों हेतु 1,50,000-1,80,000 रुपये वार्षिक आय प्राप्त कर रहे हैं। उनके जीवनस्तर में वृद्धि होते देखकर अन्य कृषकों ने भी रेशम उत्पादन को अपनाया। रेशम उत्पादन से उनके जीवन में काफी बड़ा परिवर्तन आया है। उनकी बच्ची प्राइवेट स्कूल में पढ़ रही है।

श्री विष्णु बोरो पुत्र श्री सोनाराम बोरो, गुवाहाटी के उदलगुरी जिले बीटीएडी असम के भूयाखत गाँव के निवासी हैं। उनके गाँव में अनेक विभागीय जागरुकता कार्यक्रमों द्वारा रेशम उत्पादन संबंधी जानकारी दी गई है। कृषकों को वन्य रेशम कोसा बैंक की व्यवस्था से उनके उत्पादों का वास्तविक मूल्य प्राप्त हो रहा है। इनके गाँव में 10 कृषक रेशम उत्पादन कार्यकलापों में लगे हैं। श्री विष्णु बोरो ने 2 एकड़ भूमि मूगा कीटपालन आरंभ किया। केन्द्रीय रेशम बोर्ड के द्वारा ही उन्हें रेशम क्षेत्र में आधुनिक उन्नत प्रौद्योगिकियों तथा पौधारोपण कीटपालन प्रौद्योगिकियों की जानकारी मिली। उन्होंने कोसों को एडीएस उदलगुरी के अंतर्गत कोसा बाजार में विक्रय किया। वे बाजार सुविधाओं से बड़े संतुष्ट हैं। उन्हें रेशम उत्पादन से 80,000-1,20,000 रुपये प्रति वर्ष की औसत आय प्राप्त होने लगा। उन्होंने वर्ष में दो फसलों से 70,00-80,000 कोसा उत्पादन किया और 75,000-1,12,500 रुपये की औसत वार्षिक आय प्राप्त की।

श्री लहीराम दईमरी पुत्र स्वर्गीय श्री दईमरी, गुवाहाटी के उदलगुरी जिले बीटीएडी असम के सिमलूगुरी गाँव के निवासी हैं। इनके गाँव में अनेक विभागीय जागरुकता कार्यक्रमों द्वारा कृषकों को जानकारी दी गई। उनके गाँव में 20 कृषक रेशम उत्पादन कार्यकलापों में लगे हैं। इनके यहाँ सिंचाई की सुविधा न होने की वजह से मूगा एरी का कीटपालन नहीं किया जा सकता है। इनके गाँव में कताई करने वालों को केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा प्रशिक्षण दिया गया जिसमें गुणवत्तापूर्ण रेशम का उच्च उत्पादन करते हुए उन्नत उपकरणों से रेशम धागाकरण और कताई कैसे की जा सकती है, के बारे में जानकारी देकर प्रोत्साहित किया गया। वे गुणवत्तापूर्ण रेशम और उत्तम वस्त्र उत्पादन के प्रति पूर्ण सचेत रहते हैं। वे कोसों को स्थानीय बाजार और बाहर से खरीदते हैं। वे बाजार सुविधाओं से बड़े संतुष्ट हैं।

रेशम उत्पादन अपनाने से उनकी वित्तीय स्थिति में सुधार हुआ है। उन्होंने 67,500-95,000 कोसों का उपयोग करके 54-76 किग्रा रेशम कते धागे का उत्पादन किया है। जिससे उन्हें 80,000-1,10,000 रुपये की वार्षिक औसत आय हुई। रेशम व्यवसाय में लगने के बाद रेशम उत्पादकों को कम मेहनत और अधिक आय प्राप्त होने लगी है। वे अपने दो बच्चियों को उच्च शिक्षा दिला रहे हैं और घर के अन्य खर्चे सुचारु ढंग से चल रहे हैं।

श्री ऐंडर्सन मारक पुत्र श्री लेविट संगमा, गुवाहाटी, असम के कमगुरी गाँव के निवासी हैं तथा उन्होंने रेशम अधिकारियों की सलाह पर रेशम उत्पादन व्यवसाय शुरू किया । उनके गाँव में 58 कृषक रेशम उत्पादन कार्यकलापों में लगे हैं। उन्होंने 3 एकड़ भूमि पर एरी कीटपालन किया। श्री ऐंडर्सन मारक रेशम उत्पादन कार्यकलापों की नई प्रौद्योगिकियों के लिए सदा इच्छुक रहते हैं। वे कोसों को जिला मुख्यालय कोकराझार के कोसा बाजार प्रणाली द्वारा या स्थानीय लोगों को बेचते हैं। वे बाजार सुविधा से बहुत संतुष्ट हैं। रेशम उत्पादन अपनाने से उनके जीवनस्तर में सुधार हुआ है और वित्तीय स्थिति सुधरी है। रेशम कार्यकलापों से उन्हें 1,80,000-2,50,000 रुपये प्रति वर्ष तक की आय हुई। उन्होंने रेशम उत्पादन से अर्जित आय से घर का निर्माण, टी.वी.खरीदा और पूरे घर में बिजली की व्यवस्था करवायी। आय में वृद्धि से प्रोत्साहित होकर अन्य कृषकों ने भी रेशम उत्पादन का कार्य शुरू किया। रेशम उत्पादन के अलावा उन्होंने अंतराल सस्य खेती, मछली पालन आदि को अपनाया।

श्री सबेना मारक पुत्र श्री सुबत संगमा, गुवाहाटी के कोकराझार जिले असम के नायक गाँव के निवासी हैं। उन्होंने रेशम अधिकारी की सलाह से रेशम उत्पादन व्यवसाय को चुना। उनके गाँव में 50 कृषक रेशम उत्पादन कार्यकलापों में लगे हैं। उन्होंने 3 एकड़ भूमि पर एरी और कस्सेरु पौधारोपण किया। सिंचाई के लिए उनको पम्पसेट उपलब्ध कराया गया। श्री सबेना मारक रेशम उत्पादन कार्यकलापों की नयी प्रौद्योगिकियों को जानने के लिए सदा इच्छुक रहते हैं। वे कोसों को जिला मुख्यालय कोकराझार के कोसा बाजार प्रणाली या स्थानीय लोगों को बेचते हैं। वे बाजार सुविधा से बहुत संतुष्ट हैं। रेशम उत्पादन अपनाने पर उनके जीवनस्तर में सुधार हुआ और वित्तीय स्थिति सुधरी है। रेशम कार्यकलापों से उन्हें 1,70,000-2,40,000 रुपये तक की वार्षिक आय प्राप्त हुई। उन्होंने रेशम उत्पादन से अर्जित आय से घर का निर्माण, टी.वी.खरीदा और पूरे घर में बिजली की व्यवस्था करवाई। उनकी रेशम उत्पादन द्वारा आय में वृद्धि से प्रभावित होकर गाँव के अन्य कृषकों ने भी रेशम उत्पादन शुरू किया। रेशम उत्पादन के अलावा उन्होंने अंतराल सस्य खेती, बागवानी को भी अपनाया। वे अपने गाँव में रेशमउत्पादन के लिए प्रेरणा के स्रोत बने हैं।

श्रीमती बिरती संगमा पत्नी श्री मंगित मारक, गुवाहाटी के डाक-सिलगारा, बेथागाँव बामनपारा गाँव की निवासी हैं। उन्होंने परिवार द्वारा पारंपरिक रूप से किये जा रहे रेशम उत्पादन व्यवसाय को शुरू किया। उनके गाँव में 35 कृषक रेशम उत्पादन कार्यकलापों में लगे हैं। उन्होंने एकड़ भूमि में केस्सेरु तथा 1 एकड़ भूमि में टैपिओका का पौधारोपण किया। उनके यहाँ सिंचाई की सुविधा नहीं है। वे नई प्रोद्योगिकियों को अपनाने के लिए सदा उत्सुक रहती हैं। उनको अपने कोसों को बेचने के लिए स्थानीय बाजार और कोकराझर जिला मुख्यालय के कोसा बाजार की सुविधाएं हैं। वे बाजार सुविधाओं से पूर्ण संतुष्ट हैं। रेशम उत्पादन से

उनके जीवनस्तर में सुधार हुआ तथा उनकी वित्तीय स्थिति सुदृढ़ हुई है। रेशम उत्पादन से 1,80,000-2,00,000 रुपये वार्षिक और मजदूरी से 30,000-40,000 रुपये वार्षिक तक की आय अर्जित करती हैं। उनके सफल रेशम उत्पादन से प्रभावित हो अन्य कृषकों ने भी रेशम उत्पादन को अपनाया। उन्होंने रेशम उत्पादन से अर्जित आय से घर का निर्माण, लड़कियों को अच्छी शिक्षा दिलवाई और उनकी अच्छी शादी की। रेशम उत्पादन से वे गाँव के सभी कृषकों के लिए प्रेरणास्रोत बनीं।

उत्तर प्रदेश

श्री महबूब अहमद (बुट्टू) पुत्र स्वर्गीय श्री हाफिज अहमद, मोहल्ला-ओरीपुरा, जैतपुरा, जिला-वाराणसी, उत्तर प्रदेश के निवासी हैं। श्री अहमद की उम्र 45 वर्ष है तथा उन्होंने कक्षा-5 तक की शिक्षा ग्रहण की है। वे विगत 30 वर्षों से पंचिंग कार्य एवं दो लूमों पर कपड़ा बुनाई कार्य कर रहे हैं। उन्होंने वर्ष 2014 में सीएटीडी के लाभार्थी उत्प्रेरक विकास परियोजना (सीडीपी) के अंतर्गत वस्त्र परीक्षण प्रयोगशाला, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वाराणसी से कार्ड पंचिंग मशीन क्रय करने के लिए सहायता एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया। वे कार्ड पंचिंग मशीन पर लगभग 20,000 कार्ड प्रति माह तैयार करते हैं। पंचिंग मशीन से उनकी वार्षिक आमदनी लगभग रु.2,50,000 तक हो जाती है। वर्ष 2015-16 के दौरान कार्ड पंचिंग से उनकी औसत आय रु.1,00,000 लाख और शुद्ध लाभ 80,000 रुपये हुआ।

लाभार्थी को कार्ड पंचिंग मशीन से पूरे वर्ष रोजग़ार मिलता है। इस उद्यम ने उनके परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाया। उनके दो पुत्र हैं, और वे भी कपड़ा बुनाई एवं कार्ड पंचिंग कार्य में लगे हैं। श्री अहमद अपनी इकलौती पुत्री को स्कूली शिक्षा दिला रहे हैं। इस उद्यम से प्राप्त आय से उन्होंने कार्ड पंचिंग मशीन एवं दो लूमों को अद्यतन करने के अलावा पुस्तैनी मकान का जीर्णोद्धार करवाया। उन्होंने एक दुपहिया होंडा गाड़ी खरीदी।

श्री दिनेश कुमार पुत्र श्री श्याम सुंदर, मोहल्ला-जे-6/2ए, जैतपुरा, जिला-वाराणसी, उत्तर प्रदेश के निवासी हैं। श्री दिनेश कुमार की उम्र 33 वर्ष है तथा वे हाईस्कूल उत्तीर्ण हैं। वे वर्ष 1997 से पंचिंग मशीन पर मजदूरी करते थे। श्री कुमार ने वर्ष 2012 में मित्रों एवं रिश्तेदारों से धनराशि उधार लेकर एक कार्ड पंचिंग मशीन खरीदी और उद्यम को बढ़ाने के लिए उन्होंने वर्ष 2014 में सीएटीडी के लाभार्थी उत्प्रेरक विकास परियोजना (सीडीपी) के अंतर्गत वस्त्र परीक्षण प्रयोगशाला, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वाराणसी से कार्ड पंचिंग मशीन क्रय करने के लिए सहायता एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया। वे कार्ड पंचिंग मशीन पर लगभग 35,000 कार्ड प्रति माह तैयार करते हैं। पंचिंग मशीन से उनकी आमदनी लगभग रु.4,20,000 वार्षिक तक की हो जाती है। वर्ष 2015-16 के दौरान कार्ड पंचिंग से उन्होंने रु.2,00,000 लाख की औसत आय हुई और शुद्ध लाभ 1,80,000 रुपये हुआ। वर्ष 2016-17 के दौरान कार्ड पंचिंग से रु.4,20,000 लाख की आय प्राप्त हुई और शुद्ध लाभ रु.3,50,000 लाख का हुआ।

वे कार्ड पंचिंग मशीन से सतत रोजगार प्राप्त कर रहे है तथा स्वयं की डिजाइन भी तैयार करते हैं। ग्राहक द्वारा प्रदत्त डिजाइन व स्वयं तैयार डिजाइन पर कार्ड पंचिंग कार्य करता है। इस उद्यम ने उनके परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाया है। उनके पिता श्री श्याम सुंदर भी उद्यम में उन्हें सहयोग प्रदान करते हैं। बच्चों की शिक्षा भी अच्छे स्कूलों में हो रही है। इस उद्यम से प्राप्त होने वाली आय से वर्ष 2016 में एक और कार्ड पंचिंग मशीन खरीदी। वर्ष 2016 में बैंक से ऋण लेकर एक मकान खरीदा, गाय और इएमआई की अदायगी उद्यम से अर्जित आमदनी से की जा रही। घरेलू रोजमर्रा की जरूरत के सामान जैसे एसी, फ्रिज व बेड, दुपहिया वाहन बैटरी चालित एवं आश्रित माता-पिता, पत्नी एवं तीन पुत्रों का स्वास्थ्य, पालन-पोषण एवं बच्चों की शिक्षा एवं घरेलू रोजमर्रा की जरूतर सामान इत्यादि को खरीदने में उद्यम सहायक रहा है। उज्ज्वल भविष्य बनाने हेतु उनके द्वारा एल आई सी बीमा एवं हेल्थ केयर बीमा की पॉलिसी भी ली गयी जिसके लिए देय किस्तों हेतु उद्यम की आमदनी से मदद मिल रही है।

पश्चिम बंगाल

मथन महतो पश्चिम बंगाल के बांकूड़ा जिले के रानीबांध ब्लॉक में झिलमिली गाँव के रहने वाले हैं तथा वर्ष 2002 से एक प्रगतिशील तसर कीटपालक एवं सफल बीज पालक रहे हैं। कृषक महतो ने बीरभूम, पश्चिम बंगाल में वर्ष 2001 के दौरान यूनाइटेड नेशन्स डेवलपमेंट प्रोग्राम के तहत तसर संवर्धन पर 15 दिवसीय प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है। प्रशिक्षण से वे बहुत प्रोत्साहित हुए और उन्होंने बांकूड़ा जिले के पलाशबनी एवं छतना क्षेत्र में पट्टे पर जमीन लेकर अर्जुन पौधरोपण हेतु तसर की खेती प्रारंभ की।

ये प्रारंभ से ही तसर रेशम कीट पालन एवं वाणिज्यिक बीजाबार के रूप में एक सफल कृषक रहे हैं। कीटपालन क्षेत्र का नियमित

विसंक्रमण, परपोषी पौधारोपण के रखरखाव हेतु उचित अंतर-संवर्धन प्रक्रियाओं, कीटपालन के दौरान निरोधी रोगनाशकों का नियमित प्रयोग एवं तसर कीटों के स्थानांतरण के समय परम सावधानी बरतना ही इनके सफलता का रहस्य है। वे प्रत्येक गतिविध का वर्क कैलेण्डर के अनुसार अनुपालन करते हैं। वे गत छ: वर्षों (2012 से 2017) से द्वितीय डीटीवी रोग मुक्त चकत्तों (ब्रशिंग रेंज : प्रति फसल 2500 से 3000 रोग मुक्त चकत्ते) का 50 कोसे प्रति रोमुच के औसत उपज के साथ सफलतम कीटपालन किया है एवं प्रति वर्ष कुल आय रु.3.73 लाख प्राप्त किया (तालिका 1) इसी प्रकार गत पाँच वर्षों में (2012 से 2016) तृतीय डीटीवी में 63 कोसे प्रति रोमुच की औसत उपज के साथ 5000 रोमुच का कीटपालन किया जिससे रु.3.71 लाख की आय प्राप्त हुई।

श्री महतो ने तसर बीज कीट पालन से प्राप्त आय से वर्ष के दौरान एक पक्का बीजागार भवन का निर्माण कराया और वर्तमान में उस हाल में द्वितीय टीवी बीजागार चल रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि बीजागार भवनों/संयंत्रों का समय पर विसंक्रमण, शलभों के युग्मन करने एवं युग्मन छुड़ाने के दौरान उचित स्वास्थ्य रखरखाव, नियमित सूक्ष्मदर्शीय मादा शलभ परीक्षण, चकत्ते की धुलाई एवं अंडों का विसंक्रमण, उचित प्रक्रियाओं का पालन करना ही उनकी सफलता का प्रमुख राज है। आँकड़ों से ऐसा प्रतीत होता है कि श्री महतो को बीज कोसा की प्राप्ति में 2012 से निरंतर वृद्धि हुई है और यह 2017 में 96000 की अधिकतम सीमा तक पहुंच गया है। उन्होंने 19925 नग वार्षिक औसत रोमुच का उत्पादन एवं कोसा : रोमुच अनुपातन 3.04:1 क्रमश: प्राप्त किया है। गत छ: वर्षों में बीजागार से उन्हें लगभग 5.6 लाख की आय प्राप्त हुई। इन सभी गतिविधियों से कृषक मथन महतो अपने क्षेत्र के एक उन्नत तसर रेशमकीट पालक बन गये हैं। उल्लेख करना होगा कि वे बाकूंडा जिले के आस-पास के गांवों के तसर बीज उत्पादन के कर्मठ उत्प्रेरक उदाहरण बन गए हैं। श्री महतो को केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा 2017 में पंजीकृत बीज उत्पादक के रूप में चयनित किया गया। वे तसर बीज कीटपालक एवं ग्रेनर के रूप में सफल एवं आय सृजन गतिविधियों से प्रभावित होकर बांकूड़ा जिले के अन्तर्गत राधीबांध ब्लॉक के जनजातीय लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बन गए हैं एवं उनकी प्ररेणा से तसर संवर्धन अपनाकर ब्लॉक के 400 कृषक अपनी आजीविका चला रहे हैं। वे पूरे गाँव के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक बहुमूल्य किरण हैं।

प्रस्तुति: रीता बनर्जी, एस.बनर्जी एवं पी.के.दास

कर्नाटक

कोलार जिला और चिक्कबल्लापुर फल, फूल, सब्जियों व रेशम उत्पादन जैसे वाणिज्यिक उत्पाद उद्यम के लिए विख्यात है। पानी की कमी को समझते हुए इस भू-भाग के किसान बारिश व भू-जल का सदुपयोग करके उपयुक्त फसलों का चयन कर कृषि करते हैं। इसी कारण उनके उत्तम जीवनयापन के लिए रेशम उत्पादन व्यवसाय हितकारी हो गया है। इस क्षेत्र के लोग रेशम कीटपालन से अपरिचित नहीं हैं, वे पीढ़ियों से बहुप्रज रेशम कीटपालन करते आ रहे हैं। केन्द्रीय रेशम बोर्ड ने राज्य रेशम उत्पादन विभाग के सहयोग से बहुप्रज रेशम कीटपालन को द्विप्रज रेशम कीटपालन के रूप में प्रतिस्थापित करने तथा इस प्रदेश में क्लस्टर प्रमोशन कार्यक्रम की योजना

बनाई है। इस योजना के अधीन वर्तमान रेशम उत्पादकों को बहुप्रज रेशम कीटपालन के बदले द्विप्रज रेशम कीटपालन करने के लिए प्रोत्साहित करने तथा नए उद्यमियों को द्विप्रज रेशम कीटपालन में मार्गदर्शन के लिए केन्द्रीय रेशम बोर्ड के वैज्ञानिकों से सीधे संपर्क की व्यवस्था की गई है। इस क्षेत्र के अधिकांश किसानों को बहुप्रज रेशम कीटपालन की तुलना में द्विप्रज रेशम कीटपालन करने पर बेहतर गुणवत्ता तथा उच्चतम मात्रा में कोसे प्राप्त हो रहे हैं, जिससे उनकी आय भी बढ़ रही है।

सीपीपी से परिचित होने के बाद सिद्दलगट्टा क्लस्टर के सीगहल्ली ग्राम के अधिकांश किसान द्विप्रज रेशम कीटपालन कार्य कर रहे हैं। सीगहल्ली ग्राम के द्विप्रज रेशम कीटपालन कार्य में लगे श्री वीरण्णा सफल किसान हैं। उन्होंने 1 एकड़ भूमि पर कृषि प्रारंभ किया। वे आज 8 एकड़ के शहतूत कृषि के अलावा 4 एकड़ में काजू, 2 एकड़ में आम तथा 3 एकड़ में अंगूर की कृषि कर रहे हैं। इनका मानना है कि रेशम उत्पादन में अन्य फसलों की तुलना में सबसे अधिक आय है तथा इसकी कृषि से नियमित अंतराल में आय प्राप्त होती है।

सीपीपी कार्यक्रम के पहले वे 150 फीट x 30 फीट जगह (लंबाई x चौड़ाई) के आर सी सी रोशनदार/हवादार मकान में प्रति बैच 750-800 बहुप्रज संकर रोग मुक्त चकतों का कीटपालन 6 फीट x 50 फीट के पुष्ट कीटपालन स्टैण्ड लगाकर करते थे। परिपक्व कीटों की छँटाई के लिए कीटपालन गृह में 10 फीट x 10 फीट की जगह छोड़ी जाती थी।

सीपीपी सिद्दलगट्टा के प्रभारी अधिकारियों के मार्गदर्शन में श्री वीरण्णा ने द्विप्रज रेशम कीटपालन का कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने एक चॉकी कीटपालन केन्द्र से दिए गए चॉकी कीट पालित द्विप्रज संकर कीट

के 200 रोग मुक्त चकत्तों के कीटपालन से रेशम कीटपालन प्रारंभ किया। उन्होंने बहुप्रज संकर में 70 किग्रा./100 रोमुच के सापेक्ष 96 किग्रा./100 रोमुच के रिकार्ड उत्पाद के साथ प्रथम फसल में 193 किग्रा. का उत्पादन किया और रु.100/- प्रति किग्रा. उच्च दर भी प्राप्त की। उस समय से वे द्विप्रज संकर का कीटपालन कर रहे हैं।

वर्तमान में वीरण्णा 8 एकड़ में शहतूती कृषि करके प्रति वर्ष प्रति एकड़ से 800 द्विप्रज संकर रोग मुक्त चकत्तों का कीटपालन कर रहे हैं। औसत उपज 90 किग्रा./100 रोग मुक्त चकत्तों के विपरीत उन्होंने 720 किग्रा. तथा औसत दर रु.500 प्रति किग्रा. पर कुल वार्षिक आय 3.60 लाख/एकड़ होता है और 8 एकड़ के लिए 28.80 लाख/वर्ष होता है।

गाँव के आस-पास और बाहर के किसानों ने भी द्विप्रज संकर रोग मुक्त चकत्तों का कीटपालन शुरू किया। उनके भाई नारायण स्वामी भी 6 एकड़ में वी1 किस्म के 800 रोग मुक्त चकत्तों/एकड़/प्रति वर्ष की कृषि करके अपने भाई की तरह आय प्राप्त कर रहे हैं।

बढ़ती कमाई से कृषकों के जीवनयापन का स्तर भी बढ़ गया है, उनके बच्चे गाँव से बाहर अच्छे स्कूल व कालेज में पढ़ रहे हैं तथा समाज में अपनी पहचान बना रहे हैं। उनमें से कई गाँव के मुखिया व प्रमुख बन गए हैं।

प्रस्तुति: जी. श्रीनिवास, वैज्ञानिक-डी, रारेबीसं, बेंगलूरु

जम्मू व कश्मीर

श्रीमती मेहमूदा पति श्री फारुख अहमद निवासी ग्राम-करंचू, जिला-पुलवामा, जम्मू व कश्मीर एक अग्रणी एवं सफल रेशम कृषक हैं। एक गंभीर दुर्घटना में पति के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के बाद उनके 3 बेटों सहित परिवार के पालन-पोषण की जिम्मेदीरी उनके कंधों पर आ गयी। रेशम उत्पादन अपनाने से पहले वे मजदूरी करके अपने परिवार का पालन-पोषण करती थी लेकिन उन्हें हमेशा आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता था। इसके बाद उन्होंने केंद्रीय रेशम उत्पादन एवं प्रशिक्षण संस्थान, पाम्पोर द्वारा आयोजित रेशम कृषि मेले के माध्यम से कीटपालन करने की जानकारी प्राप्त की। जिससे प्रेरित होकर उन्होंने कीटपालन का कार्य प्रारंभ किया। वे 0.18 एकड़ में शहतूत पौधारोपण करके कीटपालन करती हैं। जिससे उनकी रेशम उत्पादन की आय में प्रति फसल रु.40,000/- की वृद्धि हुई तथा इसके अलावा वे घर में सिलाई का कार्य करके 18,000 एवं सब्जी विक्रय कर रु.10,000/- की वार्षिक आय उत्पन्न करती है।

उन्हें कीटपालन चक्र के दौरान प्रशिक्षण देकर, प्राक्षेत्र का दौरा कर, तकनीकी परामर्श एवं अनुवीक्षण कर प्रोत्साहित किया गया है। इसके अलावा विस्तार संचार कार्यक्रम जैसे – प्रेक्षेत्र दिवस, कृषक दिवस, जागरुकता कार्यक्रम, फिल्म प्रदर्शन इत्यादि के आयोजनों में उनको सम्मिलित कर तथा केन्द्र एवं राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से बुनियादी सहायता जैसे कीटपालन ट्रे, कीटपालन शेड एवं शहतूत पौध आदि उपलब्ध कराकर प्रोत्साहित किया गया है।

वर्तमान में उनके बच्चे क्षेत्र के अच्छे स्कूल में अध्ययनरत हैं। बड़ा लड़का 11वीं कक्षा में, मझला लड़का 9वीं कक्षा में तथा छोटा लड़का 4वीं कक्षा में अध्ययनरत हैं। श्रीमती मेहमूदा भी स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं तथा अब आजीविका के विविधिकरण के साथ वह घर पर काम करके अपने परिवार का पालन-पोषण करने में सक्षम हैं। रेशम उत्पादन से प्राप्त आय का उपयोग उन्होंने मकान बनाने तथा बच्चों की शिक्षा हेतु किया गया। कुल मिलाकर उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है तथा उन्होंने 01 परिवार को भी रेशम उत्पादन हेतु प्रेरित किया है। साथ ही स्थानीय महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को भी रेशम उत्पादन अपनाने हेतु प्रोत्साहित कर रही हैं। लेकिन आधारभूत सुविधाओं की कमी होने की वजह से उन्हें रेशम उत्पादन गतिविधियों को समूह में अपनाने में कठिनाई हो रही है।

वे कोसा विपणन व्यवस्था से संतुष्ट नहीं हैं क्योंकि बसंत फसल जो कि मुख्य फसल है की उपज 15 जून से तैयार होने लगती है जबकि विपणन सितम्बर-अक्टूबर में किया जाता है जिसके कारण उनको विपणन के लिए 2-3 महीने का इंतजार करना पड़ता है। साथ ही उन्हें शहतूत वृक्षारोण हेतु सिंचाई की अनुपलब्धता की समस्या भी है क्योंकि उनका शहतूत वृक्षारोपण वर्षा आधारित सिंचाई पर निर्भर है।

श्रीमती मेहमूदा ने बताया कि उन्होंने अपने घर को दो मंजिला बना लिया है जिससे घर में कीटपालन करने में कठिनाई होगी। यदि उन्हें कीटपालन शेड में एक और मंजिल निर्माण हेतु सहायता मिलती है तो वह 1-4 ओंस तक कीटपालन की वृद्धि कर सकेगी।

*****

आपके विचारों में बहुत दम है
इसे अपनी लेखनी तक ले जाएँ
और लिख भेजें अपने विचार
रेशम भारती के संपादक को।

यहाँ कौन है तेरा

-ललन कुमार चौबे

(एक)

ईश्वर आनन्द स्वरूप है। सृष्टि उसकी रचना है। आनंद से दुख का सृजन कैसे संभव है। यह विचार ही भ्रामक है कि इस संसार में दुःख है। ईश्वर या प्रकृति से दुःख का सृजन हो ही नहीं सकता। जैसे गुड़ कभी तिक्त नहीं हो सकता और लाख प्रयास के बावजूद नीम कभी मीठा नहीं हो सकता। हम मनुष्य स्वयं दुःख की अभिकल्पना (डिजाइनिंग) करते हैं। नक्शा बनने भर की देर है। सारे साजो-सामान जुटाने में लगे जाते हैं। इस व्यस्तता में यह भूल जाते हैं कि जो हम करने जा रहे हैं, उससे सुख नहीं, दुःख मिलेगा। ज्यादा समय नहीं लगेगा। आशा निराशा में बदल जाएगी। फिर पछतावा का दौर शुरू होता है। अपनी उपलब्धियों को गिनाकर हमें सुख मिलना चाहिए पर दुःख की अनुभूति होती है। लगता है-जो किया सब बेकार चला गया। अरे भाई! सब कुछ तो तेरे सामने ही है। तुम्हारे धन-दौलत, महल, सगे-संबंधी, अपनी प्राणवल्लभा पत्नी, पुत्र-पौत्र आदि। अब क्यों दुःखी हो रहे हो भाई? अब क्या करना है भाई? इतने उदास, निराश होकर क्यों बोल रहे हो कि जो करना था, वह नहीं किया। जैसे जीना था, वैसे नहीं जिया। ऐसा इसलिए बोल रहे हो कि ये सब तुम्हारी अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाए। तुम भी इनकी आकांक्षाओं को कहाँ पूरा कर पाए। तुम भी दुखी, ये भी दुखी। अब सब मिलकर संसार को, ईश्वर को, परिस्थितियों को कोस रहे हो। सब मिलकर चले थे सुख का संसार बनाने, सुख का संसार बसाने। बड़ा उल्टा हो गया। भूल जरूर हुई है। हम, तुम सब मिलकर यहां अपेक्षा-उपेक्षा का खेल खेलते हैं। जब तक इस खेल को नहीं छोड़ेंगे, सब कुछ दांव पर लगा देंगे लेकिन हारते रहेंगे, दुखी बने रहेंगे और दुःखी करते रहेंगे। इसलिए खिलना है और खिलखिलाना है तो इस खेल से बाहर आना होगा। तब ईश्वर के आनन्दमय स्वरूप का दर्शन होगा और प्रकृति भी सौन्दर्यपूर्ण लगेगी।

(दो)

मन उलझन में है, इसलिए कि उलझा हुआ है। सुलझाने की सारी कोशिशें नाकाम हो रही हैं। इसके तार कितने-कितने से जुड़े हुए हैं। एक-दो होते तो समेटा जा सकता था। उलझता तो दृग (आंखें) भी हैं लेकिन दोनों के उलझने में बुनियादी फर्क है। रीतिकालीन कवि बिहारी लाल को याद करें। वहां दृग उलझता है तो कुटुंब टूटते हैं। यहाँ मन उलझता है और इसके तार अनेक जगहों से जुड़ते हैं। यही कारण है कि हम जुड़ते-जुड़ते जकड़ जाते हैं। यह बंधन न खुलता है, न टूटता है। हम शुरुआत तो अपने मन से करते हैं। मन का करना सबको अच्छा लगता है। धीरे-धीरे स्थिति यह बनती है कि हमें दूसरे के मन का करना पड़ता है। यहीं से होती है दुःख की शुरुआत। बिल्कुल साफ है कि इस दुःख की पाठशाला में हमने स्वेच्छा से दाखिला लिया है। बाकायदा महंगी फीस भी चुका रहें हैं लेकिन परिणाम आशानुरूप नहीं मिल रहा है। अंततः इस परीक्षा में पास हो गये तो वाहवाही मिल सकती है लेकिन सुनने के लिए शायद आप उपलब्ध नहीं होंगे। बात बड़ी गहरी है, ध्यान से मनन करने योग्य। लोग-बाग एक दूसरे से कहेंगे कि फलां बाबू बड़े नेक आदमी थे। सबके लिए अच्छा सोचा, अच्छा किया। बाल बच्चों से लेकर पूरे परिवार-समाज के लिए भी। परंतु सच्चाई यह है कि फलां बाबू अपने मन से जीने चले थे, शुरू भी किया लेकिन सफल नहीं हो पाए। जीवन भर दूसरे के मन का किया। कहिए कि दूसरे का जीवन जिया। अपना जीवन कभी नहीं जिया। क्या हममें से अधिकांश का जीवन इससे परे है। यदि कोई दावा करता है तो वह पुरुष धन्य है, अन्यथा वह पूरी तरह भ्रम में हैं। उसने न तो जीवन को जाना है, न ही समझा है। जिसे जीवन की समझ प्राप्त हो जाती है, वह संसार में रहकर भी उससे अलग रहता है। वह संसार को भली-भांति समझता है लेकिन संसार उसे समझ नहीं पाता है। वह कोमल चित्त बार-बार संसार को समझाता है लेकिन लोग उसे पहले सुनते नहीं। यदि सुनते हैं तो समझते नहीं। अगर समझते हैं तो उसे सहजता से स्वीकार नहीं करते और अपनाते नहीं। बात जब समझ में आती है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। कुछ लोग तो विचारों को आत्मसात करने के बजाए विचारक की मूर्ति-उपासना में लग जाते हैं। समय कहाँ रुकने का नाम लेता है। इस तरह हम में से अधिकांश ऐसे ही दूसरे के मन का जीते-जीते मर जाते हैं। जो अपने मन का जीते हैं वे अमर हो जाते हैं।

(तीन)

बंधन और आसक्ति मोह और माया के कुल - गोत्र की प्रिय संतान हैं। दोनों देखने में एक जैसे लगते हैं परंतु दोनों का पृथक अस्तित्व है। बंधन में होना एक बात है परंतु आसक्त होना अलग बात। आखिर इसकी शुरुआत कहाँ से होती है। इसका उद्गम या मूल क्या है और कहाँ है। मम से ममत्व का विकास होता है। इसे अहं का विस्तार समझिए। अपने अस्तित्व पर इठलाता मनुष्य अपने आसपास अहं की पूरी फौज इकठ्ठा कर लेता है। वह ऐसा साहब बन आता है जिसे हर वक्त सलाम करने वाला नौकर/गुलाम चाहिए। गौर से देखिए। आपके आस-पास ऐसे अनेक लोग मिल जाएंगे। उसे वह सब कुछ चाहिए जिस पर उसका पूर्णाधिकार/कापीराइट हो। यह अलग बात है कि कोई भी उसका अपना नहीं होता। सब अपनी-अपनी मजबूरी के तहत उससे बंधे होते हैं। उसकी ऐसी प्रवृत्ति के कुछ स्पष्ट कारण होते हैं। वह प्रदर्शन-प्रिय होता है। अपना अहं वह स्वयं सहलाता रहता है और चाहता है कि दूसरा भी उसका अहं सहलाए। इसमें उसे अपरिमित सुख प्राप्त होता है। वह अज्ञानी यह भूल जाता है कि लोग उसे मूर्ख बनाते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि मोह और माया इन दोनों ने मनुष्य की मस्तिष्क प्रणाली को एक सुरंग की ओर मोड़ दिया है कि वहाँ कुछ सूझता ही नहीं। हर आदमी इसी सुरंग में आकर फँस जाता है। जिसकी चेतना जगती है वह निकलने का प्रयास करता है। ऐसे लोग भी कम हैं।

अधिकांश तो वैसे हैं जो पूरी जिंदगी सुरंग के अंधकार-युग में बिता देते हैं। जो सच्चा साधक है वही इस सुरंग से निकलकर अलौकिक प्रकाश का साक्षात्कार करता है। उसे अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है। अब वास्तविक मंजिल पर नहीं पहुँच पाने के लिए दोषी कौन है? सुरंग का रास्ता किसने चुना? मनुष्य ने योजनाबद्ध तरीके से इसकी स्वयं तैयारी की। आस-पास ऐसे लोगों की भीड़ इकट्ठी कर ली जो अपने स्वार्थ-साधन में लीन थे और अप्रत्यक्ष रूप से उसे सुरंग में धकेलने के लिए प्रयासरत थे। जरूरत इस बात की है कि अपना रास्ता हम स्वयं चुने और साथ में चलने वाले सहयोगियों की पहचान भी कर लें। कवि की चेतावनी सुन लो भाई- "पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले"।

(चार)

जब हम युवावस्था में होते हैं तो लगभग स्वप्न में होते हैं। आधुनिक चिन्तक हमें स्वप्न देखने को प्रेरित भी करते हैं। परंतु यह स्वप्न कुछ भिन्न है। स्वप्न अर्ध-चेतना की स्थिति है। यानी स्वप्न से जाग्रतावस्था में आने में कुछ समय लगता है। युवा जगत का अधिकांश इतनी जल्दबाजी में है कि उसे सुनने-समझने के लिए बिल्कुल समय नहीं है। इतनी अधीर पीढ़ी आजतक नहीं देखी गई। जब आप सुनने-समझने के लिए तैयार नहीं होंगे तो जीवन के व्यापक अनुभवों से वंचित हो जाएंगे। माना कि सूचना-प्रौद्योगिकी की दुनिया के आप मास्टर हैं लेकिन जीवन की पाठशाला में आप पूरी तरह फ्लॉप ही सिद्ध होंगे। ऐसा इसलिए कि आप यह मानकर चलते हैं कि सारी समस्याओं का समाधान आपकी अंगुलियों में हैं। माना कि एक क्लिक पर आप सूचनाओं का अंबार लगा सकते हैं, फिर भी जो शेष बच जाता है उसका समाधान आपके पास नहीं है। फिर भी आप हार नहीं मानते हैं और दूसरों को नहीं सुनने की कसम आप ले ही चुके हैं। तब आप अपना तर्क गढ़ते हैं और उसे शत-प्रतिशत सही सिद्ध करते हैं। दूसरों के लिए आपके पास रेडिमेड उत्तर हर क्षण मौजूद है- यह मेरा पर्सनल लाइफ है, इसमें किसी को हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। यही भयंकर भूल है। यह समझना बहुत जरूरी है कि पर्सनल की अवधारणा बहुत हद तक सही नहीं है। हमारा जीवन बहुतों से जुड़ा हुआ है और आगे चलकर जुड़ने वाला भी है। बावजूद इसके हमेशा याद रहे – "यहाँ कौन है तेरा"।

· वरिष्ठ अनुवादक (हिंदी), केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, केरेबो, बेंगलूरु-68

***

अरिष्टिं तनूनाम। (ऋग्वेद 2/31/6)
हे मानव ! अपने शरीर की रक्षा करो

श्रद्धांजलि

केन्द्रीय रेशम बोर्ड में प्रचार अनुभाग से अपनी सेवाकाल प्रारंभ करने वाले श्री शंकर भो. आदनाणी जिनके व्यक्तित्व की अमिट छाप हिन्दी अनुभाग के स्थापत्य काल से अब तक अविस्मरणीय बनी रही, दिनांक 17.07.2019 को उनकी दैहिक काया पंचतत्व में विलीन हो गयी। हिन्दी अनुभाग में उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। केन्द्रीय रेशम बोर्ड को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्टता का परिचय कराने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। दक्षिण क्षेत्र में वर्ष 1986-87 में केन्द्रीय रेशम बोर्ड में राजभाषा गौरव की प्रतिष्ठा 07 जुलाई, 1987 को आंध्र प्रदेश की महामहिम राज्यपाल श्रीमती कुमुद बेन जोशी के करकमलों से विशेष राजभाषा ट्रॉफी से हुई। बोर्ड में नम्बर 1984 में हिन्दी अधिकारी की नियुक्ति के बाद की यह पहली महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इसके उपरांत केन्द्रीय रेशम बोर्ड राजभाषा के क्षेत्र में आगे बढ़ा तो बढ़ता ही चला गया।

वर्ष 1987-88 के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निरंतर दूसरे वर्ष राजभाषा ट्रॉफी से नवाजा गया। पुनः 1990-91 के लिए बोर्ड मुख्यालय को राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया। वर्ष 1993-94 में भी राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट योगदान हेतु केन्द्रीय रेशम बोर्ड को इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

आपके कार्य-काल के दौरान हिन्दी में पत्र-पत्रिकाओं, जैसे – रेशम भारती, रेशम शब्दावली आदि के प्रवर्तन के साथ-ही-साथ कई एक भव्य राजभाषा कार्यक्रम आयोजित किए गए।

ಈಶ್ವರನು ಅವರ ಆತ್ಮಕ್ಕೆ ಶಾಂತಿಯನ್ನು ನೀಡಲಿ.
ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

-ललन कुमार चौबे

ईश्वर की डायरी

मन बड़ा अलसाया रहता है
सुबह-सुबह बजाने लगते हो
मेरे घर की घंटियां जोर-जोर से
चैन से कभी सोने भी नहीं देते
सिर के ऊपर लटका देते हो छिद्रदार घड़ा
दिन-रात टपकता रहता है बूंद-बूंद जल
कितना असहज रहता हूं हर पल

घर के मुंडेर पर बांध रखे हो लाउडस्पीकर
कर्णभेदी आवाज से बधिर हो चुका हूँ
पड़ोसी बनाने लगे हैं घर खाली करने का दबाव

मेरा नहीं तो कम से कम मेरे पड़ोसियों का
और उन रुग्ण मनुष्यों का रखते ख्याल
हो चुका है मेरा, उनका, सबका बुरा हाल

कभी परवाह भी की तू ने मेरे भूख-प्यास की
रोज रख देते हो चम्मच भर मिसरी की कटिंग्स
बिगड़ चुका है मेरे मुँह का स्वाद

बहुत खुश होता हूँ जब कभी बुलाते हो घर
कहते हो यहाँ बैठो, यहाँ ठहरो
उतरने भी नहीं पाती यात्रा की थकान
कि तुम मुझे सुना देते हो जाने का फरमान
ऐसा स्वागत मैंने नहीं देखा श्रीमान!

भारी मन से लौटता हूँ फिर अपने घर
फिर वही दिनचर्या हर पल, हर प्रहर
कब बदलेंगे मेरे हालात मान्यवर?

करता हूँ अब पुष्पांजलि की बात
सह नहीं पाता शरीर फूलों का आघात
लाद देते हो इतने-इतने फूल
कि होने लगती है घुटन
ठीक से नहीं ले पाता साँस

शायद तुम्हें मेरी बातों पर न हो विश्वास
(विश्वास कभी करोगे भी नहीं)
आकर ध्यान से देखो मुझे एक बार
कभी हुआ करता था मैं प्राणवान साकार
अब पूरी तरह हो गया हूँ पाषाण
निकल चुका है मुझसे मेरा भगवान।

वाचाल समय

कहने को सब बेताब हैं
श्रोताओं का अकाल है
यह समय वाचाल है

इस कहने की आपा-धापी में
विवेक पीछे छूट गया है
सोचने की शक्ति क्षीण हो गई है
बुद्धि मंद, कंगाल है

हर प्रश्न का त्वरित जवाब है
कौन परखे सत्य को और क्यों
किसे है इतना धैर्य
सबसे बड़ा यही सवाल है

सिर्फ बोलना ही मकसद है
और प्रतिक्रिया देना भी
जो चुप है उसका बुरा हाल है

मन आकुल-व्याकुल है
सब उसे पसंद करें
पर दूसरों की पसंद का किसे ख़्याल है

समझ में बात आने लगी है अब

फकीर की खुशी

सांसें उधार मिली हैं
पर संस्कार अपने हैं
पढ़ा हूँ डिबिया की धुंधली रोशनी में
लेकिन दृष्टि अमल-धवल है
नंगे पांव तय किए हैं अनेक सफर
जेठ की तपती दुपहरी में
पर भूलकर भी नहीं चाहा कि
कभी पहन लूं वुडलैंड के जूते
या सफर करूं वातानुकूलित वाहन में
बहुत इतराते हैं जो
अपनी गगनचुंबी इमारतों पर
उन्हें कभी मुयस्सर नहीं होगा
किसी कुटिया का सुख-संतोष
जब-जब याद आती है
अपनी गरबीली गरीबी
आनंद विभोर हो जाता है मन
मित्रों! एक फकीर की खुशी से
वजीर की खुशी की तुलना मत करना।

✸ वरिष्ठ अनुवादक (हिंदी),
केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान,
केरेबो, बेंगलूरु-68

डरो मत, अरे अमृत संतान
अग्रसर है मंगलमय वृद्धि
पूर्ण आकर्षण जीवन केन्द्र
खिंची आवेगी
सकल समृद्धि

-'प्रसाद' की कामायनी से

परिवार से पर्यटन तक

-आर.डी. शुक्ल

वक्त गुजरता जा रहा था और मैं रोज सोचता था कि चिंतन को मूर्त रूप दूंगा। कैलीफोर्निया के लॉस एन्जिलस शहर में तमाम ऐसे विचार आए जिसे लिखने के बारे में सोचता तो था, किन्तु कुछ व्यस्तता ऐसी थी कि अन्यान्य कार्यों एवं प्रतीक्षारत मनोभावों में अनायास संलिप्त होता रहा। आज यानी 13.02.2019 को बुधवार के दिन अपराह्न में कलम उठ ही गयी। अपनी यात्रा का वर्णन प्रस्तुत करने से पूर्व अनुभव-जनित पश्चात्य संस्कृति के कुछ अंश का निरूपण संदर्भ के समीचन समझता हूँ। उसकी एक झलक पाठकों की मन:स्थिति में उतारना चाहूँगा। वस्तुत:, मेरी कैलीफोर्निया की यात्रा प्रयोजन-मूलक थी – एक तो लॉस एंजीलस का दर्शन और दूसरा पौत्र का दर्शन। याद आ रही है 05 फरवरी, 2019 की वह रात जब लगभग पूरी रात जागता रहा। बेटे-बहू अस्पताल में, और मैं सपत्नी घर में। यहाँ के अस्पताल में प्रसूति के दौरान पति-पत्नी को ही वहाँ रहने की इज़ाज़त मिली थी। भारतीय संस्कृति ने हमारे विचारों को उद्वेलित कर रखा था। विचित्र स्थिति थी। हमारे यहाँ तो औरतों को छूट होती है प्रसूति कक्ष में जाने की। संयुक्त परिवार का वह अद्‌भुत परिदृश्य यहाँ से बिल्कुल गायब था। इसके कई एक कारण समझ में आये। पहला तो यह कि एक निर्धारित समय के उपरांत अमेरिका में पिता-पुत्र का संबंध संभवत: धीरे-धीरे कम होने लगता होगा और पति-पत्नी ही एक दूसरे की देखभाल के प्रति जिम्मेवार होते रहे होंगे और दूसरा, यहाँ, प्रवासियों की संख्या अधिक रही होगी जहाँ पति-पत्नी ही एक-दूसरे की देखभाल करते रहे होंगे। उनके माँ-बाप को दुख-तकलीफ अथवा किसी भी स्थिति को साझा करने की नौबत ही नहीं आती रही होगी। तदनुसार, व्यवस्था भी ऐसी ही बनानी पड़ी होगी।

अमेरिका में रहने का अंदाज भी भारतीयों से बिलकुल भिन्न लगा। सड़क पर अपरिचित भी हाय-हलो कर लेते थे। पर बस, लोग यहीं तक सीमित थे। यहाँ का जीवन अनुशासित लगा। हम भारतीयों की जीवन-शैली यहाँ से कई मायनों में अलग है। अपने देश में जीवन-मूल्यों की विवेचना संबंधों एवं पारस्परिक प्रेम भाव में व्यक्त होती है। अमेरिका में लोग 'अपने काम से काम' में कुछ ज्यादा ही विश्वास करते हैं। भारत में यदि कोई रास्ता पूंछ ले तो व्यक्ति बताने में पूरा वक्त देता है। दाहिने, बायें इतना मोड़ बता देगा कि पूछने वाला व्यक्ति भी भ्रमित होने लगेगा। अमेरिका में तो गूगल मैप जैसे ऐप पर ही भरोसा है, वैसे भी राह चलते लोग कम ही मिलेंगे जो वक्त पर दिशा-निर्देश संबंधी मदद कर सकें। सड़क के किनारे दुकानें भी नहीं मिलेंगी, जहां छोटी-मोटी चीजें खरीदी जा सकें अथवा कुछ जानकारी ली जा सके। अमेरिका में भवन, दुकानें, भवन के आस-पास पूर्ण हरियाली, पेड़-पौधों से सुसज्जित छंटा मंत्र-मुग्ध करती है। ट्रैफिक नियम तो मन को भा गया। लोग अपनी-अपनी लेन में ही चलते हैं। मोटर साइकिल कम दिखती हैं। अधिकांश लोगों के पास अपनी-अपनी कारें हैं। यातायात की अन्य व्यवस्थाएं अच्छी लगीं। पब्लिक बसें, मेट्रो आदि की अच्छी सुविधा है। भारत में "सड़क पर बायें चलो" की जगह "दायें चलो" की परंपरा प्रचलित है। पथ, परिसर, प्रांगण की स्वच्छता पर सभी ध्यान देते हैं। समग्रता में अमेरिका के विकसित होने का आभास होता है, इसमें संदेह नहीं।

हॉस्पिटल पहुंचा तो नवजात शिशु का आगमन हो चुका था। माँ-बाप का वात्सल्य तो मन-ही-मन उमड़ रहा होगा। दादी तो जैसे खिल उठीं। बच्चे को पकड़ तोतली बोली में ऐसे बात करने लगी की नर्स को कहना पड़ा "टाकिंग टू बेबी एज इफ ही इज अण्डरस्टैण्डिग"। नर्स को कौन बताए, यही है हमारी संस्कृति। भावनाएं फूटती हैं तो अभिव्यक्त भी होने लगती हैं। माँ-बाप तो बस डॉक्टर के पद-चिह्नों पर चल रहे थे। दादी तो डॉक्टर की नसीहतों को दरकिनार कर अपने ही तरीके से सब-कुछ करना चाहती थीं। समय-समय पर मालिश, दूध और भी अपने नुस्खे। माँ-बाप तो आधुनिक मिज़ाज के हो चुके थे, उन्हें कौन समझाए पुराने नुस्खे ही आधुनिक रूप ले चुके हैं। वार्पिंग, टॉमी वैक जैसी एक्सरसाइज मालिश के ही दौरान ही हो जाया करती है। ऐसा नहीं है, दादी आधुनिक प्रक्रियों को पूरी तरह नकार चुकी थी, सैनेटाइजर लगाने के बाद बच्चे को पकड़ना, उन्हें भी पसंद था। बच्चे की मुलायम त्वचा के लिए आवश्यक है कि कीटाणुओं से इसकी रक्षा की जाए। वातावरण स्वच्छ रखना उन्हें भी हितकर प्रतीत होता था। बच्चे नींद में चिंहुकते हैं, रोते हैं, हंसते हैं, यह स्वाभाविक है। लेकिन नहीं, दादी की तो अपनी मान्यताएं हैं, काला कपड़ा बांधना, काला टीका लगाना, सोते समय बेड के नीचे कजरौटा या लोहे की कोई चीज रखना आदि का अनुपालन उन्हें अनिवार्य लगता था। उनकी मान्यता है कि इससे बच्चे को डर नहीं लगता। माँ-बाप तो हर चीज के लिए डॉक्टर से पूंछेंगे, लेकिन दादी का घरेलू नुस्खा हमेशा तैयार मिलता था, नाभि में हींग लगाकर बच्चे की पाचन क्रिया ठीक कर लेती थीं।

लास एंजिलस की प्रात:कालीन छंटा अच्छी लगती थी। मैं सुबह ही बाहर निकल जाता था और किसी पार्क में बैठकर प्रकृति की छंटा के नैसर्गिक सुख की आत्मानुभूति करने लगता था। प्रकृति का नैसर्गिक सुख किसे नहीं भाता? टहलने के कारण थकान भी लग जाती थी, इसलिए कहीं बैठकर थोड़ा वक्त गुजारना अच्छा लगता था। प्रात:कालीन सैर मेरे रोज की दिनचर्या का एक हिस्सा बन चुकी थी। यहां का अलग परिवेश, लोगों की पेड़ पौधों के प्रति विशेष रुचि अच्छी लगती थी। घूमते-घूमते कुछ मकान निर्माण कार्य भी दिख जाता था। आश्चर्य होता था जब लकड़ी की पट्टियों से घर बनते देखता था। एक दिन तो रुककर मैंने कामगारों से बात-चीत भी की। उनसे पता चला की वहां के अधिकांश मकान लकड़ी से बने हैं। संभवत: भूकंप के भय से इस प्रकार के निर्माण किये जाते होंगें। यहीं नहीं बिजली के तार भी लकड़ी के खंभो पर खींचे गये थे। सुरक्षा की दृष्टि से भी यह ठीक लगता होगा। साथ ही, इस तरह के लंबे पेड़ पौधे भी वहाँ उपलब्ध होते होंगे।

वक्त गुजर रहा था। लगभग एक सप्ताह बीता होगा कि बाहर टहलने का कार्यक्रम भी बन गया। अमेरिका के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था और उसका एक काल्पनिक दृश्य मस्तिष्क में बना हुआ था जिसे मूर्त रूप देने का समय आ गया था। कहते हैं पर्यटन-अभिलाषी व्यक्ति की यात्रा बड़ी ही शानदार होती है क्योंकि जब तक वह गंतव्य स्थल तक नहीं पहुंच जाता, कल्पना जगत की छवि मन में उतर जाती है – यह ऐसा होगा, वैसा होगा आदि अनेक भाव आते और प्रस्थान करते रहते हैं। संभवत:, इसीलिए "जर्नी इज वेटर दैन एराइवल" की अवधारणा कल्पित हुई होगी। वैसे तो पूरे अमेरिका के प्रमुख स्थलों की भ्रमण योजना बनानी चाहिए थी, किन्तु समयाभाव के कारण लांस एंजिलस व उसके आस-पास के प्रमुख स्थलों को ही देख सका।

प्रमुख स्थानों में लास एंजिलस में **यूनीवर्सल स्टूडियो** का नाम बहुत प्रसिद्ध है। सर्वप्रथम मैंने वहीं जाने की योजना बनायी। अंतत: मैं यूनीवर्सल स्टूडियों में पहुंच चुका था। घुसते ही देखा एक बड़े ग्लोब के ऊपर यूनीवर्सल लिखा था। यहां देखने के लिए स्पेशल टिकट भी मिलता है, जिसे लेने से कम व्यक्तियों की कतार में लगना पड़ता है और अपेक्षाकृत कम समय में अधिकांश स्थानों को देखा जा सकता है। इसे हॉलीवुड यूनीवर्सल स्टूडियो भी कहा जाता है। प्राकृतिक वर्षा, पहाड़ी और इसमें बहती हुई तेज धारा, नये, पुराने नगरों की कृत्रिम प्रस्तुति सचमुच मनोहारी लगी। यूनीवर्सल स्टूडियो टूर एक छोटी ट्रेन में बैठकर पूरा किया जा सकता है। ट्रेन के आगे एक गाइड भी होता है जो आस-पास के दृश्यों का विवरण प्रस्तुत करता रहता है। मुझे लगा – पिक्चरों में दिखने वाले अनेक दृश्यों को यहाँ बखूबी फिल्माया जा सकता है। इसके अलावा यूनीवर्सल में बच्चों के लिए कई आकर्षण केन्द्र बने हुए हैं। अनेक झूलों में साहसी बच्चे इन सबका खूब आनन्द उठा सकते हैं। मुझे स्वयं कुछ स्थल बहुत ही अच्छे लगे। इसमें हैरी पॉटर, कुं फू पाण्डा, ट्रासफारमर्स, सिम्सन्स, यूनीवर्सल स्टूडियो टूर, मिनियन्स राइड तथा वाटर वर्ल्ड आदि मन को भा गये। यहां के सारे दृश्य बड़े ही दिलचस्प हैं

और झूलों में बैठकर रक्त संचार तेज हो उठता है। प्रसिद्ध स्टूडियो टूर में जाने से तेज एवं भयानक दृश्यों से गुजरना पड़ता है। चलचित्र की दुनिया में परदे पर देखकर आनन्द लिया जाता है, यहां साक्षात् 3डी प्रभाव की एक अलग ही अनुभूति होती है। किंग-काँग 360 3डी में तो निदेशक पीटर जैकसन का कमाल प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। 3डी अनुभव का ऐसा नमूना शायद ही कहीं मिले। वाटर वर्ल्ड में पानी की छीटों से शरीर भींग जाता है। कुछ प्रमुख दृश्यों एवं अनुभवों का उल्लेख प्रासंगिक लगता है।

हैरी पॉटर की विचित्र दुनिया बड़े ही सुंदर ढंग से यूनिवर्सल स्टूडियो में दिखाई गयी है। वस्तुत: यह हॉलीवुड का एक थीम पार्क है। इसकी विषय-गत प्रस्तुतियां जे.के. राउलिंग द्वारा लिखित हैरी पॉटर उपन्यास और फिल्मी धारावाहिक से लिए गये हैं। यहीं पहुंचते ही लगता है, हम एक दूसरी दुनियां में प्रवेश कर रहे हैं। अंदर पहुंचते ही एक अलग नजारा देखने को मिलता है। हॉगवर्ट्स महल की जादूगरी एवं चमत्कारिक दुनिया का आभास यहां आसानी से हो जाता है। महल के विशाल द्वार से प्रवेश करते ही गुजरने वाले रास्तों से परिचित होना पड़ता है। डंबलडोर ऑफिस, अंधेरे कलाकक्ष के सापेक्ष सुरक्षा, ग्रिफिण्डर कॉमन रूम, रूम ऑफ रिक्वायरमेण्ड आदि बहुत कुछ देखने को मिलता है। अंतत:, महल के मैदान के ऊपर चढ़ने का मौका मिलता है और अविस्मरणीय साहसिक कार्य में हैरीपॉटर और उसके दोस्तों से जुड़ने का प्रत्यक्ष अवसर प्राप्त होता है। अभूतपूर्व आधुनिकी प्रौद्योगिकी के साक्षात् नमूने वाले इस झूले में एक अलग ही अहसास होता है।

किंग काँग 360 – 3डी का अद्‌भुत दृश्य दर्शकों को आश्चर्य चकित कर देता है। पीटर जैकसन द्वारा रचित किंग काँग 360 – 3डी को पुरस्कृत होने का कारण स्पष्ट हो जाता है। इस दृश्य से सचमुच दिल दहल जाता है। 35 फुट टी-रेक्स और दुनिया के आठवें आश्चर्य किंग-काँग के भयानक संघर्ष से मन उछलने लगता है। इसमें 3-डी एचडी चित्रांकन की तकनीक अपनायी गयी है जिसे 200 फुट (61 मी.) चौड़े परदे पर दर्शाया गया है। 3डी राइड का एक और आकर्षक एवं

झकझोरने वाला पड़ाव है ट्रांसफारमर्स। काल्पनिक जगत और वास्तविकता के बीच जैसे अंतर ही नहीं रह जाता। इसमें आपको स्थितियां खुद-ब-खुद युद्ध क्षेत्र में ला खड़ा करती हैं। यह एक आश्चर्यजनक राइड है, जिसमें लगता है कि मानव जाति का भविष्य हम पर निर्भर है। ऑप्टिमस प्राइम के साथ लड़ाई और आलस्पार्क के बचाव में अपने को बनाए रखने में मस्तिष्क पूरे उद्वेग से काम करता है। अगली पीढ़ी का यह एक अद्‌भुत रोमांचकारी राइड है।

कम्प्यूटर एनीमेटेड सिम्यूलेटर सवारी का एक और आकर्षण है – **मिनियन राइड।** यह राइड ग्रू के घर में साहसिक कार्य से प्रारंभ होता है, जहां राइडर्स का चयन एक योजना के अन्तर्गत किया जाता है और वे शीघ्र ही सुपर विलेन प्रयोगशाला के माध्यम से अविस्मरणीय यात्रा में प्रवेश करते हैं। मिनयिन से प्रेरित नृत्य-पार्टी से हंसी भी आती-जाती रहती है। मिनियन मेहम के अनुभव से सुखद आनन्द प्राप्त होता है। बाद के चरणों में समुद्र तटीय कार्निवल, सुपर सिली फन लैण्ड, ओवर द टॉप आउटडोर फैमिली, प्ले जोन आदि अपनी यादगार छोड़ जाता है।

द रिवेंज ऑफ द ममी, फिल्म 'ममी' पर आधारित एक राइड है। यह राइड भी यूनीवर्सल स्टूडियो की राइड का एक आकर्षक केन्द्र है।

ट्रैक पर दौड़ते हुए पूरे संस्करण को पूरा किया जाता है। यूनीवर्सल के ममी राइड की अपनी एक मूलभूत रूपरेखा है तथा कहानी का चक्र निर्धारित समय में पूरा होता है। थीम में यूनीवर्सल क्रियेटिव का यह एक अद्‌भुत नमूना है तथा आईटीईसी कार्पोशन का भी इनमें अनूठा योगदान है।

विश्व की ब्लॉक बस्टर फ्रेन्चाइजी से प्रेरित आकर्षक और मजेदार **"कुंग फू पाण्डा – द किंगर्स क्वेस्ट"** आगंतुकों को रोमांचित कर देता है। यह यात्रा, व्यापक अनुभव के साथ अत्याधुनिक दृश्य प्रभावों से कथा-प्रसंग को लुभावनी बना देती है। ड्रीमवर्क्स एनीमेशन तथा यूनीवर्सल क्रियेटिव द्वारा निर्मित कहानी में 'पो' एक जंगली एवं खतरनाक मिशन पर निकलता है तथा अनमोल, दुर्लभ तथा सीमाहीन शक्ति-पुंज वाले तरल पदार्थ को सुपुर्द करने के लिए इसे रैगिंग रैपिड्स, समुद्री डाकुओं, मैजिक और कुंग फू का सामना करना पड़ता है। यूनीवर्सल क्रियेटिव के सीनियर डाइरेक्टर एवं एग्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर जॉन कोर्मिनो की अत्याधुनिक तकनीक ने इस राइड को रोमांचकारी बना दिया है। आगंतुकों को थियेटर की लाबी में शो के पूर्व का दृश्य देखने को मिलेगा। अचानक एलईडी पैनल जीवंत हो उठेगा तथा पो और श्रेक में तर्क-वितर्क होगा कि यह शो किसका होगा? बाद में यह पता चलता है कि सम्राट को कुछ विशेष वस्तु देनी है और इसके लिए पो को एक खास मिशन पर जाना होगा। यह पूरा दृश्य एक शो के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

राइड लेने वालों की सीट में गति होती है तथा थियेटर में हवा और पानी के प्रभाव भी आते रहते हैं। फिल्म में यद्यपि मूल आवाज की प्रतिभा नहीं है, किन्तु ड्रीमवर्क्स के वरिष्ठ लोगों के साथ काम करने की परिणति इसमें स्पष्ट परिलक्षित होती है। जानकारी लेने पर पता चला-डीमवर्क्स ने प्राथमिक मीडिया के लिए एनीमेशन पर काम किया और साउंड ट्रैक लंदन के एबे रोड स्टूडियो में रिकार्ड किया गया जिसमें एक विशाल आर्केस्ट्रा था तथा जिसमें चीनी वाद्ययंत्र शामिल थे।

समग्र रूप में कहा जा सकता है कि एक पूरे दिन का समय यूनीवर्सल स्टूडियो में व्यतीत किया जा सकता है। हर राइड अपने आप में आकर्षण का एक केन्द्र है। यूनीवर्सल स्टूडियो के अलावा लॉस ऐन्जिलस में और भी जगह जाने का मौका मिला। यदि साथ में बच्चे हैं तो **डिजनीलैण्ड पार्क** भी काफी अच्छी जगह है। इसे एनाहेम कैलीफोर्निया में 17 जुलाई, 1953 में खोला गया। कहा जाता है कि यह एक ऐसा थीम पार्क है जिसे वाल्ट डिजनी ने खुद अपने पर्यवेक्षण में पूरा करवाया था।

हॉलीवुड साइन अमेरिका का एक सांस्कृतिक आइकन है जो लास एंजिलस, कैलीफोर्निया में काफी ऊँचाई पर अंकित है। यह सान्ता मोनिका पहाड़ी के माउंड ली चोटी पर स्थित है। यह इतने बड़े अक्षरों में

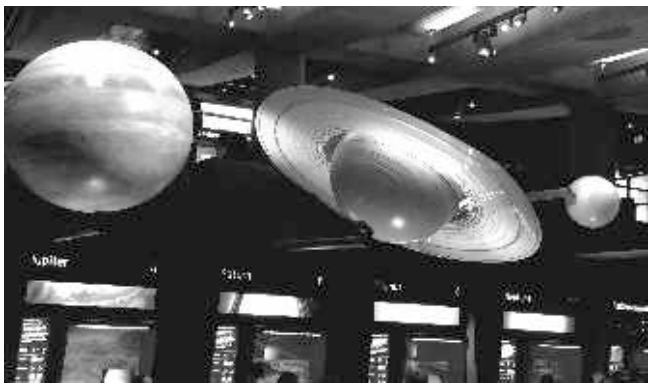

लिखा गया है कि इसे काफी दूर से पढ़ा जा सकता है। जो भी व्यक्ति लास एंजिलस आता है हॉलीवुड पहाड़ी क्षेत्र पर जाना पसन्द करता है। पहाड़ी क्षेत्र होने के नाते यहाँ का नजारा वैसे ही बड़ा लुभावना लगता है। यहाँ की प्राकृतिक छंटा देखते ही अधिकांश समय यहीं बिताने का मन करता है। प्राकृतिक पेड़, पौधे, पहाड़ी और सबसे ऊपर से झांकता हॉलीवुड से मन प्रसन्न हो जाता है। उसी दिन मैंने ग्रीफिथ आबजरवैटरी भी देखी। ग्रीफिथ बेधशाला लॉस एंजिलस, कैलीफोर्निया का ऐसा स्थान है जो माउंट हॉलीवुड ढलान पर स्थित है और यहाँ से लॉस एंजिलस वेसिन, दक्षिण-पूर्व के लॉस एंजिलस डाउन टाउन, दक्षिण के हालीवुड तथा दक्षिण-पश्चिम के प्रशान्त महासागर का नजारा लिया जा सकता है। इस बेधशाला में बिना किसी शुल्क के प्रवेश किया जा सकता है। तारामण्डल (प्लैनेटैरियम) शो एक दिन में 8 बार दिखाया जाता है। सप्ताहान्त में यह शो 10 बार दिखाया जाता है। अपराह्न 07 से 09 बजे तक दूरबीन से मुफ्त में भव्य नजारा लिया जा सकता है। बेधशाला के अंदर और इसके बाहर दोनों ही पर्यटक के लिए दर्शनीय है। बेधशाला के पास ही एक छोटा सा पार्किंग स्थल भी है जहाँ घंटों के आधार पर शुल्क देकर गाड़ियां पार्क की जा सकती हैं।

लॉस एंजिल्स में **बेवर्ली हिल्स** भी मनोहारी लगा। वस्तुत: बेवर्ली हिल्स को एक शहर कहा जा सकता है जिसमें चारों तरफ लॉस एंजिलस का शहर तथा पश्चिमी हॉलीवुड के हीरो, हीरोइन तथा अन्य कालाकारों के घर हैं। यहां मुख्य सड़क के बगल में एक लंबा सा पार्क है बीच में एक स्थान पर बेववर्ली हिल्स लिखा हुआ है। वहाँ घूमते हुए मुझे एक कलाकृति दिखी। इसे देखते ही मुझे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की याद आ गई। उस कलाकृति में विश्व की तमाम भाषाओं के वर्णाक्षर दिखे, **उसमें हिन्दी भी थी**। पता नहीं

क्यों, इसे देखते ही लगा हमारी पहचान सुदूर तक पहुंच गयी है। किसी दूसरे देश की धरती पर अपने लोग, अपनी भाषा, अपनी संस्कृति दिखे तो बड़ा सुखद आनन्द मिलता है और लगता है जैसे खोई हुई कोई वस्तु मिल गयी हो। इस स्थान पर लम्बे से लॉन में थोड़ी दूर घूमता रहा, फिर इसी आकृति के पास कुछ समय बिताया। जगह अच्छी लगी। यहाँ आस-पास में बने मकान भी काफी अच्छे लगे।

दूसरे दिन भी घूमने का मौका था। इसलिए सैन पेड्रो ब्रिज चला गया। इस ब्रिज का नजारा भी अच्छा लगा। इसे अच्छी तरह से देखने के लिए बगल से गुजरते हुए कार्गो की तरफ गया, जहाँ गाड़ी पार्क करने का स्थान भी मिल गया। अब पैदल ही कार्गो जहाजों तथा पास में बने हुए ब्रिज का नजारा लेता रहा।

तकरीबन एक घंटे तक यहाँ कार्गो की गतिविधियों, जहाजों, आदि का आन्नद लिया। इस स्थान को टर्मिनल आईलैण्ड कहा जाता है। वस्तुत:, यह एक ऐसी जगह थी, जहाँ बहुत समय नहीं बिताया जा सकता था। अत:, यहीं से प्वांइट फर्मिन पार्क जाने की योजना बनी। थोड़ी ही देर की ड्राइव के बाद हम लोग प्वांइट फर्मिन पार्क पहुंच गये। पार्किंग भी बड़ी सहजता से मिल गयी। वहाँ का दृश्य कुछ दृष्टि से बड़ा ही अद्‌भुत लगा। एक तरफ विशाल महासागर जहाँ दूर-दूर जाती जहाजें दिख जाती थीं और किनारे बना घास का मैदान तथा बीच-बीच में लम्बे वृक्ष। यह बड़ी ही शान्ति प्रिय जगह लगी, कोलाहल से दूर पिकनिक मनाने के लिए पूर्ण उपयुक्त। घास के मैदान के चारों तरफ टहलने के लिए सड़कें बनीं हुई थीं। आस-पास बने हुए घरों के लिए प्रात:कालीन स्वास्थ्य लाभ उठाने की दृष्टि से यह जगह काफी उपयुक्त लगी।

आस-पास ही सही, किन्तु टहलने का कार्यक्रम बना तो बनता ही चला गया। लास एंजिलस में **डाउनटाउन** तथा **वाक ऑफ द फेम** का नाम सुन रखा था, इसीलिए 23 फरवरी, 2019 को यहाँ जाने का कार्यक्रम बना। वॉक ऑफ द फेम और बेववर्ली हिल्स का कार्यक्रम साथ-साथ बनाया जा सकता है। हॉलीवुड वाक ऑफ फेम में कई एक (2600 से अधिक) पाँच नुकीले टेराज़ो और पीतल के सितारे शामिल हैं और यह बाउलेवर्ड के 15 ब्लॉकों और वाइन स्ट्रीट के तीन ब्लॉकों में स्थित है। इस सार्वजनिक स्मारक में संगीतकारों, अभिनेताओं, निर्देशकों, निर्माताओं, संगीत और नाट्य समूहों, काल्पनिक पात्रों और अन्य लोगों का मिश्रित रूप है। वस्तुत: यह एक लोकप्रिय पर्यटक स्थल है जहाँ आगंतुकों की भीड़ दिखाई देती है। यहाँ कुछ विशेष श्रेणी के सितारे

भी दर्शाए गये हैं। उदाहरण के लिए लॉस एंजिलस के पूर्व मेयर टॉम ब्रैडले सितारे में लॉस एंजिलस शहर की सील दर्शायी गयी है। इसी प्रकार के और भी प्रतीक चिह्न देखने को मिले। यहीं पर टीएसएल चीनी थियेटर स्थित है। इसका भी नाम पहले से सुन रखा था, इसलिए इसे देखने की इच्छा हुई। बाहर से इसका फोटो भी लिया। कहते हैं यहाँ अमेरिका की दूसरी सबसे बड़ी फिल्म स्क्रीन है। बाद में चीनी थियेटर ने आईमैक्स की सहभागिता के साथ (वर्ष 2013 में) अपने ढंग से इसकी डिजाइन तैयार की। पुन: बनाये गये इस थियेटर में लगभग 932 लोग बैठ सकते हैं।

इन स्थानों के भ्रमण के उपरांत घर आते समय रास्ते में मैडम तुसार हॉलीवुड मोम के एक संग्रहालय का दर्शन भी हुआ। यह भी कैलीफोर्निया में हॉलीवुड वॉउलेवर्स पर स्थित है जो टीसीएल चीनी थियेटर के पश्चिम में है। इसे मैरी तुसार द्वारा स्थापित किया गया था तथा इसका संचालन मर्लिन एंटरटेनमेंट्स द्वारा किया जाता है। कहते हैं इस तीन मंजिला संग्रहालय के निर्माण में आठ साल लग गये। संग्रहालय में सबसे बड़ी आकृति किंग काँग की है।

मैं जिस स्थान पर रुका हुआ था, उसे एलवर्न स्ट्रीट कहा जाता है। बाहर निकलने पर इधर-उधर घूमने का अच्छा मौका मिल जाता था। चूँकि यहाँ अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए वहाँ की व्सवस्था के अनुसार चलना पड़ता था। अत:, आस-पास के नजदीकी माल जैसे वेस्ट

फील्ड कल्वर सिटी मॉल, मैन हैटन विलेज मॉल, कॉस्को, में कई बार जाने का मौका मिला। भारतीय खाने-पीने की सामग्री की उपलब्धता के विषय में घर में चर्चा चली तो लड़के ने कहा – 'डैडी, कल आपको ले चलता हूँ एक ऐसी जगह जिसे मिनी इण्डिया कहते हैं-आर्टीसिया'। मुझे सचमुच यह जगह मिनी इण्डिया लगी। यहाँ एक ऐसा स्टोर था जहाँ भारतीय रुचि की सारी वस्तुएं उपलब्ध थीं। आटा, दाल, चावल से लेकर भारतीय ब्राण्ड के सभी तेल मसाले, सब कुछ उपलब्ध था। मुझे यह जगह बहुत अच्छी लगी। खरीददारी के अलावा होटल आदि भी भारतीय दिखे। हम लोगों ने भी उपयोगी वस्तुओं को खरीदने के उपरांत वहीं एक पंजाबी होटल में खाना खाया और घर आ गये। चूंकि हमारा प्रवास अभी और दिन का था। इसलिए दोबारा यहाँ आने की इच्छा को मूर्त रूप देना आसान था। दूसरी बार जब हम लोग यहाँ आये तो पैराडाइज मील्स में खाना खाए और उसके पूर्व यहाँ के आस-पास के क्षेत्रों का भ्रमण किए। यह क्षेत्र भारतीयों को रहने के लिए सचमुच बड़ा ही उपयुक्त लगा।

धीरे-धीरे भारत वापस आने का समय नजदीक आ रहा था। एक महीने का समय कुछ कम नहीं होता। इस दौरान छोटे से शिशु से लगाव भी हो चला था। अब तो उससे दूर जाने का मन भी नहीं कर रहा था। किन्तु, समय तो सबको अपने अनुरूप लेकर चलता है और मेरे वापस आने की तारीख यानी 29 फरवरी, 2019 भी आ गयी। तमाम स्मृतियों को समेटे बोझिल मन से मैं वापस आ रहा था।

* उप निदेशक (रा.भा.), केरेबो मुख्यालय, बेंगलूरु

राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है।
(मैथिलीशरण 'गुप्त' के साकेत से)

रेशम कृषि में महिला पात्र

-के.एस. तुलसी नायक* और रा.कु. मिश्र **

हमारे देश में कई प्रकार के धर्मों का पालन किया जाता है और इन सभी धर्मों में ऐसे कई धार्मिक अवसर होते हैं जिसमें रेशम से बने वस्त्र का प्रमुख स्थान होता है। इसी कारण रेशम को "वस्त्रों की रानी माना जाता है"। भारत में रेशम का उपयोग अधिकांशतया भारतीय महिलाओं द्वारा किया जाता है। विशेष रूप से वैवाहिक अवसर पर, त्योहारों में, धार्मिक अवसर पर रेशम वस्त्र का उपयोग श्रेष्ठ माना जाता है। यही कारण है कि हमारे देश में रेशम सभी के जीवन एवं संस्कृति में घुल-मिल गया है। ऐतिहासिक लेखों के अनुसार 1120 ई.पू.के पहले ही लोगों को रेशम के उपयोग के बारे में जानकारी थी। चीन देश की राजकुमारी (2200 ईं.पू.) में की। एक लोककथा प्रचलित है कि एक दिन वे शहतूत के पेड़ के नीचे चाय पी रहीं थीं और इसी समय एक सफेद कोसा अचानक चाय के प्याले में गिर पड़ा। देखते-ही-देखते उस कोसे से एक लंबा धागा निकल रहा था। इसको देखकर राजकुमारी हैरान चकित होकर उस कोसे के बारे में पता लगाने के लिए अपने देश के प्रमुख वैज्ञानिकों को इस रहस्य के अन्वेषण का आदेश दिया। खोज के फलस्वरूप एक समय ऐसा आ गया जब चीन देश में रेशम क्रांति छा गयी। इसकी वजह से हम आज देख सकते हैं कि चीन देश, रेशम उत्पादन की दृष्टि से विश्व में पहला स्थान रखता है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जिसमें बड़ी संख्या में लोग कृषि-कार्य में लगे हुए हैं। समीक्षा के अनुसार लगभग 70% से अधिक लोग कृषि करते हैं जिसमें लगभग 50% महिलाएं हैं। रेशम कृषि बहुत ही नाजुक कार्य है जिसको बहुत धैर्य और शांत भाव से करना चाहिए। इसी कारण से रेशम कृषि में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। रेशम कृषि के मुख्य कार्यों में रोगमुक्त रेशम के अंडों को पालने से लेकर उसकी पूरी देखभाल, शहतूत के पत्तों को चुनकर खेत से लाना और उसे छोटे-छोटे रूप में काटकर रेशम के कीड़ों को, पहली पीढ़ी से आखिरी पीढ़ी तक खिलाना निहित है। इसके साथ-ही-साथ रेशम को लगने वाली बीमारियों से बचाना और कोसा हो जाने पर रेशम के धागे बनाने तक के सभी कामों में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। महिलाओं को रेशम कृषि से आकर्षित होने के कई कारण हैं, जिनमें प्रमुख हैं रेशम कृषि में

कम निवेश, शिक्षा, तकनीकी ज्ञान और शारीरिक शक्ति का उपयोग होता है और महिला घर में बैठकर अपने अन्य घर के काम-काज के साथ इस उद्योग को भी संभाल सकती हैं। केवल रेशम कृषि में ही नहीं बल्कि रेशम अनुसंधानों में भी महिला वैज्ञानिकों का योगदान रहा है। आज रेशम अनुसंधान में कार्यरत अनुसंधान संस्थानों और प्रयोगशालाओं में महिलाओं की संख्या कम नहीं है। सतत विकास की ओर महिलाओं का इतना योगदान होने पर भी हम देख रहे हैं कि महिलाओं के विकास के नाम पर उनका शोषण भी हो रहा है। महिलाओं पर होने वाले शोषण को रोकने और उनके जीवनस्तर को सुधारने एवं उन्हें बढ़ावा और प्रोत्साहित करने के लिए केन्द्रीय रेशम बोर्ड और भारत सरकार द्वारा ठोस प्रयास किये जा रहे हैं।

1989१९८९ में केन्द्रीय रेशम बोर्ड और रेशम उत्पादन में लगे राज्यों ने मिलकर रेशम कृषि में संलग्न महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए विश्व बैंक योजना, स्विस विकास योजना, राष्ट्रीय रेशम कृषि योजना आदि के ज़रिए महिलाओं का मनोबल बढ़ाया। महिला कृषकों को जमीन खरीदने के लिए लोन की सहायता के साथ-ही-साथ और भी अनेक प्रकार की सब्सिडी के ज़रिए रेशम कृषि के लिए विशेष रूप से महिलाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है। रेशम कृषि की विभिन्न तकनीकियों को समझाने के लिए केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीएसआरएण्डटीआई), मैसूरु, केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संसथान, बेंगलूरु और केएसएसआरडीआई

(KSSRDI), तलघटपुरा में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। प्रसार कार्यों में संलग्न महिला अधिकारियों को महिला समूह के साथ रेशम कृषि के बारे में जानकारी देने के लिए और कार्य निर्वहन करने के लिए भेजा जा रहा है। महिलाएं अपने परिश्रम से कमाई हुई आमदनी पर बहुत गर्व महसूस करती हैं। फलस्वरूप अधिकांश महिलाएं अपने पैरों पर खड़ी हो रही हैं। महिलाओं को बाज़ार और बाजारों से जुड़ी हुई जानकारी देने के लिए रेशम बाज़ारों में महिलाओं का अलग विभाग खोला गया है और उसके साथ महिला पर्यवेक्षक को भी नियुक्त किया गया है ताकि महिलाओं को रेशम संबंधी जानकारी सही वक्त पर प्राप्त हो सके।

रेशम कीटपालन करने में और रेशम बीज उत्पादन संगठनों में और रेशम धागाकरण के समय स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के निवारण हेतु एक समिति भी बनायी गयी है जिसमें सभी स्वास्थ्य संबंधी सलाह दी जाती है। सभी योजनाओं के कारण रेशम कृषि में सभी लोग खास करके महिलाएं इस कार्य में लगी हुई हैं। रेशम उत्पादन में महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए केन्द्रीय रेशम बोर्ड और इससे जुड़ी शाखाओं से भरपूर मदद मिल रही है। परिणामस्वरूप महिलाओं की आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है और वे स्वावलंबी बन सकी हैं। यदि रेशम उद्योग के साथ-साथ मछली और पॉल्ट्री जैसे उद्योगों को भी अपनाया जाए तो रोजगारी की समस्या काफी हद तक दूर हो सकती है।

वैश्वीकरण, निजीकरण और उदारीकरण के तहत, महिलाओं की भूमिका अधिक आकर्षक हो रही है। ग्रामीण रोजगार और गरीबी उन्मूलन के लिए रेशम उद्योग छह लाख लोगों को रोजगार प्रदान करता है, जिसमें महिलाओं की संख्या 53% से अधिक है। रेशम-कृषि, देश की विरासत को बनाए रखने के साथ-ही-साथ कमजोर वर्गों एवं वंचित समुदायों की आय का एक प्रमुख स्रोत है और देश के समग्र विकास में इसकी बड़ी अहम भूमिका है।

*वैज्ञानिक–सी, रेशम जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान प्रयोगशाला, कोड़ती, बेंगलूरु

**निदेशक, केरेबो, बेंगलूरु

चुप्पी

- चेतनादित्य आलोक

सार्थक होती है
किसी देश, काल और समाज के हित में
साधी गयी चुप्पी,
पीड़ा और संत्रास से त्रस्त
किसी व्यक्ति के हित की चुप्पी भी
बड़ी सार्थक होती है,
लेकिन तब यह चुप्पी
अत्यंत घातक होती है
जब किसी देश, काल और समाज में
लिखे जाते हैं नये इतिहास
और की जाती है नयी परिकल्पनाएं
ऐतिहासिक भूलों अथवा साजिशों की पृष्ठभूमि में
नयी साजिशें रचकर।
तब भी बड़ी घातक होती है यह चुप्पी
जब जन समुदायों से ठसाठस भरे
गाँव, शहर, बस्तियाँ और स्लम
यातना घर बना दिये जाते हैं,
और त्राहि-त्राहि करते लोग
झेलने के लिए विवश होते हैं
पीड़ा, संत्रास और अवहेलना का शाश्वत दंश।

* संस्कार, रोड नं.3, विद्या नगर (पश्चिम), हरमू, राँची – 834 002, झारखंड

अन्नदाता

- विष्णु वर्मा

ये हमारे कृषक हैं
असीमित क्षमता के धनी,
ये क्या नहीं कर सकते,
जिसे स्पर्श कर दें -
उसकी उपयोगिता बढ़ जाती है,
धरती से जीवनदाई अन्न उगाकर -
सभी का पोषण करते हैं,
परिश्रम के साकार रूप हैं,
दुनिया की सारी संपदाओं से अधिक -
इन्हें मिट्टी प्यारी है,
मिट्टी से इनका जीवन है,
मिट्टी भी इनसे मिलकर गौरवान्वित है,
इनमें अभाव और मुश्किलों से लड़ने की -
अपार शक्ति है,
किसी से कुछ माँगना -
अपनी हेठी समझते हैं,
पर कोई सर्वस्व माँग ले -
अर्पित कर देंगे,
औरों के लिए दिन रात भले अलग हो -
पर किसान चौबीसो घंटे अपनी धुन में लगे रहते हैं,
ये धरती पर मानव जीवन की परकाष्ठा है,
साहस, धैर्य और परिश्रम से लोकहित की -
इनमें अपरंपार चेष्ठा है,
व्यक्ति उसका दिया ही तो खाता है,
वह देव-तुल्य अन्नदाता है।

ग्रा./पो.- ककोली – 224 195, फैजाबाद, जिला - अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

लोग यों ही हैं झिझकते, सोचते
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर
किन्तु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर

- "हरिऔध" की एक बूँद से

स्मृति-रेखा

-अभिनव श्रीवास्तव

ओके बाई लावण्य, काम निपटा कर जल्दी वापस आना, मैं इंतजार करुंगी। फ्लाइट के उड़ान भरते समय 'स्मृति' मोबाइल से बातें कर रही थी। कहीं और से नहीं, वहीं एअरपोर्ट से, जहां वह लावण्य को छोड़ने आयी थी और फ्लाइट के टेक ऑफ करने तक वहीं रुकी थी। स्मृति के पास लावण्य के सिवा और कोई नहीं था जो उसका तनिक भी ध्यान रखे। संभवत: यही कारण था कि वह अपने अस्तित्व को लावण्य में झांकने लगी थी। उसके अपने मां-बाप तो थे नहीं, चाचा-चाची के यहां पली-बढ़ी थी। बिल्कुल मशीनी जिन्दगी थी उसकी। घर का खाना बनाना, सबके लिए सुबह की पहली चाय तैयार करना, घर के अन्य बच्चों का लंच-पैक तैयार करना और अंत में जल्दी-जल्दी नहाँ-धोकर कॉलेज जाना। यह सब उसके कार्य का हिस्सा था। काम करने में उसे बिल्कुल आलस्य नहीं लगता था, लेकिन रोज-रोज की मशीनी जिन्दगी भी उसे उलाहना देने लगी थी। पता नहीं क्यों, काम करते करते बीच-बीच में कुछ सोचकर उसकी आँखे नम हो जाया करती थी। कुछ ही दिन पहले की बात है, एक दिन वह कॉलेज जा रही थी, रास्ते में उसे कुछ चक्कर आया और वह गिर पड़ी। आँखे खोली तो अपने आपको किसी अजनबी व्यक्ति के सामने पायी और वह अखबार से हवा देकर उसे होश में लाने की चेष्टा कर रहा था। स्मृति को जैसे ही चेतना आयी, वह उठकर बैठ गयी और चलने के लिए खड़ी होने का प्रयास करने लगी। अजनबी ने कहा – 'दस कदम पर ही एक डॉक्टर की डिस्पेंसरी है, बी.पी. चेक करवा कर चली जाइए।' स्मृति ने कहा – 'नहीं, मैं बिल्कुल ठीक हूँ और अपनी देख-भाल कर सकती हूँ।' 'देखिए, जिद नहीं करते, आपको बी.पी. तो चेक कराना ही पड़ेगा। फिर परेशानी होने पर आप मुश्किल में पड़ जाएगी।' पता नहीं क्यों स्मृति को उसके बात में आत्मीयता नजर आने लगी थी और वह अनचाहे ही अजनबी के साथ डिस्पेन्सरी की तरफ चल पड़ी।

वक्त गुजरता जा रहा था और स्मृति पुन: सामान्य ढंग से अपने कार्यों में व्यस्त हो गयी थी। लगभग 25 दिन बाद स्मृति के पीछे से एक आवाज आयी - 'अब कैसी तबियत है मैम?' स्मृति ने पीछे देखा तो वह तुरन्त समझ गयी – यह वही व्यक्ति है जिसके साथ उस दिन डिस्पेन्सरी तक डॉक्टर के पास आयी थी। खैर, बिना किसी और भूमिका के कहा – मैम मैं लावण्य, उस दिन आप..... आगे कुछ बोलता, इसके पहले ही स्मृति ने कहा मैं समझ गयी, आपके साथ उस दिन मैं डॉक्टर की डिस्क्पेन्सरी तक गयी थी। जिस दिन से लावण्य उससे मिला था, उसके मन में विचित्र से भाव आ रहे थे। पता नहीं क्यों उसे लगता था कि उसके जीवन में एक खालीपन सा है। बिल्कुल सीधा-साधा पहनावा, बिना किसी बनावट के बोलचाल, चेहरे पर नयनों के किनारे गिरी हुई बाल की दो लटें, लावण्य उससे कुछ बातें करना चाहता था, किन्तु हमेशा जल्दी में रहने के कारण उसे मौका ही नहीं मिलता था। आज जब वह मिला तो उसके मन में स्मृति के बारे में जानने की उत्कंठा जाग उठी थी। लेकिन स्मृति ने कम शब्दों में लावण्य से कहा – 'उस दिन सुबह से तबियत ठीक नहीं थी, फिर भी अंतिम सेमेस्टर है, इसलिए आना पड़ा। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। जल्दी में हूँ, चलती हूँ।' कह कर वह कॉलेज की तरफ आगे बढ़ गयी। लावण्य को लगा उसका हर पल बड़ा व्यस्ततम क्षण होता है। चाहकर भी वह स्मृति से बातें न कर सका। 'ठीक है – फिर मिलते हैं' कहकर लावण्य भी ऑफिस जाने के लिए आगे बढ़ गया।

नियति को कोई नहीं जानता। तीसरी बार लावण्य की स्मृति से मुलाकात एक पार्क में हुई। लावण्य ने देखा – वह अकेली चुपचाप बैठी अपने दु:ख को छिपाने का असफल प्रयास कर रही थी। उसके अंदर के भाव उसे बीच-बीच में बिह्वल कर देते थे और वेदना से निकले आंसुओं को वह जोर से पोंछ लेती थी। उसका पूरा प्रयास होता था कि पार्क में बैठे एवं आते-जाते लोग उसकी व्यथा को भांप न लें। लावण्य जैसे ही उसे देखा, अपने आपको रोक न सका और उसके बगल में आकर बैठ गया। उसके बैठते ही स्मृति उठ खड़ी हुई और चलने को तैयार ही हुई कि लावण्य ने उसका हाथ पकड़ कर बैठा लिया और बोला – मैं मानता हूँ मेरा आपसे कोई संबंध नहीं है और आपको देखकर मैं पूरी तरह समझ गया हूँ कि कोई बात जरुर है जो आपको व्यथित किए हुए है। देखिए, दर्द छुपाने से व्यथा बढ़ती जाती है। एक अनजान ही सही, हो सकता है मैं आपकी कुछ मदद कर सकूँ।' उसकी बातों को सुनते ही स्मृति फफक-फफक कर रो पड़ी। अपने हाथों से मुंह छिपाये वह बोली – 'मुझे मेरी हालत पर छोड़ दीजिए, मेरा इस दुनिया में कोई नहीं, मैं अबला हूँ, कुछ ही दिनों में किसी वस्तु की तरह बेच दी जाऊँगी, आप मेरी क्या मदद कर सकते हैं?' लावण्य समझ चुका था कि वह किसी गहरी परेशानी में है और वह जानना चाहता था – आखिर कौन सी ऐसी बात है जो उसे इतना व्यथित किए हुए है। लावण्य ने कहा 'देखो स्मृति, मैने जब से तुम्हें देखा है, मुझे पता नहीं क्यों लगता है – जरुर कोई अंतर्वेदना तुम्हें अंदर-ही-अंदर सता रही है। आज तो लग रहा है - तुम उसके हद तक पहुंच गयी हो – बात क्या है? खुलकर बताओ – आखिर ऐसी कौन सी बात है जो तुम्हारे आंसुओं को निर्झर बहने के लिए बाध्य कर रही है।' स्मृति, लावण्य की सहानुभूति से अभिभूत होती जा रही थी। उसे लावण्य में अपनापन स्पष्ट दिखने लगा था। कुछ बोलने को कौन कहे? उसके आँसू अब रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। लावण्य को लगा रो लेने से वेदना कुछ कम हो जाती है, इसलिए कुछ समय तक वह चुपचाप बैठा रहा। अंत में उसने कहा 'स्मृति जीवन में सुख-दुख आते जाते रहते हैं। हो सकता है किसी बात से तुम्हारे दिल को बड़ा आघात पहुंचा हो और तुम उदासी के भयंकर सागर में डूब गयी हो। किन्तु यह स्थिति हमेशा नहीं रहेगी। सब ठीक हो जाएगा।' तुम्हें क्या पता लावण्य – कल मैंने घर में चाचा-चाची को बात करते हुए सुना, वे लोग मेरी शादी करना चाहते हैं और उसके लिए कोई व्यक्ति है जो 30 लाख रुपये देने को तैयार है। तुम्हीं बताओ क्या मैं कोई वस्तु हूँ, जिसका मोल लगाया जाए। यह सत्य है, मेरे माँ-बाप नहीं, इसका मतलब यह तो नहीं कि हमारी जिन्दगी उनके नाम गिरवी रख दी गयी है।

जब से मैंने उन लोगों की बातें सुनी हैं, जीवन से विरक्ति हो चुकी है। समझ ही नहीं पा रही हूँ कि क्या करूँ। मैंने तो जब से होश संभाला है नौकरानी की तरह घर का सारा काम करती हूँ। चाचा-चाची को शिकायत का कोई मौका ही नहीं देती। दिन भर लगी रहती हूँ – क्या इसका यही प्रतिफल है। मैं यहां से चली जाऊँगी – लावण्य, दूर..... बहुत दूर। कम शब्दों में लावण्य को स्मृति की पूरी जिन्दगी बयां कर दी थी। उसकी व्यथा कतई निर्मूल नहीं थी। वह स्वयं इसे सुनकर अवाक् रह गया था। सोचने लगा, दुनियां में ऐसे लोग भी हैं, जो दूसरों की बिलकुल परवाह नहीं करते। एक ऐसी लड़की जिसने अपने यौवन की दहलीज तक का समय चाचा-चाची के नाम कर दिया हो, उसका प्रतिफल यह होगा, लावण्य सोच भी नहीं सकता था। लावण्य और स्मृति को सहज होने में समय लग गया और इस बीच मौन का एक लंबा दौर दोनों के बीच पसर गया था। अंततः, लावण्य ने चुप्पी तोड़ी और बोला – देखो स्मृति, यह सत्य है तुम्हारे चाचा-चाची ने तुम्हारा यथासंभव ध्यान रखा है और तुमने अपना कर्तव्य निभाते हुए उन्हें उपकृत भी किया है। बाल्यकाल से यहां तक पहुंचने में तुम्हारे चाचा-चाची ने भी तुम्हारे लिए कुछ श्रम तो उठाया ही है। यह तुम्हारी महानता है कि तुमने उन्हें इतना सम्मानीय बना दिया है कि उनके सामने तुम कुछ बोल ही नहीं पाती। यह तुम्हारी अपनी जिन्दगी है, स्मृति!– तुम्हें अपने निर्णय खुद लेने पड़ेंगे। इसके पहले कि बात आगे बढ़े, तुम आगे बढ़ो और स्पष्ट शब्दों में अपने चाचा-चाची से अपने दिल की बात कह दो। लावण्य की इन बातों से स्मृति को आत्मीय बल मिला। उसे पता नहीं क्यों लगा – लावण्य बहुत सुलझा हुआ व्यक्ति है। चाचा-चाची की भर्त्सना करने के बजाए वह बड़े नपे-तुले शब्दों में स्मृति को समझा रहा था। वहां लावण्य बिलकुल निरपेक्ष था और उसके इसी गुणों के कारण स्मृति अपने अभ्यंतर में उसकी तरफ खिंची चली आयी। आज पहली बार किसी पुरुष के वक्ष पर सिर रखकर उसने अपने आंतरिक दुःख का पवित्र आँसू बहाया था। लावण्य उसके सिर पर हाथ रखकर सांत्वना शक्ति का संचार कर रहा था। कुछ समय तक वे एक दूसरे से बातें करते रहे और अंततः स्मृति ने अपने जाने का प्रस्ताव रखा। लावण्य ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की, प्रत्युत वह चाहता था स्मृति घर जाकर सामान्य हो जाए और वह अपनी वेदना को भूलकर दैनिक कार्यों में लग जाए।

धीरे-धीरे स्मृति और लावण्य की दोस्ती कब प्यार में बदल गयी, पता ही नहीं चला। अब तो वे दोनों दिन में एक बार जरुर मिलते थे। अपना दुःख-दर्द एक दूसरे को सुनाकर क्षणिक ही सही, परस्पर तसल्ली दे लिया करते थे। स्मृति जब से 30 लाख रुपये में अपनी शादी की बात सुनी थी, उसे हमेशा एक भय सताता रहता था। कहीं सचमुच मेरे चाचा-चाची शादी पक्की न कर दें, इसके पहले ही वह लावण्य से शादी कर लेना चाहती थी। लावण्य में उसे अपने संपूर्ण जीवन की यथार्थता नजर आने लगी थी, उसके बगैर उसे अपना जवीन निस्सार लगने लगा था। लावण्य भी उसे अपने जीवन का एक अभिन्न हिस्सा मानने लगा था और उसकी खुशी में ही अपनी प्रसन्नता का आभास करने लगा था। दोनों ने ही मन बना लिया था कि वे एक-दूसरे से ही शादी करेंगे। वयस्क होने से सामाजिक रुकावट नहीं थी, लेकिन पारिवारिक बाधाओं से दोनों ही आशंकित थे। स्मृति को तो पूरा यकीन हो चला था कि उसे अपनी यह चाह पूरी करने के लिए पारिवारिक विद्रोह करना पड़ेगा। लेकिन लावण्य के प्रेम पर उसे पूरा यकीन था। वह जानती थी कि जैसे भी हो लावण्य उसे अपनी जीवन संगिनी अवश्य बनाएगा। इसी उम्मीद में उसका जीवन आस्थापरक हो चला था और चाचा-चाची की सुनी बातें उसे क्षीण लगने लगी थी।

लावण्य को मुंबई गये लगभग 1 हफ्ता बीत चुका था। इस बीच सब कुछ ठीक ही चल रहा था। एक दिन अचानक स्मृति के घर में कोलाहल मचा हुआ था। स्मृति की चाची ने शाम को लगभग 05 बजे स्मृति से कहा - 'सोच रहीं हूँ तुम्हारी शादी कर दूँ। अभी तक तुम्हारे प्लेसमेन्ट की प्रतीक्षा थी। अब तो तुम्हें नौकरी भी मिल गयी है। धूमधाम से शादी करुँगी। लड़का भी खोज लिया है। उसका अपना बिजनेस है। तुम्हें अपने गांव का घर तो याद है न, उसी के बगल वाले गांव 'आनन्दपुर' के भले लोग हैं। अब तो वे लोग गांव से मुम्बई आ गये हैं। लड़का भी होनहार है।' चाचा-चाची की काना फूंसी वह अपने कानों से सुन चुकी थी। उसे मालूम था, जल्द ही उसकी शादी की बात उठने वाली है, उसने अपने आपको सुदृढ़ कर रखा था। बड़े निर्भीक शब्दों में स्मृति ने अपनी चाची से कहा - मैं यह शादी नहीं करुँगी, मैंने आज तक आप सबकी हर बात मानी है, बिना सवाल उठाये, हर आदेशों का पालन किया है। लेकिन मुझे मजबूरन यह कहना पड़ रहा है कि मैं अभी यह शादी नहीं करुँगी। उसकी चाची तो आवाक् रह गयीं। उन्हें पता ही नहीं था कि जो लड़की आज तक उनके खिलाफ जुबान तक नहीं खोली हो, वह इतने निडर भाव से कैसे बोल सकती है। चाची फिर शुरू हो गयी – हाँ-हाँ, इसीलिए तो पाल-पोस कर बड़ा की हूँ, इसीलिए पढ़ाया-लिखाया, इसीलिए तो इस काबिल बनाया कि जुबान चला सको, अब तो अपने पैरों पर खड़ी हो गयी हो न, जो चाहो बोलो, लेकिन शादी तो वहीं होगी, तुम्हारे चाचा ने जुबान दे रखी है, बात पक्की हो चुकी है। स्मृति ने दो टूक शब्दों में कहा – 'मैं यह शादी कभी नहीं करुँगी, चाची, आप तो मेरी मां समान है अपनी पुत्री की एक बात तो मान लीजिए, यह मेरी जिन्दगी का सवाल है, मुझे बाध्य मत कीजिए।'

शाम को लगभग 6 बजे स्मृति के चाचा भी घर आ गये। घर आते ही उन्हें पत्नी की आवाज सुनायी दी। उन्हें जैसे पहले से पता हो – घर में आज क्या होने वाला है, शादी की चर्चा तो चलानी ही थी, आज वह तिथि भी आ गयी थी। स्मृति के प्रतिरोध के शब्द भी उनके कान में पड़े। उन्हें ताज्जुब हुआ कि इतनी शांत रहने वाली लड़की इतनी तेज आवाज में बात भी कर सकती है। जैसे ही वे घर में दाखिल हुए, दोनों चुप हो गये, किसी भी तरफ से कोई आवाज नहीं, एकदम शांत। उन्होंने खुद कहा – क्या बात है, इतनी जोर-जोर से तुम दोनों में क्या बात चल रही थी। बाहर तक आवाज आ रही थी। 'मसला क्या है?' अनजान बनते हुऐ उन्होंने कहा। पत्नी को

तो जैसे इसकी प्रतीक्षा रही हो। बोलीं – देखते नहीं अपनी लाडली को, शादी से मना कर रही है, बोलती है शादी ही नहीं करूंगी। आप ही समझाइए – अब तो जुबान भी चलाने लगी है। चाचा ने चिकनी चुपड़ी बातें करते हुए कहा – 'बच्ची है, तुम्हें प्यार से समझाना चाहिए – स्मृति तुम चिन्ता मत करो, मैंने सोच-समझकर निर्णय लिया है, लड़का अच्छा है, अपने खुद का बिजनेस संभाल रहा है – बोरीवली में रहता है। तुम्हें मुंबई नहीं पसन्द है तो लड़के से बात कर लूंगा, वह बेंगलूरु में आ जाएगा और अपना बिजनेस शुरू करेगा। अब तो तुम्हें भी वेतन मिलने लगेगा, तुम्हारा 9 लाख का पैकेज है, और क्या चाहिए।' अपने चाचा के हर शब्दों को स्मृति बड़े ध्यान से सुनती रही। चाचा के हर शब्द उसे आशंकित कर रहे थे। बिना कुछ बोले सिसक रही थी, उसके समझ में ही नहीं आ रहा था क्या करे?" उसके मन में झंझावात चल रहा था। किसी तरह उसने हिम्मत जुटायी और बोली – चाचा, मैं यह शादी नहीं कर सकती। स्मृति के इन शब्दों को सुनते ही वे आग-बबूला हो बैठे। जोर से दहाड़े - "कैसे नहीं करोगी, तुम्हें यह शादी करनी ही पड़ेगी और मैं यह शादी करवा कर ही रहूंगा, मैं अपने दिये गये वचन से पीछे नहीं हट सकता। देखता हूँ – कौन रोकता है यह शादी।"

रात के 10 बज चुके थे। घर में खाना तक नहीं बना। स्मृति उठी सब्जियाँ काटने लगी तो उसकी चाची ने रोक दिया। उन्होंने कहा – आज खाना नहीं बनेगा। सब वैसे ही सोएंगे। स्मृति का भी मन नहीं लगा रहा था। वह भी बिना कुछ बोले सोने चली गयी। संयोग देखिए, लावण्य भी मुंबई गया था और सुरेश का व्यवसाय भी वहीं था। रात को स्मृति सो नहीं सकी। लावण्य से सारी बातें बताकर वह अपने बोझ को हल्का करना चाह रही थी। उसने कॉल किया तो लावण्य सो रहा था। तीसरी बार कॉल करने पर मोबाइल की घंटी बजते ही वह उठ गया और समृति की भरभराई हुई आवाज से वह किसी अज्ञात आशंका से घबरा उठा। स्मृति ने लावण्य को पूरी बात बतायी और लावण्य भी क्षण भर से लिए किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। सुबह उठते ही वह जल्दी-जल्दी तैयार हुआ और बोरीवली के लिए चल पड़ा। वहाँ उसे सुरेश को ढूढने में थोड़ी परेशानी अवश्य हुई, किन्तु जल्द ही लावण्य ने पता लगा लिया। वह जान चुका था कि सुरेश एक टैक्सी ड्राइवर है और विगत छः वर्ष से टैक्सी चला रहा है। लावण्य भी हतप्रभ था – लड़के का बिजनेस ऐसा हो सकता है, वह सोच भी नहीं सकता था। अब उसे पूरा यकीन हो गया था कि स्मृति के चाचा-चाची सचमुच उसकी जिन्दगी से खेल रहे हैं। क्षण भर के लिए उसने सोचा – यह कहाँ से 30 लाख रुपये का इंतजाम कर सकता है? फिर भी उसने तहकीकात की तो पता चला कि छह साल पहले घर की सारी जमीन आदि बेंचकर सुरेश अपने माँ-बाप के साथ बोरीवली में रह रहा था। दहेज के नाम पर अक्सर लड़के वाले पैसे की मांग करते हैं, लड़के वाले पैसे देकर विवाहिता लायें, यह उसने पहली बार देखा था। यह तो उसे सचमुच खरीद-फरोक्त लगी।

लावण्य अब जल्द से जल्द बेंगलूरु पहुंचना चाहता था। स्मृति का जीवन बर्बाद होते हुए नहीं देख सकता था। उसी दिन उसने ऑफिस का कार्य समेटा और बेंगलूरु के लिए प्रस्थान कर दिया। रास्ते में वह सोचता हुआ जा रहा था कि अब क्या और कैसे करे? बेंगलूरु पहुंचते ही वह अपने घर गया। यद्यपि वह सारी बातें अपनी पिताजी को बताकर सामाजिक नियमों का पालन करते हुए स्मृति को अपने घर लाना चाहता था। किन्तु समय कम था और जल्दी से जल्दी यह काम निपटाने में भलाई थी। बिना विलंब किये वह निकटस्थ पोलिस स्टेशन गया और इंस्पेक्टर को सारी बातें बड़े इत्मीनान से बतायीं। इंस्पेक्टर भी समझदार था, किसी लड़की की जिन्दगी का प्रश्न था। इसलिए इंस्पेक्टर ने पहले ही पूछा - क्या वह स्मृति से शादी के लिए तैयार है। लावण्य ने हामी भरी और इंस्पेक्टर से अनुरोध किया कि वह स्मृति के घर जा रहा है और थोड़ी देर बाद पुलिस को वहां पहुंचने का आग्रह किया।

लावण्य ने स्मृति के घर का दरवाजा खटखटाया तो स्मृति के चाचा ने दरवाजा खोला और पूछा – बोलिए क्या काम है? आप कौन हैं? लावण्य ने अपना परिचय देते हुए कहा – मैं लावण्य, आपसे स्मृति का हाथ मांगने आया हूँ, अंदर आ जाऊँ। "नहीं", खबरदार, यहीं खड़े रहो, मैं स्मृति से निपटकर आता हूँ। वे अंदर गये और स्मृति से बिना कुछ बोले कई थप्पड़ रसीद किये और हाथ खींच कर उसे दरवाजे तक लाये। यह कौन है? तूने इसे यहाँ किसलिए बुलाया है? कहते हुए उन्होंने स्मृति को पीटना शुरू कर दिया। लावण्य से नहीं रहा गया। उसने स्मृति के चाचा का हाथ पकड़ा और कहा, "देखिये मैं आपकी इज्जत कर रहा हूँ, यदि आपने स्मृति को और पीटा तो मेरा हाथ भी उठ सकता है, इसलिए कृपा कीजिए और हदें पार मत कीजिए।" बड़ी-बड़ी आँखे किए स्मृति के चाचा लावण्य को ऐसे देख रहे थे जैसे उसे खा जाना चाहते हों। इसी बीच स्मृति भी बोल पड़ी – चाचा, मैंने लावण्य को नहीं बुलाया है, किन्तु, मैं इन्हें जानती ही नहीं वरन् इनसे बेहद प्यार भी करती हूँ। आप तो खा-म-खा इतना क्रोधित हो रहे हैं। हमें पीटने से क्या होगा? यदि हमें मारने से आपका गुस्सा शांत हो तो और मार लीजिए, किन्तु लावण्य की बेइज्जती मत कीजिए। "बेइज्जत तो तुम मुझे कर रही हो, पूरे मोहल्ले में तुमने मुझे तमाशा बना दिया, मैं किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहा।" इस लड़के को देखो कैसे घूर रहा है, अभी तक तो मैंने इसकी खबर भी नहीं ली है। अब तक स्मृति की चाची भी आ चुकी थी और मामला और उलझ गया था। स्मृति के चाचा को पता नहीं क्या सूझा और वे एक डंडा लाकर लावण्य पर ताबड़तोड़ प्रहार करने लगे। लावण्य की सहनशक्ति अब टूट चुकी थी। उसने स्मृति के चाचा से डंडे को छीनते हुए उसी डंडे से एक रेखा खींची और बोला यदि आप इससे आगे बड़े तो आपकी खैर नहीं। स्मृति को खींचते हुए रेखा के इस पार लावण्य खड़ा था। अब तक पुलिस भी आ चुकी थी। लावण्य, स्मृति का हाथ पकड़े चला जा रहा था और पुलिस इस स्मृति-रेखा पर घंटो पहरा लगाये खड़ी थी।

✸ केन्द्रीय कार्यालय, केरेबो, बेंगलूरु

पुरस्कार और कुछ पुरस्कार-वितरक-संस्थान

-डॉ. दयानाथलाल

पुरस्कार का मतलब होता है - इनाम, उपहार, भेंट इत्यादि तथा पुरस्कार की श्रेणी में उत्कृष्टता की कसौटी पर खरा उतरने वाले व्यक्ति को, कहा जाता है - पुरस्कार-विजेता।

पुरस्कार की गरिष्ठता पर, प्रकाश डालते हुए 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' नामक महत्वपूर्ण- उपन्यास के रचयिता, अब्दुल बिस्मिल्लाह कहते हैं कि – "मेरी दृष्टि में पुरस्कार के दो पहलू हैं - एक तो पुरस्कार से नई ऊर्जा मिलती है। इसके अतिरिक्त, एक अजीब-तरह की जिम्मेदारी का एहसास भी कराते हैं। आजकल तो तमाम तरह के पुरस्कार हैं और उनको लेकर राजनीति भी है। लेकिन मैंने इसे ऊर्जा और जिम्मेदारी के तौर पर ही लिया है। पुरस्कार से भी बड़ी चीज़ है - पाठकों का स्नेह। मैं पाठकों के स्नेह और प्रतिक्रिया को ही वास्तविक पुरस्कार मानता हूँ।" यहाँ पर, डॉ. नरेन्द्र कोहली की याद आ रही है। इनका मानना है कि-"ऐसा नहीं है कि जिसको पुरस्कार नहीं मिला वह बड़ा लेखक नहीं बना।" लेखक, बड़ा हो या छोटा, लेखक कोई भी आदमी बनता नहीं, लेखक तो पैदा होते हैं और लेखन कार्य सौ मीटर की दौड़ नहीं, इसे तो मात्र छानबीन कहा जा सकता है – गूढ़ तत्वों की। जहाँ तक पुरस्कार वितरक संस्थानों की कुल संख्या बताने का प्रश्न है, तो इसे कोई भी नहीं बता सकता। खैर, अब हम यहाँ यह कहना चाहेंगे कि आज विश्व में केवल एक ही नहीं अनेक पुरस्कार वितरक संस्थान कार्यरत हैं, परन्तु, एक छोटे से लेख में सबकी चर्चा कर पाना असंभव है। अत: यहाँ, हम विश्व के सिर्फ कुछ ही पुरस्कार वितरक संस्थानों की तस्वीर पेश कर रहे हैं –

- नोबेल पुरस्कार (सन् 1901 ई. से अभी तक), स्वीडन।
- ऑस्कर अवार्ड (सन् 1929 ई. से अभी तक), अमेरिका।
- पद्म पुरस्कार (सन् 1954 ई. से अभी तक), नई दिल्ली, भारत।
- साहित्य अकादमी पुरस्कार (सन् 1954 ई. से अभी तक) नई दिल्ली, भारत।
- ज्ञानपीठ पुरस्कार (सन् 1965 ई. से अभी तक) नई दिल्ली, भारत।
- अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् पुरस्कार (सन् 2003 ई. से अभी तक), वाराणसी, भारत।

नोबेल पुरस्कार (सन् 1901 ई. से अभी तक), स्वीडन : यह पुरस्कार बहुत बड़ा पुरस्कार माना जाता है, जिसकी स्थापना का श्रेय विश्व के महान् वैज्ञानिक अल्फ्रेड बर्नार्ड नोबेल को जाता है। इस वैज्ञानिक की याद में, स्वीडन के राजा द्वारा यह पुरस्कार प्रत्येक वर्ष प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार के वितरण की पूर्ण जिम्मेवारी 'नोबेल फाउन्डेशन' के कंधों पर दी गई है और इस पुरस्कार का वितरण सन् 1901 ई. से किया जा रहा है। कुल छ: प्रकार के नोबेल पुरस्कार दिए जाते हैं। यथा-शांति के क्षेत्र में दिया जाने वाला नोबेल-पुरस्कार, साहित्य के क्षेत्र में दिया जाने वाला नोबेल-पुरस्कार, भौतिकी के क्षेत्र में दिया जाने वाला नोबेल-पुरस्कार, रसायन के क्षेत्र में दिया जाने वाला नोबेल-पुरस्कार, चिकित्सा की क्षेत्र में दिया जाने वाला नोबेल-पुरस्कार, अर्थशास्त्र के क्षेत्र में दिया जाने वाला नोबेल-पुरस्कार। यहाँ पर हम बताना चाहेंगे कि 'शांति के क्षेत्र में दिया जाने वाला नोबेल-पुरस्कार', भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को कभी न मिल सका, जबकि इसके लिए 1937 ई. से 1948 ई. तक उन्हें पाँच बार नामांकित किया गया था। खैर, नोबेल-पुरस्कार के तौर पर एक प्रशस्ति पत्र, लगभग एक करोड़ स्वीडिश क्राउन राशि तथा एक स्वर्ण पदक, ये तीनों बहुमूल्य सामान, प्रत्येक नोबेल पुरस्कार विजेता को प्रदान किए जाते हैं। इस पुरस्कार योजना के विचारार्थ कोई भी व्यक्ति अपना नामीनेशन पेपर या नामांकन-पत्र स्वयं प्रस्तुत नहीं कर सकता। नोबेल-पुरस्कार योजना में विचार करने के लिए योग्य-व्यक्तियों के नाम प्रस्तावित किए जाते हैं और योग्य व्यक्तियों के नाम वही लोग प्रस्तावित करते हैं जिन्हें ऐसा करने का अधिकार दिया गया होता है।

ऑस्कर अवार्ड (सन् 1929 ई. से अभी तक), अमेरिका : 16 मई 1929 ई से इस अवार्ड को दिया जा रहा है तथा इस अवार्ड की स्थापना संयुक्त राज्य अमेरिका के 'लॉस एंजिलिस' में, **'इंटरनेशनल-अकेडमी-ऑफ-मोशन-पिक्चर्स-आर्ट्स** एन्ड साइंसेज' द्वारा की गई थी। ऑस्कर अवार्ड फिल्मी-दुनिया के लिए, विश्व का सर्वोच्च-अवार्ड है जिसे पाने के लिए सभी-फिल्मकार, लालायित रहते हैं। भारत, फिल्म-निर्माण के मामले में दुनिया का दूसरा-सबसे बड़ा-देश है, पर ऑस्कर अवार्ड हेतु तरस-तरसकर रह गई हैं- भारतीय-फिल्में।

पद्म पुरस्कार (सन् 1954 ई. से अभी तक), नई दिल्ली, भारत : पद्म पुरस्कार देने के लिए योग्य व्यक्तियों के चयन हेतु प्रत्येक साल राज्य सरकारों व केन्द्र शासित प्रदेशों से योग्य व्यक्तियों के नामों की एक अनुशंसा लिस्ट माँगी जाती है। तत्पश्चात् 'पद्म पुरस्कार कमिटी' द्वारा पद्म पुरस्कार के लिए चुने गए नामों की मंजूरी हेतु एक लिस्ट भारत के राष्ट्रपति को और एक लिस्ट भारत के प्रधानमंत्री को सौंप दी जाती है। पद्म पुरस्कार हेतु चुने गए नामों की घोषणा भारतीय गणतंत्र दिवस के सुनहले मौके पर की जाती है। उसके बाद मार्च अथवा अप्रैल में एक खास या विशेष समारोह में राष्ट्रपति भवन के अन्दर सभी प्रकार के पद्म पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। भारत के राष्ट्रपति द्वारा इस पुरस्कार को तीन खंडों में विभक्त किया गया है, यथा पद्म विभूषण, पद्मभूषण एवं पद्मश्री। पद्म पुरस्कार सन् 1954 ई. से वितरण किया जा रहा है और प्रत्येक वर्ष यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

साहित्य अकादमी पुरस्कार (सन् 1954 ई. से अभी तक) नई दिल्ली, भारत : इस पुरस्कार को भी बहुत आदर की दृष्टि से देखा जाता है और हर साल, भारत की 24 भाषाओं के श्रेष्ठ ग्रन्थों के लेखकों को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया जाता है। इस पुरस्कार को सन् 1954 ई. से दिया जा रहा है। पुरस्कार के रूप में, ताम्रपत्र तथा 50,000 रुपये के साथ-साथ कई प्रकार के बहुमूल्य सामान प्रदान किए जाते हैं। इस पुरस्कार योजना को जीवन्त रखने की पूरी जिम्मेवारी हमारे देश के केन्द्रीय सरकार के कंधों पर है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार (सन् 1965 ई. से अभी तक) नई दिल्ली, भारत : यह पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ न्यास' द्वारा, भारतीय साहित्य के लिए प्रत्येक वर्ष दिया जाने वाला भारतवर्ष का सर्वोच्च पुरस्कार है। पुरस्कार-स्वरूप, 11 लाख रुपये एवं प्रशस्ति पत्र वगैरह प्रदान किए जाते हैं। इस पुरस्कार की खास खूबी यह है कि यह पुरस्कार भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित 22 भाषाओं में से किसी एक भाषा के लेखक को ही दिया जाता है। यह पुरस्कार सन् 1965 ई. से दिया जा रहा है। प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया है – मलयालम लेखक जी. शंकर कुरूप जी को। इस पुरस्कार की भी तारीफ लगभग सभी लोग करते हैं।

अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् पुरस्कार (सन् 2003 ई. से अभी तक), वाराणसी, भारत: इस पुरस्कार को सन् 2003 ई. से लगातार दिया जा रहा है और अभी तक सैकड़ों विद्वानों को यह पुरस्कार मिल चुका है। इस पुरस्कार को प्रत्येक वर्ष वितरण करने का उत्तरदायित्व अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् के हाथों में है। परिषद् की स्थापना 16 मई 2003 को की गई थी। इस परिषद् के राष्ट्रीय-अध्यक्ष हैं- प्रो. जयशंकरलाल त्रिपाठी एवं राष्ट्रीय महासचिव हैं- डॉ. कामेश्वर उपाध्याय। अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् के कार्यालय का पता है- 'देवतायन', 96 जानकी नगर, बजरडीहा, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारतवर्ष। अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् पुरस्कार के कदम भारतीय सीमा को लाँघकर कई अन्य देशों में भी प्रवेश कर चुके हैं और इस पुरस्कार के तौर पर दिए जाते हैं- प्रशस्तिपत्र, पाँच हजार रुपये का चेक, इक्कीस हजार रुपये का चेक एवं सोने के सिक्के इत्यादि।

देहरादून के प्रसिद्ध लेखक लीलाधर जगूड़ी जी लिखते हैं कि "पढ़ने से ही यह समझ में आता है कि दुनिया में कितना अच्छा लिखा गया है। बहुत से लोग केवल अपनी लिखाई को ही सबसे ज्यादा सुंदर समझते हैं। मुझे यह सोच एक बड़ी गलती की तरह लगती है। दूसरों की सुंदर लिखाई से सबको कुछ सीखना चाहिए। हाँ, उसका अनुकरण नहीं करना चाहिए। दूसरों की सुंदर लिखाई से सबको यह सीखना चाहिए कि सुंदर लिखना किसे कहते हैं। अच्छा लेखन जब हमें पढ़ने को मिलता है, तो वह हमें अभिभूत करता है और अपनी कमजोर लिखाई को पहचानने की शक्ति भी हमें देता है।"

जगूड़ी जी ने ये भी पंक्तियाँ लिखी हैं कि- "लेखक को रोज मरना पड़ता है । तमाम तरह की चिन्ताएँ उसके पास होती हैं । एक चिन्ता से कई तरह की चिन्ताएँ जुड़ी होती हैं, ठीक उसी तरह जिस तरह पेड़ एक होता है पर उसकी शाखाएँ, अनगिनत ।"

अंत में, मात्र हमें यही कहना है कि लेखक को पुरस्कार या सम्मान मिले या न मिले उसकी रचना तो हमेशा ही जिंदा रहती है ।

✸ शंकुन्तला भवन, तीसरी गली, राज कॉलोनी, सिविल लाइन्स, जी टी रोड, सासाराम – 821 115 (बिहार)

विवशता ने हमको डाँटा

- आचार्य भगवत दूबे

झूठ कपट फल-फूल रहा
सच्चाई को घाटा
स्वाभिमान को जड़े
हमेशा महँगाई चाँटा।
अपमानों के घूँट पिलाये
भूखी आँतों को
विनत रहे, आशीष मानकर
घूँसों, लातों को
प्रश्न मूक हो गये
विवशता ने हमको डाँटा।
धर्म-परीक्षा लेने आये
युग के दुर्वासा
दानवीरता की बतलाते
हमको परिभाषा
नमक दाल में, और
मिलाया पानी में आटा।
अभिनन्दन करवाये जाते
अत्याचारों के
अट्टहास ने कुचले
दर्दिल स्वर चीत्कारों के
ढोल दंभ के पीटें
सहमकर सिसके सन्नाटा।

हत्थे पर हमीं चढ़े

- आचार्य भगवत दुबे

बिना किये अपराध -
हमारे सिर पर गये मढ़े।
फैलाता आतंक, गाँव में
मुखिया का बेटा,
सुने नहीं फरियाद
दरोगा, पीकर है लेटा,
किसकी हिम्मत है जो -
अर्जी लेकर वहाँ बढ़े।
आश्वासन बँटवाते हैं -
हर बार चुनावों में,
मरहम नहीं लगाते
नेता रिसते घावों में,
लूट-पाट उसने की
पर हत्थे पर हमीं चढ़े।
साहूकार, जमींदारों के
लिखतम झूठे हैं,
गिरवी रखे जहाँ, पुरखों के
कटे अँगूठे हैं,
जीवन बीता कर्ज चुकाते -
आखिर बिना पढ़े।

• 4 शिवार्थ रेसीडेन्सी, जसूजा सिटी, पोस्ट-गढ़ा, जबलपुर – 482 003 (मध्य प्रदेश)

महिला दिवस

- आशा राव

सहकारिता की है प्रतिपूर्ति,
विश्रांतों की यह स्फूर्ति ।
विघ्न, समस्या हरने वाली,
शक्ति सृजन है करने वाली ।
वंचित से आय हो संचित,
कार्यकारिणी क्यों हो लज्जित ?
उद्योगी बन साथ निभाये,
स्वरित कोकिला राग सुनाये ।

हर स्तर पर रचती-बसती,
आगे बढ़ो! नित्य-प्रति कहती ।
प्रगतिवाद में साथ निभाती,
क्षुधा-तृप्त करती, तब खाती ।
करुणामयी दिखी जब वांछित,
रणचण्डी बन दिशा निनादित ।
रूप अनेक एक है आशा,
विश्व प्रगति की है अभिलाषा ।

अर्धांगी बन साथ निभाती,
शिशु-पालन में मां बन जाती ।
पतित लोग नीचता दिखाते,
बलात्कार तक वे आ जाते ।
नहीं सोचते जननी है यह,
सुख-शान्ति की धरिणी है यह ।
कैसे समाज से हवस भगायें,
आओ महिला दिवस मनायें ।

✸ सहायक निदेशक (रा.भा.), केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु

प्रत्याशा

-शुभांक शुक्ल

'मुझे फान्टा बहुत पसंद है। अलग चीज़ बनाई है इंसानो ने, इतना मीठा, गेरुआ रंग का, एकदम हटके है। माँ जो संतरा कभी-कभी खिलाती है, लगभग उसी तरह का है लेकिन संतरे में वह बात कहां! संतरा भी मिलना बहुत कठिन है, ज़्यादातर हमे पत्ते ही खाने पड़ते है। अब आप सोच रहे होंगे कि मैं आपको अपनी पसंदीदा वस्तु के बारे में क्यों बता रहा हूँ। तो, बात दरअसल यह है कि अगर आपका यहाँ आना हुआ तो मेरे लिए मेरे घर, शिवगंगा पर्वत, तुमकुरु पर फान्टा ज़रूर लाइएगा। यहाँ हम लगभग सौ बन्दर एक साथ रहते हैं। अब हम इंसान तो हैं नहीं, इसलिए मेरा कोई व्यक्तिशः नाम नहीं, लेकिन मुझे ढूंढ़ना हो तो मेरे कान से आप मुझे पहचान सकते हैं। माँ कहती है, मेरे कान सारे बंदरो में सबसे लम्बे हैं जो मुझे उनसे अलग और प्यारा बनाते हैं। अरे वाह! माँ आ रही है।

"माँ तुम आ गयी ! बड़ी देरी हुई? आज फान्टा मिला क्या?"

"तुम और तुम्हारी फान्टा की लत! कुछ नहीं मिला आज, पत्ते ही खाने होंगे। यह हरे वाले तोड़ के देती हूँ, इन्हे खा लो, और जाओ सो जाओ। याद है ना कल कौन सा दिन है।"

"हाँ माँ, याद है, मैं तैयार हूँ।"

पता है कल मेरा पहला अवसर है, जब मैं भी खाना ढूंढ़ने जाने वाला हूँ। यहाँ आप जैसे बहुत इंसान आते हैं पर पता नहीं क्यों वे आते हैं, पूरा पर्वत चढ़ते हैं और फिर शाम होने से पहले सब चले जाते हैं। माँ कहती है -पर्वत की चोटी पर एक मंदिर है, जिसे मनुष्य देखने आते हैं। अब बहुत जल्द ही मैं भी मंदिर देखने जाऊंगा और मंदिर वाले बंदर जी से भी मिलूंगा, उनसे कई बातें करनी है। हमारे एक पिता-तुल्य बन्दर हमेशा ऊपर वाले मंदिर के आस-पास ही रहते हैं उन्हें हम मंदिर वाले बंदर जी कहते हैं। अरे हाँ! अब तो बहुत जल्द ही आप लोगों के हाथ से फान्टा भी पीयूंगा। वैसे तो माँ कहती है, हमें बहुत बचकर रहना पड़ता है। वह कहती है कि इंसानों से कम से कम तीन टहनी दूर रहना चाहिए क्योंकि वे लोग बहुत योग्य, शक्तिशाली और बुद्धिमान होते हैं। माँ तो आप लोगो से बहुत डरती है। बेकार में! मुझे तो इंसान बड़े अच्छे लगते हैं। दरअसल मुझे भी हमारे मंदिर वाले बंदरजी की बातें सच लगती है। वस्तुतः यह एक रहस्य की बात है और ये बात मैं आपको बताना चाहता हूँ।

हम बन्दरों में दो मान्यता मानने वाले बन्दर हैं। एक जो मंदिर वाले बंदरजी की बातें सच मानते हैं और दूसरे जो उन्हें झूठा कहते हैं।

मंदिर वाले बंदरजी कहते हैं कि हमारे पूर्वज किसी श्रीराम नाम के व्यक्ति के लिए एक जंग लड़े थे। वे कहते हैं कि श्रीराम एक बहुत ही नेक दिल इंसान थे जो हमसे बड़े प्यार से बातें करते थे। हम बन्दर उनके लिए जान भी देने के लिए तैयार रहते थे और कई ने दी भी। अब सच या झूठ यह तो कोई कभी जान नहीं पायेगा, लेकिन मुझे सब सच सा लगता है। मुझे लगता है कि इंसान और बन्दर मिल-जुल कर रह सकते हैं। मुझे तो राम नाम से ही एक नयी ऊर्जा मिलती है। कभी-कभी सपने आते हैं। ऐसा लगता है जैसे मेरा पुनर्जन्म हुआ हो और पिछले जन्म में मैंने श्रीराम को देखा हो। पर कई बन्दर ऐसे भी हैं जो इन सारी बातों को इंकार करते हैं, उन्हें मंदिर वाले बंदरजी की बातें झूठ लगती है। उन्हें लगता है कि इंसान न होते तो हम ही सारे जानवरों में सर्वश्रेष्ठ होते। उन्हें लगता है कुछ इंसान हम बंदरों पर अत्याचार करते हैं। वे कभी हमको पकड़ कर अपने इशारो पर नचाते हैं तो कभी बस यूं ही अपने मनोरंजन के लिए हमें कैद कर लेते हैं। इन बंदरों की पूरी कोशिश रहती है कि इंसान को डरा कर उनके खाने की वस्तु छीन लें। बुरी बात तो यह है कि इनकी तादाद ज़्यादा हो गयी है।

लेकिन मैं इस सोच को एक दिन बदलूँगा। मैं दिखा दूंगा कि इंसान और बन्दर एक जैसे ही हैं। बल्कि मैं कल ही यह दिखा दूंगा इन बंदरों को, कि इंसान कितने अच्छे होते हैं। वह हमारे लिए अच्छा-अच्छा खाना भी ले आते हैं। कल सुबह मैं सबका नजरिया बदल दूंगा। चलो अब मैं सोता हूँ, कल सवेरे एक नए युग का पहला सवेरा होगा!

"पापा-पापा देखिए ये कितना प्यारा बन्दर है, इसके कान कितने लम्बे और क्यूट हैं! अरे तुम कितने प्यारे हो, यह लो बिस्कुट खाओ, आओ!

"हम्म और चाहिए? ये लो, अरे! अरे! हा हा !!! पापा पापा यह देखिए, यह बन्दर मेरे ऊपर चढ़ गया है, कोई तो मेरी फोटो ले लो।"

"श्रेया! हटो वह तुम्हें काट लेगा! कुछ कीजिये।"

"हट बन्दर हट जा! देख डंडा से मारूंगा! यह ले और भाग यहाँ से।"

"पापा! आपने उसे क्यों मारा? वह तो मुझसे दोस्ती कर रहा था। आपने बेचारे की आंख से खून निकाल दिया। वह बन्दर तो मुझसे सिर्फ दोस्ती कर रहा था!"

"अरे तुम्हें नहीं पता यह बन्दर कब क्या कर दे? कौन जानता है, जानवर होते हैं, इससे दूर रहा करो। अब चलो ऊपर, मंदिर बंद हो जाएगा।"

आज माँ बहुत डाँटी, और बाद में रोई भी। दरअसल मेरी एक आंख अब ख़राब हो गयी है। मैंने बहुत सोचा, मेरी ही गलती है। आप इंसानों को भी शायद हमसे डर लगता है। जैसे मेरी माँ आप इंसानों से डरती है, वैसे ही उस इंसान को अपनी बेटी के लिए शायद भय था। इसलिए उसने मुझे भगा दिया। मुझे नहीं लगता वह मेरी आँख पर वार करना चाहता था। पर अब माँ को कैसे समझाऊं? अब तो मुझे वह इंसानों के पास जाने ही नहीं देगी। पर जब भी मौका मिले तो मुझसे मिलने आइएगा। मैं काटूंगा या नोचूँगा नहीं। मुझे सिर्फ इन बंदरों को दिखाना है कि इंसान और बन्दर दोस्त हो सकते हैं। पहचान तो आप लेंगे ही, बड़े कान वाला प्यारा बन्दर और अब जिसकी एक आंख चोटिल है। इंतज़ार करूँगा, शिवगंगा पर्वत पर। और हाँ! फान्टा लाना न भूल जाना।

- प्रेस्टीज ट्रेड टॉवर,
संपंगी राम नगर, बेंगलूरु, कर्नाटक-560 001

आदमी के हुजूम में इन्सान की खोज

-कामेश्वर पाण्डेय

चीन का प्रसिद्ध दार्शनिक कन्फ्यूशियस एक बार दिन में लालटेन लेकर बाजार में घूम रहा था। इस हैरतअंगेज घटना को देखकर किसी ने पूछा कि ऐसा क्यों? उनका जवाब था – 'मैं आदमी की भीड़ में इन्सान खोज रहा हूँ।' मुझे भी यह सुनकर अटपटा लग रहा है और हमें उम्मीद है कि आपको भी लगता होगा। लेकिन चूंकि वे एक महान् चिंतक एवं दार्शनिक थे, इसलिए उनकी बातों की अनदेखी नहीं की जा सकती है। बाकी कोई भी आम आदमी ऐसा करे तो सभी उसे पागल ही कहेंगे। अगर इसकी जड़ में जाएं तो उनकी बातों में दम था और एक चिंतन की धारा थी। वास्तव में आदमी की भीड़ तो हर जगह होती है, बाजार में, मेले में, विभिन्न प्रकार के साहित्यिक व सांस्कृतिक आयोजनों में लेकिन उस भीड़ में आदमी कोई-कोई ही मिलता है।

इस प्रसंग में आदमी को परिभाषित करना आवश्यक है। हम आदमी किसे कहेंगे। उसे जो हाड़-माँस का साढ़े तीन हाथ पुतला है, खाता है, पीता है, सोता है, सिनेमा देखता है, चिंतन करता है, पढ़ लिखकर अधिकारी या सिपाही बनता है, अपना और अपने परिवार का पालन पोषण करता है, बहुमंजिली इमारतों में रहता है, हवाई जहाज और ऐसी कारों में घूमता है, भीख मांगकर गुजर बसर करता है, चोरी करता है, दूसरे को धोखा देता है, आदमी की संरचना के रूप में दो हाथ, दो पैर, एक मुंह, दो कान, दो आंखें लेकर आदमी के रूप में जन्म लेता है और अपने उसी स्वरूप में मर जाता है या उसे जो आदमी के रूप में जन्म लेकर आदमी का काम करता है। संवेदनशील, दयालु, परोपकारी और त्यागी होता है और पूर्णत: आदमी बन कर इस दुनिया को अलविदा कह देता है। लोग उसके गुणों एवं व्यवहारों को जन्म-जन्म तक यानी युगों तक याद रखते हैं। समय समय पर उसका गुणानुवाद भी किया जाता है और प्रसंगवश उसकी कृतियों के उदाहरण भी दिये जाते हैं। मेरा अभिप्राय आप जरूर समझ गये होंगे कि उस महान चिंतक को किसकी खोज थी। आदमी को केवल बनावट से आदमी नहीं कहा जा सकता है। उसमें मानवीय गुण भी समाहित होने चाहिए। तभी वह आदमी है अन्यथा आदमी और जानवरों में कोई भेद नहीं रह जाएगा। दार्शनिक कन्फ्यूशियस की बातों को आप भी अवश्य समझ गये होंगे। अब बात आती है कि वह दिन में लालटेन लेकर क्यों घूम रहा था। वह आदमी की खोज दिन के उजाले में भी कर सकता था। यह कुछ ज्यादा अटपटा लगता है। लेकिन उसकी इस बात में भी तथ्य है कि कहीं खोजते-खोजते अंधेरा हो जाए या मेरी आँखे धूमिल हो जाएं तो खोज पाना मुश्किल हो सकता है। चूँकि उसका यह अभियान एक दिन का नहीं था। उसे एक दिन में आदमी थोड़े मिल जाता। उसे तो वर्षों निरन्तर इस प्रक्रिया को अनवरत जारी रखना था जब तक कि उसको उसका अभीष्ट न मिल जाएं। आज भी कन्फ्यूशियस सरीखे लोग उसके अभियान को चालू रखे हैं और अनवरत खोज जारी है। यह बात और है कि उस भीड़ में उनको आदमी मिला या नहीं।

कुछ ऐसे लोग होते हैं जिनकी कृतियाँ कम समय में ही उज्जवल हो जाती हैं और समाज जन्म जन्मान्तर उनको याद करता रहता है। इसके लिए कोई समय-सीमा या उम्र-सीमा नहीं है। उदाहरण के लिए आदि शंकराचार्य, स्वामी विवेकानन्द, संत रविदास, कबीर, संत तुकाराम, न्यूटन, मैडम क्यूरी, एडीसन, प्रेमचन्द्र, जयशंकर प्रसाद, निराला, शेक्सपियर, मिल्टन, निदा फ़ाज़ली, गाँधी जी, शास्त्री जी तथा और अनेकों का नाम लिया जा सकता है। जिनकी अमर कृति और अमर विचार आज भी स्तुत्य हैं और अनंत काल तक हमें विपुल उन्मेष प्रदान करते रहेंगे। जन्म लेना और सुख-दुख का भोग करना तथा इस मृत्यु लोक के नियमों के अनुसार मर जाना ही आदमी की पूर्णता नहीं है। आदमी की पूर्णता अपने गुणों का उदीयमान रखना एवं उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किए जाने जैसा कार्य करना है। हमारे सामने कितने धनवान, बलवान और प्रतापी आये और चले गये। उनमें से बहुत कम लोग ही अपना नाम इतिहास में दर्ज करा सके । आम मनुष्य बनकर आये और मर गये लेकिन आदमी नहीं बन पाये।

आदमी अगर देवता बन जाएं, यह मानवता की जीत है, आदमी अगर राक्षस बन जाये यह मानवता की हार है। मानवीय गुणों से संपन्न आदमी ही आदमी कहलाने का हकदार होता है। अब एक बड़ी समस्या और है कि वह कौन सी ऐसी मानक रेखा है जो मानवीय गुणों को रेखांकित करे और आदमी उसे ही प्रमाण का मानक मानकर उसका अनुसरण करे। इसकी बहुत बड़ी व्याख्या हो सकती है, अत:, उस पचड़े में न पड़कर सीधे साधे यह मान लेना है कि हम परोपकारी, संवेदनशील, दयालु, सहन और सहृदय रहें यही मानवीय गुण है और इन्हें ही अपनाकर हम मानव बनने या आदमी बने रहने की सार्थकता साबित कर सकते हैं। कन्फ्यूशियस उस भीड़ में ऐसे ही आदमी की खोज कर रहा था। आप सभी सुधी पाठक इस लेख का अभिप्राय अवश्य समझ गये होंगे, यह मेरा विश्वास है।

✸ पूर्व राजभाषा अधिकारी, पूर्व रेलवे, हावड़ा

श्रेष्ठ सवं सविता सविषन्नः। (ऋ.1/164/26)

सर्व शक्तिमान परमेश्वर ने इस सृष्टि की रचना समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए किया है। इसलिए हे मानव! इन प्राकृतिक संसाधनों का शोषण अथवा दुरुपयोग मत करो। और स्मरण रखो कि जो वस्तु अथवा पदार्थ तुम बना नहीं सकते हो, उसे मिटाने के लिए तुम्हारा कोई नैतिक आधार नहीं है।

आदिम करघे एवं इनकी सार्थकता

-शक्ति नन्दन मिश्र

हथकरघा, भारतीय संस्कृति एवं परंपरा का एक अविभाज्य हिस्सा है और हमें गर्व होना चाहिए कि 95% से अधिक हस्त-निर्मित वस्त्र भारत से ही आते हैं। भारतीय बुनाई का यह कौशल एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होता रहता है। हथकरघों को व्यक्ति अपने कुशल हाथों से ऊर्जा के किसी स्रोत जैसे बिजली, पानी, हवा या सूर्य आदि के बिना, परिचालित करता है। वस्तुतः करघा एक यांत्रिक-व्यवस्था अथवा उपकरण है जिसके माध्यम से सूत या धागे की बुनाई करते हुए इसे वस्त्र के रूप में रूपांतरित किया जाता है। भारत में आदिम करघे पर बुने गए वस्त्र का प्रयोग लगभग 5000 ईशा पूर्व से हो रहा है। आज भारत में लगभग 30,00,000 हथकरघे हैं। इनमें से लगभग 80% देश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं। अनुमान यह भी है कि अब भी भारत में लगभग 3,00,000 आदिम करघे वस्त्र उत्पादन में कार्यरत हैं। भारतीय हथकरघों का वर्गीकरण संरचना एवं बुनाई में प्रयुक्त तकनीक के आधार पर किया जा सकता है।

व्यापक तौर पर हथकरघों को तीन प्रमुख श्रेणियों में बाँटा जा सकता है।

1. आदिम करघा
2. गड्ढे वाला करघा
3. फ्रेम वाला करघा

गड्ढे वाला करघा दो श्रेणियों – निक्षेप शटल करघा एवं उड़न शटल करघा के रूप में उपलब्ध है। निक्षेप शटल करघा अधिकांशतया गढ़वाल, चंदेरी, काँचीवरम तथा बनारस में उपयोग में लाया जाता है। उड़न शटल करघा मऊ, वेंकटगिरी, सेलम तथा नागपुर में मुख्य रूप से प्रयोग किया जाता है।

फ्रेम वाला करघा मुख्य रूप से मालाबार, मथुरा, शांतिपुर तथा सोलापुर में उपलब्ध होता है। फ्रेम वाले करघों में अर्ध-मशीनीकृत करघों को भी शामिल किया जा सकता है जिसे मुख्य तौर पर चितरंजन, मदनपुरा (बनारस) तथा हेट्टर-स्ले आदि स्थानों पर उपयोग में लाया जाता है।

आदिम करघों को चार प्रमुख श्रेणियों – कमर करघा, आदिवासी करघा, कालीन करघा तथा नेवार पट्टी करघा में विभक्त किया जा सकता है। भारत में प्रचलित इन आदिम करघों में सदियों से संरचना और बुनाई शैली अपरिवर्तित रही है। ये करघे भारत के प्रमुख जनजातीय समूहों से संबंधित हैं। इनमें प्रमुख जनजाति समूह है मध्य भारत के नीग्रो-जनजाति समूह एवं पूर्व-उत्तर भारत के मंगोल-जनजाति समूह। भारत में नीग्रो-जनजाति समूह वाले मुख्य रूप से आदिवासी-करघे और नेवार-पट्टी करघे का प्रयोग करते हैं, जबकि मंगोल-जनजाति वाले कमर-करघा (लॉइन-करघा) एवं कालीन करघे का प्रयोग करते हैं।

आदिम करघे ज्यादातर संरचना में सरल होते हैं। भरनी को ताना के साथ बुनाई के लिए हाथ से पिरोया जाता है। करघे में कोई स्थायी स्थिरता नहीं होती। यह वजन में हल्का होता है और इसको एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से विस्थापित किया जा सकता है। अपने कम उत्पादन के बावजूद ये करघे अपनी सरल संरचना और विस्थापक प्रकृति के कारण लोकप्रिय हैं। आकार में छोटा होने के कारण वस्त्र - डिजाइन की एक विस्तृत श्रृंखला को धीमी गति से बुनाई करके उत्पादित किया जा सकता है। वर्तमान में भारत में विभिन्न प्रकार के वस्त्र तंतुओं पर कार्यरत हथकरघों का विवरण तालिका-1 में दिखाया गया है। अनुमानतः इनमें से लगभग 1,88,000 हथकरघे और 5,000 आदिम करघे रेशम के बुनाई में कार्यरत हैं। विभिन्न प्रचलित आदिम करघों का विवरण नीचे दिया गया है।

तालिका 1: भारत में विभिन्न तंतुओ की बुनाई पर आधारित एवं वस्त्र उत्पादन में कार्यरत हथकरघा

#	करघा के प्रकार	संख्या
1	कपास-बुनाई करघा	2751000
2	रेशम-बुनाई करघा	188000
3	ऊनी-बुनाई करघा	71000
4	रेशम बुनाई में आदिम करघे	5000
	कुल	**3015000**

कमर करघा (लॉयन लूम)

आमतौर पर मणिपुर, त्रिपुरा और असम के कुछ हिस्सों में पाया जाने वाला प्राचीन लॉयन करघा एक विशिष्ट आदिम करघा है। यह सस्ता, निर्माण में सरल और संचालित करने में आसान है। इस करघे से सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसमें डिजाइन की असीमित गुंजाइश होती है। गारो जनजातियों के **डकमनदा**, बोरो जनजाति का **दोकना**, त्रिपुरा की लड़कियों के "स्तन'-कपड़े", और मणिपुर के नागाओं और वैष्णव महिलाओं के "**लोंगहैंड**" और "**फ़ेनेक**" बेल्ट उखरगरा, नागा लड़कियों का नृत्य पोशाक, लॉयन करघे पर बुनाई कार्य के पर्याप्त प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। ये पहलू मुख्य रूप से आज तक लॉयन करघे के अस्तित्व के लिए जिम्मेदार हैं।

लूम पर ताना का एक सिरा जमीन से थोड़ी ऊँचाई पर खूंटे पर लटकाए बांस की छड़ से बंधा होता है। दूसरे छोर को एक चमड़े की बेल्ट की मदद से इस स्थिति में रखा जाता है कि वह बुनकर के कमर के पास से गुजरती हो। चूँकि करघे को खड़ा रखने के लिए कोई निश्चित पोस्ट या फ्रेम नहीं है, अतः वस्त्र बुनने वाले को अपने बदन को आगे या पीछे की ओर झुककर, ताना के तनाव को नियंत्रित करना होता है।

कमर-करघा (लॉयन लूम) के प्रमुख भागों के नाम इस प्रकार हैं : (1) रोलर-कुल संख्या तीन, (2) बाँस का रोलर, (3) बेल्ट (कपड़ा/चमड़ा), (4) लकड़ी के शटल (साइड व्यू), (5) पोस्ट (खूंटा), (6) लीज रॉड एवं (7) हिल्ड।

लॉयन लूम से नुकसान यह है कि इस पर केवल संकीर्ण चौड़ाई के कपड़े को बुना जा सकता है और उत्पादन कम है। इसका उत्पादन प्रति-दिन लगभग एक मीटर मात्र है। चूंकि इस पर सामान्य ताना की लंबाई लगभग 6 मीटर होती है, इसलिए इसमें ताने को अक्सर दोहराया जाना आवश्यक होता है। इसके अलावा, उन बुनकरों पर भी बहुत दबाव पड़ता है जिनके कमर में लूम का एक सिरा बंधा होता है।

आदिवासी करघा (ट्राइबल लूम) निर्माण और उपयोग दोनों में एक विशिष्ट आदिम करघा है। यह ज्यादातर बिहार, झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के आदिवासी इलाकों में पाया जाता है। इन करघों पर आश्चर्यचकित करने वाली अच्छी से अच्छी डिज़ाइन की बुनाई की जाती है। आकर्षक रंगीन पट्टी के साथ भारी बनावट वाले कपड़े इन मामूली करघों पर बुने जाते हैं। उत्पादन की कुल मात्रा कम है और इन करघों की संख्या भी अब बहुत कम है। ये अब अस्तित्व से बाहर होते जा रहे हैं। ट्राइबल लूम में एक कच्चा फ्रेम होता है, जो ऊबड़-खाबड़ जलावन वाली काठ की लकड़ी से निर्मित होता है और जमीन पर स्थिर होता है। इसकी ऊँचाई कम होती है। चौड़ाई में भी यह संकरा होता है। यह घरेलू तौर पर उपलब्ध छोटी-छोटी लकड़ियों और बाँस के टुकड़ों से बनाया जाता है। बुनाई के समय शेड को बनाने के लिए हाथ से हेर-फेर किया जाता है। ताने बनाने के लिए धागे को वास्तव में हाथ के माध्यम से पिरोया जाता है। बनी की पिटाई एक पतली गोलनुमा धार वाले तख़्त द्वारा की जाती है। उत्पादन बहुत कम है और बुने हुए कपड़े संकीर्ण चौड़ाई के होते हैं। इनके उत्पाद, प्रकृति में मोटे होते हैं और बहुत घने बुने हुए लगते हैं। वस्त्र भारी, मजबूत और असामान्य रूप से दिखने में मोटा लगता है।

कालीन करघा (खड़ा कारपेट लूम) कालीन के लिए इस्तेमाल होने वाले करघे को भारी लकड़ी/बाँस के खंभे से बने फ्रेम के रूप में तैयार एवं खड़ा किया जाता है। इसके पास न तो नियमित रूप से प्रयुक्त हिल्ड होता है, और न ही कोई पारंपरिक रीड (कंघा) ही प्रयोग में लाया जाता है। करघा की चौड़ाई 90 सेंटीमीटर से 450 सेंटीमीटर तक होती है। बनी को हाथ के माध्यम से ताने के प्रत्येक खंड एवं अनुभाग द्वारा पिरोया जाता है और तत्पश्चात् उसको **पंजे** नामक दाँतदार लोहे की कंघी के माध्यम से कालीन की बुनाई के लिए पीटा जाता है। यह प्रक्रिया धीमी है, लेकिन उत्पाद बनावट में दृढ़ और मजबूत होते हैं।

अक्सर ठोस रंग के साथ जटिल डिजाइन के कालीन इस करघे पर बुने जाते हैं। उभार वाले बनी के फंदो को बाँधने के बाद, कंघीनुमा लोहे के **पंजे** के माध्यम से बुनाई को पूरा करने के लिए पीटा जाता है। हाथ से बने धागे के गुच्छों को **हिल्ड** की तरह प्रयोग कर ताने के धागे को आगे-पीछे किया जाता है। ताने को आमतौर पर छह प्लाई ट्विस्टेड यार्न से बनाया जाता है और बाने के लिए 1-2 नम्बर के स्पॅन या नॉइल धागों के उत्पादों की आवश्यकता के आधार पर 2-6 प्लाई में लाकर बनी तथा उभार बाले फंदो के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

नेवार-पट्टी करघा यह एक छोटी चौड़ाई का करघा है। मोटे धागे का लूप बनाकर कामकाजी हील्ड को बनाया जाता है। कपड़े लपेटने के लिए और ताने के धागों को लपेटने के लिए प्रत्येक छोर पर एक-एक रोलर लगा होता है। बनी का धागा हाथ से पिरोया जाता है। इसके बाद बनी को पीटने के लिए गोल किनारे का सपाट लकड़ी का तख्ता प्रयोग में लाया जाता है। इसके सिवाय कोई अन्य प्रमुख भाग इस नेवार-पट्टी करघा के लिए आवश्यक नहीं है। आमतौर पर 2/10 नंबर के धागे का उपयोग, ताना और बाना दोनों के लिए किया जाता है। नेवार की बुनाई सादी-बुनाई या ट्वील-बुनाई होती है। विभिन्न नेवार की चौड़ाई 1-10 से.मी. के बीच होती है। एक सामान्य नेवार की चौड़ाई 10 सेमी. होती है और इसमें 272 ताने के छोर होते हैं। इसमें प्रति 2.5 सेमी. में लगभग 19 बनी के धागे होते हैं और इसका वजन लगभग 43 ग्राम प्रति मीटर होता है। इसकी बुनाई में 2/10 नम्बर के धागे का प्रयोग होता है।

विकास के क्रम में डिजाइन की उपयुक्तता के आधार पर करघों का भी विकास होता रहा। आजकल विकसित करघों पर अनेक मनमोहक डिजाइनें तैयार की जाने लगी हैं। भारतीय हथकरघा पर बुनाई के संदर्भ

में यदि हम भारत के राज्यों पर एक नजर डालें तो ओडिशा का ईकत एवं संबलपुरी, आंध्र प्रदेश की कलमकारी, गुजरात की बंधनी (टाई एवं डाई) तथा पाटन पटोला, उत्तर प्रदेश का पटोला एवं चिकनकारी, मध्य प्रदेश की जरी एवं चंदेरी, तमिलनाडु का काँचीवरम आदि काफी प्रसिद्ध है। भारत के सभी प्रांतों में हथकरघा-बुनाई की अपनी विशिष्ट शैली होती है। इनकी विशिष्टता विभिन्न डिजाइनों में भिन्न-भिन्न होती है। अरुणाचल प्रदेश की आपातानी, असम की मेखला चादर, बिहार की भागलपुरी, गोवा की पुनबी, हरियाणा का पांजा, हिमाचल प्रदेश का कुल्लू शाल, झारखंड का कुचाई, कर्नाटक का मैसूर सिल्क, केरल का कसऊ, महाराष्ट्र की पैथानी, मणिपुर का फानेक, मिज़ोरम का पुआंश, पंजाब का फुलकारी, राजस्थान की शीशा कढ़ाई, सिक्किम का लेप्चा, तेलंगाना का पोंचमपल्ली इक्कत, त्रिपुरा का पचरा, उत्तराखंड की पंचाचूली आदि बुनाई अपने-आप में अनूठी है।

जो लोग वस्त्र की बुनाई से बिल्कुल अपरिचित हैं और इसे सीखना चाहते हैं, उनके लिए आदिम करघा एक प्रमुख साधन है। प्रारम्भिक बुनाई के प्रशिक्षण हेतु आदिम करघों का उपयोग यथोचित है। छोटे स्तर पर नए किस्म के वस्त्र की सैंपल तैयार करने में भी आदिम करघों का प्रमुख योगदान है। इसके अतिरिक्त पारंपरिक पोशाक के निर्माण मे भी इसका बड़ा योगदान है। हाथ से बुने हुए रेशमी कालीन के लिए तो आदिम करघा आज भी सर्वोपरि है।

- वैज्ञानिक-डी, केंद्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु – 560 068

शिक्षिका के उद्गार

- उमा पी.के.

अचानक मुस्कुराहट भरे
तुम्हारे चेहरे को सामने देख
मैं बहुत रोमांचित हो उठी।
तुम्हारे ताजे फूलों के गुलदस्ते ने,
मुझे कर लिया मोहित।
तुम्हारी हार्दिक शुभकामनाओं से,
मेरी अब कोई इच्छा बाकी नहीं रही।
तुम्हारे प्रेम की झपकी से,
मैं हुई आनंद-विभोर।

तुम्हारे हाथ मिलाने से,
मुझमें नई ऊर्जा जागी।
तुम्हारे साथ सुबह बीते
अमूल्य क्षणों में,
मेरी आभार की गगरी छलक गयी।
तुम्हारे चन्द मिनटों की उपस्थिति से,
पूरा दिन जोश से भर गया।
तुमने जो खुशियाँ बिखेरीं,
उन्हें मैं समेट नहीं पाई।
तुम्हारी भेंट की नहीं कोई कीमत,
प्रेम बोझ में डूब गई हूँ।
मुझे भाव-विभोर कर,
तुमने अहसास दिलाया कि
तुम बहुत ऊँचे, अडिग खड़े हो।

- आशुलिपिक (ग्रेड-I), केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु

स्त्री विमर्श एवं स्त्री साहित्य स्वतंत्र लेखन

-महेश साव

बींसवीं शताब्दी के प्रारंभ से ही पददलित स्त्रियों को समाज में उचित स्थान दिलाने हेतु स्त्री आंदोलन का सूत्रपात हुआ। सर्वप्रथम चेन्नई में भारतीय महिला संघ का गठन किया गया। इसके पश्चात् विभिन्न महिला संगठनों के प्रयत्नों से देश में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की स्थापना की गई एवं सन् 1927 ई. में इसका प्रथम अधिवेशन संपन्न हुआ। भारत का संविधान महिलाओं एवं पुरुषों में लिंग भेदभाव को मिटाने की मंशा रखता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 18 दिसंबर, 1970 को रनरल असेंबली में "महिलाओं के खिलाफ़ सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर सम्मेलन" एक बिल पारित किया गया, जिसे महिलाओं का अधिकार विधेयक कहा जाता है, जिसे 3 दिसंबर, 1981 में लागू किया गया तथा संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा इसकी स्वीकृति भी प्रदान की गई। महिलाओं के मूलभूत अधिकारों के संरक्षण तथा इसे कर्तव्य के रूप में पालन किया जाना अनिवार्य बन गया और इसी परिप्रेक्ष्य में 8 मार्च, 1975 से "**विश्व महिला दिवस**" मनाए जाने की घोषणा भी की गई।

डॉ.जगदीश्वर प्रसाद चतुर्वेदी [प्राचार्य कोलकाता विश्वविद्यालय] का मानना है कि "**भारतीय समाज पुरुषवादी समाज है एवं पुरुष प्रधान समाज महिलाओं को अपनी अनुगामिनी समझता है, न कि सहयोगिनी, इसलिए स्त्री को अशिक्षित रखने में ही उनके स्वार्थ की पूर्ति होती है**।"

मैथलीशरण गुप्त जी की साकेत की दो पंक्तियां स्त्री चरित्र को रेखंकित करने में पूर्ण सक्षम है- " **अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आंखों में पानी**।"

वास्तव में स्त्री सशक्तिकरण तब होगा जब लड़कियों एवं स्त्रियों के लिए समान शिक्षा सुनिश्चित की जाएगी। स्त्रियों के प्रति विषमता हटाने, शिक्षा में लिंग भेद, संवेदनशील शिक्षा पद्धति में नामांकन की बढ़ोत्तरी एवं शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के संबंध में विशेष कदम उठाए जाने चाहिए, जिससे स्त्रियों की जीवन पर्यंत शिक्षा की सुविधा मुहैया हो सके। व्यवसाय, यांत्रिक ज्ञान आदि के क्षेत्र में वृद्धि हो सके। माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक शिक्षा में लिंग भेद असमानता को दूर करने वाले केंद्र बना कर वर्तमान नीतियों में निर्धारित लक्ष्यों को निश्चित समयावधि में प्राप्त किया जाना चाहिए। कमजोर वर्ग विशेष रूप से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, अल्प संख्यक वर्ग की स्त्रियों को शिक्षा पद्धति के सभी स्तरों पर लिंग भेद रहित संवेदनशील पाठ्यक्रम से जोड़ा जाना चाहिए, जिससे रूढ़िगत लिंग भेदभाव को दूर किया जा सके।

एक ही तरह के काम के लिए स्त्री एवं पुरुष को एक जैसा वेतन मिलना चाहिए। जिस काम पर पुरुषों की भर्ती की जाए, उस काम पर स्त्रियों की भर्ती होने का भी अधिकार समान रूप से है, अगर वे इस काम में योग्य और काबिल हैं। स्त्रियों को गर्भावस्था व प्रसूति से संबंधित कुछ खास अधिकार दिए गए हैं। यह प्रसूति सुविधा अधिनियम 1961 कहलाता है।

न्यायालय की नजर में यौन उत्पीड़न में जो चीजें शामिल हैं, उनमें जान-बूझकर स्त्री को छूना, इशारा करना, अश्लील कटाक्ष करना, अश्लील दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग करना आदि है। परंतु आज की नारी अब केवल अपनी समस्याओं का रोना नहीं रोती वरन् अपनी समस्याओं का स्वत: हल ढूंढ़कर समाज को प्रेरित करती हुई तमाम संस्थाओं से जुड़कर समाज सेवा का कार्य भी कर रही हैं। भूमंडलीकरण ने स्त्रियों की समानता एवं लिंग भेदभाव समाप्ति के लक्ष्यों को प्राप्त करने की नई चुनौतियों की ओर ध्यान खींचा है।

स्त्री साहित्य स्वतंत्र लेखन की जहां तक बात है तो डॉ.जगदीश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, सेवानिवृत्त [प्राचार्य कोलकाता विश्वविद्यालय] का मानना है कि "**स्त्रियों का अपना कोई अलग सहित्य नहीं हो सकता है, वे पुरुषों की ही साहित्य रचना का अनुकरण कर साहित्य रचना कर रहीं हैं। अगर स्त्रियां पुरुषों से दूर किसी दूसरे देश में रह रही होतीं और उन्होंनें कभी पुरुषों का साहित्य नहीं पढ़ा होता, तो उनका अपना एक अलग साहित्य होता परंतु वस्तुस्थिती यह है कि उन्हें अपना साहित्य अलग से नहीं रचना पड़ा। क्योंकि उन्होंने पाया कि एक अच्छा खासा साहित्य पहले से ही रचा हुआ है।**" बिलकुल उसी तरह, जैसे फ्रांस और इटली में पुरातन साहित्य के अनुकरण के रूप में किया गया है जिसका मौलिक विकास उतना नहीं हो पाया। सभी लेखिकाएं किसी न किसी पुरुष लेखक की शिष्य रह चुकी होती है।

स्त्रियों का साहित्य अपने सामूहिक चरित्र में पुरुषों के साहित्य से अलग होना जरुरी है, यद्यपि पहले हो चुके साहित्य सृजन बहुत ज्यादा दबाव में हैं, जो कई पीढ़ियों से अभ्यास में हैं। ऐसी साहित्यिक रचना जो स्वाभाविक प्रवृत्ति में किसी अंतर पर खड़ीं हैं और यदि इसे पुरुष लेखकों के प्रभाव से मुक्त किया जाना है तो इसके लिए काफी वक्त चाहिए, तभी यह स्वीकृत खाचों को छोड़ कर अपने स्वाभाविक प्रवृत्तियों का वजूद सिद्ध कर पाने में समर्थ होंगी और तब जाकर ऐसी लेखनी से लेखिका की व्यक्तिगत प्रवृत्तियां, उसके सृजन को एक अलग व्यक्तित्व प्रदान कर सकेंगी।

स्त्री साहित्य लेखन में अनेक लेखिकाएं है जो अपना स्वतंत्र साहित्य बनाने में एक पुरजोर आंदोलन कर रही हैं, जिनमें महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, मंजुल भगत, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, सरिता वशिष्ठ, अमृता प्रीतम, प्रभा चेतान, नासिरा शर्मा, शोभा डे, सुधा मूर्ति आदि का योगदान सराहनीय है। स्त्री विमर्श और स्त्री साहित्य का स्वतंत्र लेखन एक ज्वलंत समस्या है। स्त्री का अपना साहित्य कैसा हो, वह पुरुषवादी साहित्य से किस प्रकार भिन्न और अपना अलग स्थान प्राप्त करे, इसके लिए लेखिकाएं अपनी लेखनी बहुत तेजी से तैयार कर रही हैं। मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती एवं अमृता प्रीतम की कहानियां : "**यही सच है**", **"सिक्का बदल गया" तथा "पिंजर"** आदि में स्त्री की समस्या को दिखाने का सफल प्रयास किया गया है।

- कनिष्ठ अनुवादक (हिन्दी), क्षेत्रीय कार्यालय, केरेबो, नई दिल्ली – 110 066

कैसे हुई पृथ्वी की उत्पत्ति?

-डॉ. विजय कुमार उपाध्याय

पृथ्वी की उत्पत्ति के संबंध में समय-समय पर संसार के अनेक वैज्ञानिकों ने अपने मत व्यक्त किये हैं। सन् 1755 में जर्मनी के प्रसिद्ध वैज्ञानिक इमैनुएल कांट की एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी जिसका नाम था "थ्योरी ऑफ हैवेन्स" जिसमें पृथ्वी की उत्पत्ति के संबंध में उसने एक परिकल्पना प्रस्तुत की थी। इस परिकल्पना के अनुसार प्रारम्भ में ब्रह्माण्ड के एक भाग में गैस तथा धूल के कणों में निर्मित विशाल आकार का एक बादल मौजूद था। शुरू-शुरू में यह बादल बहुत अधिक ठंडा था तथा कुम्हार के चाक की भाँति अनवरत घूम रहा था। इमैनुअल कांट द्वारा प्रतिपादित इस परिकल्पना से आधुनिक काल के वैज्ञानिक भी सहमत हैं। आधुनिक शक्तिशाली दूरबीनों द्वारा हाल में किये गये कुछ अध्ययनों से पता चला है कि ब्रह्माण्ड में गैस तथा धूल से निर्मित एवं चक्के की भाँति घूमते हुए विशाल बादल सचमुच ही मौजूद हैं।

फ्राँसीसी गणितज्ञ पियरे साइमन लैप्लेस ने सन् 1796 में कांट की परिकल्पना में थोड़ा सा संशोधन किया। उसने बताया कि ब्रह्माण्ड में स्थित गैस तथा धूल कणों से निर्मित बादल ब्रह्माण्डीय बल (कौस्मिक फोर्स) के कारण धीरे-धीरे चक्के की भाँति घूमने लगे। साथ-ही-साथ यह बादल अपने कणों के आपसी गुरुत्वाकर्षण बल के कारण धीरे-धीरे संकुचित होने लगा। इस संकुचन के दौरान समय-समय पर इस विशाल बादल के अंश छिटक कर बाहर निकलने लगे। ये छिटके हुए अंश ग्रहों के रूप में परिवर्तित होकर उस विशाल बादल के चक्कर लगाने लगे। इन्हीं ग्रहों में से एक है - हमारी पृथ्वी। विभिन्न ग्रहों के निर्माण के बाद विशाल बादल का जो केन्द्रीय भाग बच गया वही सूर्य बन गया। परन्तु लैप्लेस की यह परिकल्पना आधुनिक खगोल विज्ञान की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। आधुनिक खगोल विज्ञान के अनुसार गैस तथा धूल का घूमता तथा संकुचित होता हुआ बादल धीरे-धीरे अधिक तेजी से घूमना प्रारम्भ करता जायेगा। इस प्रकार आज घूमने की गति सूर्य की वर्तमान गति से काफी अधिक होनी चाहिए थी।

लैपलेस की परिकल्पना में कुछ त्रुटियों के पता चलने के बाद कई अन्य वैज्ञानिकों ने पृथ्वी तथा सौर परिवार के अन्य ग्रहों की उत्पत्ति संबंधी अपने-अपने विचार व्यक्त किये। सन् 1900 में टीसी चैम्बरलिन तथा एफ आर मोल्टन ने बताया कि सूर्य के इर्द-गिर्द घूमने वाले छोटे-छोटे टुकड़ों के आपस में सट कर मिलने से पृथ्वी एवं अन्य ग्रह बने। परन्तु यह प्रश्न उठा कि ये छोटे-छोटे टुकड़े आये कहाँ से ? यदि ये टुकड़े सौर परिवार के बाहर से आये तो उन सबों की सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने की दिशा एक नहीं हो सकती। चैम्बरलिन तथा मोल्टन ने इस प्रश्न के उत्तर में बताया कि एक दूसरा तारा सूर्य के बगल से गुजरा जिसके गुरूत्व बल के कारण सूर्य का कुछ अंश टूट कर अलग हो गया, जो कुछ ही समय के बाद ठंडा होकर छोटे-छोटे टुकड़ों में जम गया। ये टुकड़े सूर्य के चारों ओर उसी दिशा में चक्कर काटने लगे जिस दिशा में सूर्य के बगल से दूसरा तारा गुजरा था। छोटे-छोटे टुकड़े धीरे-धीरे जब समूहों में जमा होने लगे, समूह में जुटे इस प्रकार के दो या तीन टुकड़े जब बहुत निकट आते तो उनका सामूहिक गुरूत्व बल अन्य टुकड़ों को आकर्षित कर लेता। इस प्रकार टुकड़ों के क्रमिक योग से ग्रहों का निर्माण हुआ। कुछ ग्रहों का आकार इस कारण बड़ा हुआ कि उन्होंने बहुत बड़े क्षेत्र से पदार्थों को अपने में समेट लिया। चूँकि सूर्य से 35-40 खगोलीय इकाइयों (एक खगोलीय इकाई = सूर्य से पृथ्वी की दूरी) से अधिक दूरी पर टुकड़े नहीं के बराबर थे, अत: इस दूरी के बाद ग्रह नहीं बने। परन्तु आधुनिक वैज्ञानिकों के मतानुसार यदि सूर्य जैसे गर्म पिण्ड से किसी अन्य तारे के आकर्षण बल के कारण कुछ पदार्थ खिंच कर अलग हो जाता है तो वह अन्तर्तारकीय अन्तरिक्ष में बिखर जाएगा, न कि घनीभूत होकर ग्रहों के रूप में परिवर्तित होगा। यदि मान भी लिया जाए कि सूर्य से पृथक होने वाला पदार्थ किसी अज्ञात विधि द्वारा संकुचित एवं घनीभूत होकर ग्रहों में परिवर्तित होता भी है तो सूर्य के चारों ओर इनके परिक्रमा पथ बहुत ही अधिक अनियमित एवं अव्यवस्थित होंगे न कि सौर परिवार के सदस्यों के परिक्रमा पथों के समान पूर्णत: नियंत्रित एवं व्यवस्थित।

पृथ्वी की उत्पत्ति संबंधी एक अन्य सिद्धान्त में बताया गया है कि प्रारम्भ में सूर्य का एक सहचर तारा था। यह सहचर तारा सूर्य से कुछ दूरी पर स्थित था। दूर से आता हुआ एक अन्य तारा सूर्य के सहचर तारे के साथ टकरा गया जिसके कारण सहचर तारा चूर-चूर हो गया तथा इसका मलवा कई ग्रहों के रूप में परिवर्तित होकर सूर्य का चक्कर लगाने लगा। परन्तु इस परिकल्पना में भी एक त्रुटि मालूम पड़ती है। ब्रह्माण्ड में तारे एक दूसरे से इतने दूर-दूर स्थित हैं कि उपर्युक्त प्रकार के टकराव की संभावना नगण्य है। यदि थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाए कि उपर्युक्त प्रकार का टकराव हुआ होगा तो फिर यह असंभव मालूम पड़ता है कि सहचर तारे के टूटने से उत्पन्न अति तप्त एवं उड़नशील पदार्थ विभिन्न ग्रहों के रूप में परिवर्तित हो जायेगा। इस परिकल्पना में इस बात की व्याख्या नहीं हो पाती कि विभिन्न ग्रहों के उपग्रहों का निर्माण कैसे हुआ।

रूसी वैज्ञानिक ऑटो स्मिट ने सन् 1944 में उल्का संबंधी परिकल्पना प्रस्तुत की। सन् 1944 में ही सी एफ वॉन विजसैकर तथा सन् 1951 में जी पी कूपर ने भी स्मिट सेमिलती-जुलती ग्रहाणु परिकल्पना प्रस्तुत की। उल्का या ग्रहाणु परिकल्पना (प्लैनेटेसिमल हाइपोथेसिस) के अनुसार यह माना गया कि सूर्य एवं ग्रहों का निर्माण विभिन्न स्रोतों से प्राप्त पदार्थों से हुआ। सूर्य के विकास के क्रम में एक समय ऐसा आया कि इसके गुरूत्व क्षेत्र में उपस्थित निहारिका से गैस एवं धूल के ठंडे बादल के कुछ ग्रहाणु आकर्षित होकर चले गये जो सूर्य के शक्तिशाली गुरूत्व क्षेत्र में पुनर्गठित होने लगे। इस क्रम में बहुत से कण तो सूर्य में समाविष्ट हो गये तथा कुछ कण आपस में जुड़ कर बड़े टुकड़ों का निर्माण करने

लगे। इन बड़े टुकड़ों के गुरूत्व क्षेत्र में छोटे कण खिंच कर आने लगे। इस प्रकार क्रमश: ग्रहों तथा उनके उपग्रहों का निर्माण हुआ। उल्का एवं ग्रहाणु परिकल्पना ग्रहों के आकार, कक्षा तथा घूर्णन संबंधी सभी गुणों की संतोषप्रद व्याख्या करने में सक्षम है। इतना ही नहीं, इस परिकल्पना द्वारा ग्रहों एवं उपग्रहों के वास्तिविक स्थान, द्रव्यमान, घनत्व एवं उनके सूर्य से संबंधित कोणीय आवेग की भी व्याख्या हो सकती है। परन्तु इस परिकल्पना द्वारा ग्रहों के अन्दर की समकेन्द्रीय परतों के निर्माण की व्याख्या नहीं हो पाती।

आधुनिक वैज्ञानिक एक बार पुन: कांट तथा लैप्लेस द्वारा प्रस्तुत परिकल्पना का समर्थन करने लगे हैं। परन्तु इस परिकल्पना का समर्थन उन्होंने कुछ संशोधनों के साथ किया है। इस परिकल्पना को निहारिका परिकल्पना (नेबुलर हाइपोथेसिस) अथवा आदि ग्रह (प्रोटो प्लैनेट) परिकल्पना कहा जाता है। आदि ग्रह परिकल्पना में यह मान लिया गया है कि जहाँ आज हमारा सौर परिवार स्थित है, वहाँ पहले एक विशाल बादल फैला हुआ था। यह विशाल बादल ब्रह्माण्ड मिश्रण से निर्मित था। इस ब्रह्माण्ड मिश्रण के एक हजार अणुओं में से 900 अणु हाइड्रोजन के, 97 हीलियम के तथा शेष 3 अणुओं में कुछ भारी तत्व मौजूद थे। इन भारी तत्वों में शामिल थे कार्बन, ऑक्सीजन, लोहा तथा कुछ अन्य तत्व। ब्रह्माण्ड मिश्रण से निर्मित यह बादल इतना विरल था कि उसका घनत्व सिर्फ 10^{-22} ग्राम प्रति घन सेंटीमीटर था। धीरे-धीरे यह विशाल बादल घूमने लगा। इस घूर्णन का विकास सामान्य ढंग से नहीं हुआ। हाल में खगोलविदों द्वारा रेडियो दूरबीनों की सहायता से उपुर्यक्त किस्म के बादलों के बारे में किये गये अध्ययनों से पता चला है कि ऐसे बादलों में सर्वप्रथम विक्षोभ (टर्बुलेंस) पैदा हुआ होगा। इस विक्षोभ के कारण बादलों में सर्वप्रथम छोटी-छोटी भंवरें पैदा हुई होंगी। ये भंवरें एक दूसरे से मिलकर धीरे-धीरे अधिक से अधिक बड़ी होती गयी होंगी। अन्त में सम्पूर्ण बादल पिण्ड घूमने लगा होगा। इस बादल के केन्द्र में एक काफी बड़ी भंवर बन गयी होगी जिसने बादल के अन्य भागों की अपेक्षा तेजी से संकुचित होकर अन्त में आदि सूर्य का रूप लिया होगा।

उपर्युक्त आदि सूर्य (प्रोटोसन) के चारों ओर स्थित बादल की ठंढी गहराइयों में कुछ तत्व आपस में संयुक्त होकर चन्द यौगिकों (जैसे जल, अमोनिया इत्यादि) का निर्माण किये होंगे। इसी प्रकार धीरे-धीरे ठोस रवों (जैसे लौह सिलिकेट तथा पाषाणी सिलिकेट) का निर्माण प्रारम्भ हुआ होगा। फिर धीरे-धीरे घूमते हुए इस बादल में कार्यशील गुरुत्वाकर्षण तथा केन्द्रापसारी बलों के कारण यह बादल एक विशाल तस्तरी की आकृति में परिवर्तित हो गया। इस विशाल घूमती तश्तरी में स्थानीय भंवरों का निर्माण हुआ होगा। इनमें से कुछ भंवरें आपस में टकराकर टूट गयी होंगी। ऐसी स्थिति में प्रत्येक भंवर अपने अस्तित्व हेतु कठिन संघर्ष कर रही थी। ऐसे विनाशकारी बलों की उपस्थिति में किसी भी भंवर को अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए यह आवश्यक था कि वह अपने दायरे में पदार्थों की एक निश्चित अल्पतम मात्रा को समेट ले जिससे कि उसका अपना एक गुरुत्वाकर्षण केन्द्र बन जाए। इस प्रकार अस्तित्व के लिए संघर्ष के दौरान कुछ भंवरें अपना पदार्थ खोती चली गयीं जबकि अन्य कुछ भंवरें अपने दायरे में पदार्थ समेटती चली गयीं। अन्त में आदि सूर्य के चारों ओर कुछ भंवरें घूमती हुई छोटी-छोटी तश्तरियों में बदल गयीं। ये तश्तरियाँ विभिन्न ग्रहों की आदि रूप थीं। ये आदि ग्रह इतने बड़े थे जो अपने गुरुत्व बल के कारण अपने आप में बंधे रह सकते थे। इस प्रकार के आदि ग्रहों में से प्रत्येक ने सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने के क्रम में मूल बादल के छोटे-छोटे टुकड़ों को अपने गुरुत्वाकर्षण बल के कारण समेटना शुरू किया और आदि ग्रहों का आकार धीरे-धीरे बढ़ता गया।

ग्रहों का निर्माण करने वाली बड़ी-बड़ी भंवरों के बीच-बीच में छोटी-छोटी भंवरें बन गयी होंगी। ये छोटी भंवरें ही अन्त में उपग्रहों के रूप में बदल गयी होंगी। जितनी बड़ी भंवर रही होगी उसके चारों ओर छोटी भंवरों की संख्या उतनी ही अधिक रही होगी। यही कारण है कि बड़े ग्रह जैसे वृहस्पति के 16 तथा शनि के 22 उपग्रह हैं, जबकि छोटे ग्रहों के या तो कम संख्या में उपग्रह पाये जाते हैं या फिर उनके कोई उपग्रह है ही नहीं।

आदि सूर्य के बाद निर्मित विभिन्न आदि ग्रहों में एक थी "हमारी पृथ्वी" जो बर्फीले कणों तथा ठोस टुकड़ों के घूमते हुए बादल के रूप में उत्पन्न हुई थी। धीरे-धीरे इस बादल के कण एक बड़े ठोस गोले के रूप में संगठित हो गये। संगठित होने में जल तथा बर्फ कणों के चिपकावी आकर्षण (कोहेसिन अट्रैक्शन) बल ने योगदान दिया। सूर्य के चारों ओर घूमने के दौरान पृथ्वी अपने आकर्षण बल से सूर्य के चारों ओर बिखरे धूल कणों को समेटती गयी तथा इस प्रकार अपना आकार लगातार बढ़ाती गयी ।

✸ राजेन्द्र नगर हाउसिंग कॉलोनी, (के.के. सिंह कॉलोनी) पो. जमगोड़िया,वाया- जोधाडीह (चास), जिला–बोकारो (झारखण्ड) – 827013

श्रद्धावान लभते ज्ञानम। (गीता 4/39)
श्रद्धावान व्यक्ति ही ज्ञान को प्राप्त करता है।

हिन्दी पखवाड़ा

केन्द्रीय रेशम बोर्ड मुख्यालय, राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन एवं केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु में दिनांक 03.09.2018 से 27.09.2018 तक संयुक्त रूप से हिन्दी पखवाड़ा और 27.09.2018 को हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे सुलेख, आशुभाषण, टिप्पण आलेखन, श्रुतलेख, राजभाषा ज्ञान, विविधा, हिन्दी वाचन और वर्ग पहेली प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 27.09.2018 को आयोजित पुरस्कार वितरण व सांस्कृतिक कार्यक्रम में बोर्ड के सदस्य सचिव श्री राजित रंजन ओखण्डियार, निदेशक (तक.), डॉ.आर.के.मिश्रा एवं केरेप्रौअसं के निदेशक डॉ. सुभाष नायक एवं कार्यालय के समस्त अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे। प्रारंभ में श्री आर.डी.शुक्ल, उप निदेशक (रा.भा.) ने सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया और बोर्ड में राजभाषा संबंधी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर श्री राजित रंजन ओखण्डियार, सदस्य सचिव ने कहा कि यदि हमने अपनी भाषा हिन्दी का प्रयोग करते हुए इसका विकास न किया तो अन्य देशों के लिए उपहास का पात्र बनेंगे। हिन्दी की विशेषता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यह एक ऐसी भाषा है जिसमें जैसा बोला जाता है ठीक वैसा ही लिखा जाता है और इसी विशेषता के कारण हिन्दी सरल, सहज और सुगम हो जाती है। इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए डॉ. आर के. मिश्रा ने कहा कि आज के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा को अपनाना तथा इसे आगे बढ़ाना बहुत प्रासंगिक हो गया है। डॉ.सुभाष नायक ने प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भी हिन्दी की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर गृह मंत्री, गृह सचिव, वस्त्र मंत्री एवं बोर्ड के अध्यक्ष के संदेश पढ़े गए। पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सदस्य सचिव के करकमलों से पुरस्कृत किया गया और विभिन्न कर्मचारियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। अंत में धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, केरेबो, मैसूरु में दिनांक 01.09.2018 से 14.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा और दिनांक 14.09.2018 को हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पखवाड़ा के दौरान कुल चार प्रतियोगिताएं नामत: सही लेखन, हिन्दी टिप्पण व आलेखन, श्रुतलेखन और स्मृति परीक्षण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। दिनांक 14.09.2018 को आयोजित हिन्दी दिवस के मुख्य कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई जिसकी प्रस्तुति श्रीमती गिरिजम्मा, सहायक निदेशक (प्रवले) ने की। संस्थान के निदेशक डॉ. वी. शिवप्रसाद ने कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से किया। उप निदेशक (रा.भा.) श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय ने स्वागत संबोधन एवं कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डीएफआरएल के सह निदेशक डॉ. एम. सी पांडेय उपस्थित थे। संस्थान के निदेशक ने अध्यक्षीय अभिभाषण प्रस्तुत करते हुए उपस्थित सभी से आग्रह किया कि वे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करें। इस अवसर पर प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में कहा कि हिन्दी अत्यंत सहज एवं सरल भाषा है। अल्प-अभ्यास से ही इस भाषा का प्रयोग आसानी से सरकारी कामकाज में किया जा सकता है। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का समाप्त हुआ।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, केरेबो, पाम्पोर (जम्मू व कश्मीर) में दिनांक 01.09.2018 से 14.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। दिनांक 14.09.2018 को हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया, इस अवसर पर डॉ. सहदेव चौहान, वैज्ञानिक-बी ने संस्थान द्वारा वर्ष 2017-18 के दौरान किए गए कार्यों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। कुल दो प्रतियोगिताओं यथा शब्दावली लेखन एवं पत्र लेखन का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान एवं अधीनस्थ कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया । हिन्दी दिवस के अवसर पर गृह मंत्री का संदेश पढ़कर सुनाया गया। इसके बाद कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. शैलेन्द्र सिंह चौहान, वैज्ञानिक-डी ने अपने संबोधन में बताया कि संस्थान में हिन्दी के कार्यों में धीरे-धीरे प्रगति हो रही है। कार्यक्रम के अंत में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये।

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, केरेबो, नगड़ी, राँची में दिनांक 14.09.2018 से 28.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। दिनांक 14.09.2018 को हिन्दी दिवस, भारतीय भाषाओं का सौहार्द दिवस के रूप में आयोजित किया गया जिसमें संस्थान के सभी वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे। इस अवसर पर माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार तथा सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर के संदेशों का वाचन भी किया गया। दिनांक 28.09.2018 को हिन्दी पखवाड़ा का मुख्य समारोह मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण एवं दीप प्रज्जवलन से हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ.अजीत कुमार सिन्हा मौजूद थे। स्वागत भाषण एवं कार्यक्रम के महत्व पर श्री कमल किशोर बडोला, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने प्रकाश डाला। अपने अध्यक्षीय भाषण में संस्थान के निदेशक प्रभारी डॉ.निरंजन कुमार ने राजभाषा हिन्दी की महत्ता को रेखांकित करते हुए संस्थान में हो रहे राजभाषा कार्यों की प्रशंसा की एवं उपस्थित वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों से अपने कामकाज में अधिकाधिक हिन्दी प्रयोग सुनिश्चित करने का अनुरोध किया। उन्होंने सभी से यह भी आह्वान किया कि वे राजभाषा विभाग के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु पूर्णत: प्रयास करें। पखवाड़ा के दौरान 04 प्रतियोगिताओं यथा- टिप्पण व आलेखन,

शब्दावली, राजभाषा ज्ञान एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निदेशक प्रभारी ने श्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया। इसके अलावा वर्ष 2017-18 के दौरान हिन्दी मूल कामकाज करने वाले कुल 16 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार भी प्रदान किया गया। वर्ष के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्य-निष्पादन करने वाले अनुभागों को तीन संवर्ग में अलग-अलग चलशील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया गया। हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर अध्यक्ष, केन्द्रीय रेशम बोर्ड के संदेश का पाठ भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी एवं कुशल प्रक्षेत्र कामगारों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

केन्द्रीय रेशम जननद्रव्य संसाधन केन्द्र, केरेबो, होसूर में दिनांक 14.09.2018 को भारतीय भाषाओं के सौहार्द दिवस के रूप में हिंदी दिवस तथा 14.09.2018 से 29.09.2018 तक हिंदी पखवाड़ा केरेजसंके, एरेबीउके एवं रेबीउके, होसूर के वैज्ञानिकों/ अधिकारियों/कर्मचारियों एवं प्रक्षेत्र कामगारों के सहयोग के साथ मनाया गया। 14.09.2018 को उद्घाटन समारोह के अवसर पर श्री. बैरवा नरेन्द्र कुमार मोहरीलाल, पुस्तकालय एवं सूचना सहायक ने हिंदी दिवस व हिंदी पखवाड़े के बारे में जानकारी दी। डॉ.गीता एन.मूर्ति, वैज्ञानिक-डी तथा अन्य वैज्ञानिकों/ अधिकारियों के साथ समारोह आरंभ किया गया। उद्घाटन के बाद, श्री. बैरवा नरेन्द्र कुमार मोहरीलाल ने सभी का स्वागत किया। डॉ. गीता एन.मूर्ति ने अपने संबोधन में सभी से अपने दैनिक सरकारी कामकाज में सरल व सहज हिंदी का प्रयोग करने का हर संभव प्रयास करने की इच्छा व्यक्त की। इसके बाद उन्होंने श्री राजित रंजन ओखण्डियार, सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु के संदेश का पठन किया। पखवाड़े के दौरान कुल चार हिंदी प्रतियोगिताएं जैसे सही लेखन, नोटिंग एवं पत्र लेखन, हिन्दी शब्दशक्ति, अंत्याक्षरी आदि आयोजित की गई। दिनांक 29.09.2018 को भारतीय ताराभौतिक संस्थान, बेंगलूरु से आमंत्रित मुख्य अतिथि श्री राजनटेशन, वरिष्ठ अनुवादक (हिन्दी), डॉ.सतीश वर्मा, प्रभारी निदेशक, केरेजसंके, होसूर की अध्यक्षता में समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह मनाया गया। प्रभारी निदेशक डॉ.सतीश वर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा हिन्दी हमारे राष्ट्र की अस्मिता है। इसमें न केवल पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे रखने की क्षमता है बल्कि यह एक अत्यंत वैज्ञानिक भाषा है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री राजनटेशन, वरिष्ठ अनुवादक (हिन्दी) ने यह उद्गार व्यक्त किया कि हिन्दी बहुत ही समृद्ध भाषा है और हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे राष्ट्र की अखंडता को एकसूत्र में बांधकर रख सकती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने राजभाषा हिंदी के प्रति संस्थान के अधिकारियों व पदधारियों की रुचि और इसके प्रचार-प्रसार के प्रति अदम्य उत्साह और निष्ठा को देख उनकी भरपूर प्रशंसा करते हुए आगे भी इसे जारी रखने की अपील की। केन्द्र के प्रभारी निदेशक डॉ.सतीश वर्मा, मुख्य अतिथि श्री राजनटेशन के कर कमलों द्वारा विभिन्न प्रतिभागिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वाले सफल विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। समापन समारोह में श्री आर.गोपिनाथन, आशुलिपिक (ग्रेड-I) ने कार्यक्रम का संचालन किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह की समाप्ति की घोषणा की गई।

क्षेत्रीय कार्यालय, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, लखनऊ द्वारा दिनांक 14.09.2018 से 28.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 28.09.2018 को समापन समारोह आयोजित किया गया। पखवाड़े का उद्घाटन डॉ.प्रमोद कुमार, वैज्ञानिक-डी एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा किया गया। हिन्दी दिवस और पखवाड़े पर चर्चा करते हुए अध्यक्ष महोदया ने बताया कि प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हम राजभाषा के संबंध में अपने संवैधानिक दायित्व को याद करते हुए हिन्दी दिवस मनाते हैं। स्वाधीन भारत में स्व-भाषा के अस्तित्व को बनाये रखना हमारी जिम्मेदारी ही नहीं आज की आवश्यकता भी है तथा आपसी सौहार्द की दृष्टि से भारतीय भाषाओं के मध्य संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी एक सशक्त माध्यम है। 14 सितम्बर को केंद्रीय कार्यालय से प्राप्त श्री के हनुमंतरायप्पा, अध्यक्ष तथा सदस्य सचिव के संदेशों को पढ़ा गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें सभी कर्मचारियों द्वारा सहभागिता की गयी। पखवाड़े में नये-नये चुटकुले भी कर्मचारियों ने प्रस्तुत किए और सामयिक विषय स्वच्छता के प्रति जागरूकता विषय पर भी परिचर्चा हुई, जिसमें सभी कर्मचारियों ने अपने विचार रखे। धन्यवाद ज्ञापन के बाद हिन्दी पखवाड़ा समाप्त की गई।

रेशमकीट बीज उत्पादन केन्द्र, केरेबो, चिंतामणि में दिनांक 22.09.2018 को हिन्दी दिवस सह पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। डॉ.जे.रविकुमार, वैज्ञानिक-डी ने हिन्दी दिवस समारोह की अध्यक्षता की। समारोह का आरंभ श्रीमती डी. लक्ष्मी देवी, तकनीकी सहायक के प्रार्थना गीत से हुआ। श्री एम.सी.रंगनाथ, सहायक अधीक्षक (प्रशा.) ने कार्यालय के अधिकारी और सभी कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया। स्वागत संबोधन के उपरान्त हिन्दी दिवस के अवसर पर केन्द्रीय रेशम बोर्ड के अध्यक्ष श्री के.एम.हनुमंतरायप्पा तथा सदस्य सचिव के संदेश श्री एम.सी.रंगनाथ, सहायक अधीक्षक (प्रशा.) ने पढ़कर सुनाया। इस समारोह में दिनांक 22.09.2018 को आयोजित हिन्दी सुलेख व सही लेखन तथा हिन्दी शब्दावली प्रतियोगिताओं में विजेताओं को समारोह के अध्यक्ष डॉ.जे.रविकुमार, वैज्ञानिक-डी द्वारा नकद पुरस्कार वितरण किया गया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी कर्मचारियों को हिन्दी का महत्व बताया और कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग अधिक से अधिक करने और हिन्दी में ही बात करने को कहा तथा हिन्दी भाषा सीखने पर जोर दिया। श्री एम.पी. निरंजन सिंह, तकनीकी सहायक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह समाप्त हुआ।

भारतीय रेशम मार्क संगठन, केरेबो, पालक्काड में दिनांक 14.09.2018 को अनुसंधान विस्तार केन्द्र के साथ हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्रीमती जी. शोभा, हिन्दी प्रधानाध्यापिका, सरकारी विद्यालय, पालक्काड विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारी थी। प्रार्थना गीत के बाद श्री ए.सुब्बुराज, सहायक निदेशक (निरी.) ने सभी का स्वागत किया और उन्होंने सभी से हिन्दी में काम करने की अपेक्षा व्यक्त की। विशिष्ट अतिथि श्रीमती जी.शोभा ने हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्रीमती के.सरला, वैज्ञानिक-डी ने कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग अधिक से अधिक करने का आग्रह किया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

वस्त्र परीक्षण प्रयोगशाला, केरेबो, वाराणसी के डॉ.जगन्नाथ सरदार, वैज्ञानिक-बी की अध्यक्षता में दिनांक 14.09.2018 को हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन किया गया। दिनांक 15.09.2018 से 28.09.2018 तक विभिन्न प्रतियोगिताएँ, यथा हिन्दी टिप्पण एवं आलेख, शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक 14.09.2018 को वैज्ञानिक-डी, डॉ.के.अशोक कुमार विशेष अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। अध्यक्ष महोदय द्वारा सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु के संदेश को उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारियों के मध्य पढ़कर सुनाया गया। स्वागत एवं दीप प्रज्वलन के उपरांत अध्यक्ष महोदय, मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों द्वारा अपना-अपना विचार व्यक्त किया गया।

बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, केरेबो, बोईरदादर एवं कच्चा माल बैंक तसर उप-डिपो द्वारा संयुक्त रूप से हिन्दी पखवाड़ा दिनांक 14.09.2018 से 28.09.2018 तक सफलतापूर्वक मनाया गया। दिनांक 28.09.2018 को समापन कार्यक्रम में श्री उदय नारायण सिंह, सेवानिवृत्त, वैज्ञानिक-डी, केरेबो के मुख्य अतिथि के रूप में गरिमामयी उपस्थिति रही और इनके करकमलों से दीप प्रज्जलित कर कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु से प्राप्त संदेश श्री के.एस.चटर्जी, सहायक अधीक्षक (प्रशा.) ने पढ़ा। मुख्य अतिथि के रूप में श्री उदय नारायण सिंह, सेवानिवृत्त वैज्ञानिक-डी, केरेबो ने कहा कि कोई भी व्यक्ति अपनी बातों, विचारों, भावनाओं आदि को अपनी भाषा में अच्छी तरह व्यक्त कर सकता है, अभिव्यक्ति की सशक्त माध्यम उसकी भाषा है, सरलता, सुगमता, व्यापकता और पूरे भारतवर्ष में बोलने, समझने एवं पढ़ने वाले की विशाल संख्या को ध्यान में रखते हुए हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त है, हिन्दी पूरे भारत वर्ष की संपर्क भाषा है। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। श्री भागीरथी पटेल, तकनीकी सहायक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, सहसपुर, देहरादून में विगत वर्षों की भांति हिन्दी पखवाड़ा 14.09.2018 से 28.09.2018 तक मनाया गया। दिनांक 14.09.2018 को हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन तथा हिन्दी दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ.पंकज तिवारी, वैज्ञानिक-घ ने कहा कि कार्यालयों में हिन्दी में काम करने का अपना महत्व है। आज हिंदी सरकारी कार्यालयों तक ही सीमित है। समारोह में श्री महिदीप उनियाल ने हिंदी दिवस पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा हिंदी पूरे भारत वर्ष में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। जब हिंदी पूरे भारत वर्ष में सर्वाधिक बोली जाती है तो हमें हिन्दी में कार्य करने में संकोच नहीं करना चाहिए। प्रत्येक देश की अपनी एक भाषा होती है जिसपर देशवासियों का गर्व होता है। हमें भी हिंदी पर गर्व होना चाहिए। इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री, अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव, केंद्रीय रेशम बोर्ड के संदेशों का वाचन भी किया गया। पखवाड़े के दौरान हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया और अंत में हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को वैज्ञानिक-डी प्रभारी डॉ.के.के.राय के कर कमलों से पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 28.09.2018 को आयोजित किया गया।

बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, केरेबो, केन्दुझर (ओडिशा) में दिनांक 01.09.2018 से 15.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 01.09.2018 को हिन्दी पखवाड़ा का शुभारंभ डॉ. सुब्रत सतपथी, वैज्ञानिक-सी की अध्यक्षता में किया गया जिसमें केन्द्र के सभी कर्मचारियों ने भाग लिया। अध्यक्ष महोदय ने सभी का स्वागत करते हुए, कार्यालय का अधिकाधिक कामकाज हिन्दी में करने का अनुरोध किया। पखवाड़ा के दौरान हिन्दी निबंध एवं वक्तृता प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। प्रतियोगिता को सुचारू रूप से संचालन करने हेतु डि.एन.उच्च विद्यालय, केंन्दुझर की हिन्दी शिक्षिका श्रीमती लीला पढ़िआर को आमंत्रित किया गया और उनके द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। आमंत्रित मुख्य अतिथि डॉ.एन.बालाजी चौधरी ने हिन्दी भाषा की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए उनके मूल्यवान परामर्श प्रदान किए। श्रीमती लीला पढ़िआर, हिन्दी शिक्षिका ने भी हिन्दी भाषा की सरलता के बारे में बताने के साथ-साथ हिन्दी प्रतियोगिताओं का संचालन किया। इस अवसर पर संगीत और चुटकुले आदि भी पेश किए गए। सदस्य सचिव, केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु से प्राप्त संदेश को मो.ईशरार अहमद, सहायक (तक) ने पढ़ा। अंत में श्री रमेश चन्द्र पृष्टि, सहायक अधीक्षक (प्रशा.) ने सबको धन्यवाद ज्ञापन करने के साथ हिंदी पखवाड़े का समापन हुआ।

प्रदर्शन सह तकनीकी सेवा केन्द्र, केन्दीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, प्रेमनगर, देहरादून द्वारा

दिनांक 14.09.2018 से 22.09.2018 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। दिनांक 14.09.2018 को हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन तथा हिन्दी दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कार्यालय के प्रभारी श्री डी.सी.जोशी, वैज्ञानिक-सी द्वारा माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार, अध्यक्ष, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु तथा निदेशक, केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान संसथान, बेंगलूरु के संदेशों का वाचन किया गया। कार्यालय के प्रभारी श्री डी.सी. जोशी, वैज्ञानिक-सी ने कहा कि हम अपने कार्यालयों में हर वर्ष हिन्दी सप्ताह का आयोजन करते है, हमें केवल हिन्दी सप्ताह तक ही सीमित नहीं होना चाहिए, हमें पूरे वर्ष हिन्दी में कार्य करते रहना चाहिए। दिनांक 22.09.2018 को समापन समारोह आयोजित किया गया, इसी दिन विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

वस्त्र परीक्षण प्रयोगशाला, प्रदर्शन सह तकनीकी सेवा केन्द्र, केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, भागलपुर में दिनांक 01.09.2018 से 14.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। दिनांक 14.09.2018 को हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह आयोजित किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अमित कुमार, मुख्य शाखा प्रबंधक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, भागलपुर पधारे। कार्यक्रम की शुरुआत प्रभारी ने अतिथियों के स्वागत एवं हिंदी दिवस की बधाई के साथ किया। इस अवसर पर अध्यक्ष, सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु तथा निदेशक, केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान संसथान, बेंगलूरु के संदेशों का वाचन किया गया। विशिष्ट अतिथि ने उपस्थित लोगों को दैनिक काम-काज में हिंदी के उपयोग करने की सलाह दी और कहा कि हर व्यक्ति को हिन्दी हृदय से सीखना एवं बोलना चाहिए। अंत में श्री त्रिपुरारी चौधरी ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली में दिनांक 14.09.2018 से 20.09.2018 तक हिंदी सप्ताह का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ। हिंदी सप्ताह के दौरान हिंदी प्रतियोगिताएं, चर्चा एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। दिनांक 14.09.2018 को हिंदी दिवस के उदघाटन समारोह में मुख्य अतिथि श्री बलराम कुमार, निदेशक रेशम, वस्त्र मंत्रालय, उद्योग भवन, भारत सरकार, नई दिल्ली उपस्थित थे। हिंदी दिवस का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। श्री शिव गोविन्द, सहायक निदेशक (निरी.) द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति विवरणी का व्यौरा प्रस्तुत किया गया। श्री राजेश कुमार सिन्हा, उप सचिव (तक.) ने अपना अध्यक्षीय संबोधन दिया। पखवाड़ा के दौरान हिंदी भाषा ज्ञान, वाद – विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 20 सितम्बर, 2018 को हिंदी सप्ताह का समापन समारोह आयोजित किया गया। श्री शशि भूषण मुकेश, उप महा निदेशक, भारतीय सूचना एवं प्रसारण सेवा, दूरदर्शन, नई दिल्ली को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि श्री शशि भूषण मुकेश ने अपने संबोधन में दूरदर्शन में प्रसारित होने वाले हिंदी समाचारों का उल्लेख कर बताया कि हिंदी भाषा अत्यंत समृद्ध है। मुख्य अतिथि द्वारा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किया गया। समापन समारोह में हिंदी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों एवं सरकारी काम काज मूल रूप से हिंदी में किए जाने के लिए वर्ष 2017-18 के लिए प्रोत्साहन नकद राशि प्रदान किए गए। अंत में श्री महेश साव, कनिष्ठ अनुवादक (हिंदी) ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, भुवनेश्वर में दिनांक 07.09.2018 से 14.09.2018 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। श्री दाशरथी बेहेरा, अधीक्षक (तक.) के कर कमल द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। पखवाड़ा के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम में हिन्दी चुटकुले, हिन्दी देश भक्ति गीत एवं हिन्दी सिनेमा के कुछ पुराने गाने भी सुनाए गए। इस अवसर पर हिन्दी शब्दावली प्रतियोगिता चलाई गई। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रदीप दास, प्रभारी अधिकारी, वस्त्र समिति, भुवनेश्वर उपस्थित रहे। श्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री, भारत सरकार, श्रीमती स्मृति जुबीन ईरानी, वस्त्र मंत्री, वस्त्र मंत्रालय, सदस्य सचिव एवं श्री हनुमंतरायप्पा, अध्यक्ष, केरेबो का संदेश पढ़ा गया। कार्यालय में आयोजित प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि के करकमलों से पुरस्कार प्रदान किया गया। अंत में धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समारोह समाप्त हो गया।

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, आंचलिक कार्यालय एवं बुनियादी बीज प्रगुणन व प्रशिक्षण केन्द्र, केरेबो, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 01.09.2018 से 14.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 14 सितंबर, 2018 को समापन समारोह आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमती रीना सिंह, प्राचार्या, महर्षि विद्या मंदिर, बिलासपुर रहीं और अध्यक्षता डॉ.आलोक सहाय, निदेशक, बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, बिलासपुर ने की। मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभांरभ किया गया। मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

रेशम जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान प्रयोगशाला, केरेबो, कोडत्ति, बेंगलूरु में हिन्दी पखवाड़ा दिनांक 01.09.2018 से 14.09.2018 तक आयोजित किया गया। पखवाड़ा का उद्घाटन डॉ. के.एम.पोन्नुवेल, वैज्ञानिक-डी की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना के साथ हुई और इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री, सदस्य सचिव, केरेबो के संदेश पढ़कर सुनाए गए और पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न

प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। डॉ.के.एम.पोन्नुवेल ने कार्यालय में राजभाषा का प्रयोग व उपयोग और हिन्दी दिवस के महत्व के बारे में जानकारी देने के साथ अति सरल रूप से रोज के कामकाज में हिन्दी के प्रयोग करने की सलाह दी। धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह समाप्त हुई।

रेशम अनुकूलन एवं परीक्षण गृह/वस्त्र परीक्षण प्रयोगशाला, केरेबो, मीरांसाहिब, जम्मू में दिनांक 01.09.2018 से 15.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़ा के दौरान तकनीकी व प्रशासनिक पत्रों का हिन्दी अनुवाद व उस पर टिप्पणी का अभ्यास कराया गया। दिनांक 14.09.2018 को हिन्दी दिवस मनाया गया जिसमें अध्यक्ष महोदय व सदस्य सचिव, केरेबो के संदेश पढ़े गए और विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। दिनांक 15.09.2018 को सांस्कृतिक कार्यक्रम, पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह आयोजित किया गया।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन एवं प्रशिक्षण संस्थान, केरेबो, बहरमपुर में दिनांक 01.09.2018 से 14.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया जिसके दौरान विविध प्रतियोगिताएं यथा; शब्दावली, निबंध, सुलेख व श्रुतिलेख तथा हिन्दी टिप्पण व आलेखन आयोजित की गई। मुख्य समारोह का भव्य आयोजन दिनांक 19.09.2018 को किया गया जिसकी अध्यक्षता संस्थान की निदेशक प्रभारी श्रीमती चंदना माजि द्वारा की गई। श्री विजय वीर सिंह, प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यायल, बरहमपुर विशिष्ट अतिथि के तौर पर विराजमान थे। इस दौरान अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव के संदेश पढ़े गए। इस अवसर पर श्री आर.बी.चौधरी, सहायक निदेशक (रा.भा.) द्वारा वर्ष 2017-18 की वार्षिक राजभाषा प्रगति व उपलब्धियों का विस्तृत ब्योरा भी प्रस्तुत किया गया। संस्थान के निदेशक द्वारा संबद्ध केन्द्रों और इसके अनुभागों को वर्ष 2017-18 के दौरान राजभाषा के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट योगदान के लिए राजभाषा चलशील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए। साथ ही पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा अपने अभिभाषण में यह उद्गार व्यक्त किया गया कि हिन्दी बहुत ही समृद्ध भाषा है और हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे राष्ट्र की अखंडता को एकसूत्र में बांधकर रख सकती है। इस अवसर पर पीजीडीएस के छात्र-छात्राओं द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। अंत में धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

क्षेत्रीय रेशम अनुसंधान केन्द्र, केरेबो, बोको, कामरूप (असम) में दिनांक 14 सितंबर, 2018 को क्षेरेअके, मेंदिपथार के साथ हिन्दी दिवस और भारतीय भाषाओं की सौहार्द दिवस के रूप में मनाया गया जिसमें दोनों कार्यालयों के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। संस्थान के वैज्ञानिक-डी व प्रभारी श्री एस.ए.एस.रहमान द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। पखवाड़ा के दौरान कुल तीन प्रतियोगिताओं यथा हिन्दी शब्दावली, आशुभाषण और निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण किया गया। श्री एस.ए.एस.रहमान, वैज्ञानिक-डी ने अपने भाषण में हिन्दी दिवस के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किया और कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग पर जोर दिया। अध्यक्ष के भाषण के बाद हिन्दी दिवस की समाप्ति की घोषणा की गई।

केन्द्रीय मूगा एरी अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, केरेबो, लाहदोईगढ़ जोरहाट (असम) में दिनांक 01.09.2018 से 13.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान टिप्पण आलेखन, हिन्दी तत्काल भाषण, हिन्दी कविता पाठ तथा हिन्दी गीत प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। दिनांक 14.09.2018 को पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ.रीता लुईखाम, वैज्ञानिक-डी ने की। श्री गजेन टाये, कनिष्ठ अनुवादक (हिन्दी) ने उपस्थित सभी का हार्दिक स्वागत किया। अध्यक्ष महोदय ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का श्रीगणेश किया। इसके बाद समूह गीत प्रस्तुत किया गया। इस दौरान अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव के संदेश पढ़े गए। इस अवसर पर डॉ.टी.जैम्स कैसा, वैज्ञानिक-डी एवं डॉ.डी.के. जिज्ञासू, वैज्ञानिक-डी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समारोह का समापन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, मुंबई में दिनांक 14.09.2018 से 28.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा और 14 सितंबर, 2018 को हिन्दी दिवस मनाया गया। पखवाड़ा के दौरान हिन्दी अंत्याक्षरी, टिप्पणी लेखन एवं क्वीज प्रतियोगिता आयोजित की गई। हिन्दी पखवाड़ा समारोह की अध्यक्षता श्री आलोक कुमार, सहायक निदेशक (निरी.) ने की। उन्होंने राजभाषा के महत्व की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया। इस अवसर पर गणमान्य उच्च पदाधिकारियों के संदेश पढ़कर सुनाए गए। दिनांक 28.09.2018 को हिन्दी पखवाड़ा का समापन किया गया।

रेशमकीट बीज उत्पादन केन्द्र, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बीरभूम (पश्चिम बंगाल) में 14.09.2018 को हिन्दी दिवस सामारोह का आयोजन डॉ.मनोजा पटनायक, वैज्ञानिक-डी की अध्यक्षता में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रशान्त कुमार निराला, स्टेशन मास्टर, नलहाटी जं. पूर्व रेलवे उपस्थित रहे। प्रारंभ में डॉ.मनोजा पटनायक, वैज्ञानिक-डी ने सभी का स्वागत किया। पखवाड़ा के दौरान शब्दावली एवं वक्तृता प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस दौरान सदस्य सचिव का संदेश पढ़ा गया। प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिन्दी पखवाड़ा समाप्त हुआ।

रेशमकीट बीज उत्पादन केन्द्र, केरेबो, रंरैया, जोरहाट, (असम) में दिनांक 14.09.2018 से 28.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा और 14 सितंबर, 2018 को हिन्दी दिवस मनाया गया। हिन्दी दिवस रनुमा दास, वैज्ञानिक-डी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। पखवाड़ा के दौरान आकस्मिक भाषण और अनुवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अवसर पर अध्यक्ष, केरेबो का संदेश पढ़ा गया। दिनांक 28.09.2018 को हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह किया गया जिसमें रेवती कुमार, क्षेत्रीय राजभाषा अधिकारी, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, जोरहाट और श्री अभिजीत सिन्ह, वरिष्ठ प्रबंधक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, जोरहाट मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और उन्होंने अपने-अपने व्याखान दिए। विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह समाप्त हुआ।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, केरेबो, सेलम में दिनांक 14.09.2018 से 28.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। दिनांक 22.09.2018 को हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह बड़े धूमधाम से आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्रीमती राजी एस.कुरूप्प, हिन्दी अध्यापक, दक्षिण रेलवे, सेलम मुख्य अतिथि के रूप में पधारी थी जिन्होंने हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डाला। पखवाड़े के दौरान कुल दो प्रतियोगिताओं यथा क्वीज और भाषण का आयोजन किया गया जिसमें सभी ने उत्साह से भाग लिया। इस अवसर पर अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव के संदेश पढ़कर सुनाए गए। कार्यक्रम के अंत में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया।

एरी अनुसंधान प्रसार केन्द्र, केरेबो, फतेहपुर (उ.प्र.) में दिनांक 14.09.2018 को केन्द्र के श्री सूरज पाल, वैज्ञानिक-डी की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। आयोजन का शुभारंभ करने से पहले अध्यक्ष महोदय ने रेशम विकास विभाग, फतेहपुर के पदाधिकारियों, विभिन्न स्थानीय विद्यालयों से पधारे अध्यापकों व छात्र-छात्राओं का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डाला। केन्द्र के श्री विजय कुमार, तकनीकी सहायक ने केन्द्र पर किए जा रहे राजभाषा संबंधी गतिविधियों की जानकारी दी। श्री विमल कुमार मिश्रा, शिक्षक, श्रीमती सुनिता मिश्रा एवं श्री शिव प्रसाद त्रिपाठी, भूतपूर्व भाजपा अध्यक्ष ने अपने-अपने विचार प्रकट किए। विभिन्न विद्यालय से आए छात्र-छात्राओं ने चुटकुले व कहानियाँ, गीत, कविता इत्यादि सुनाकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। अंत में सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम के समापन की घोषणा की गयी।

*****

केरेबो राजभाषा शील्ड समारोह

केन्द्रीय रेशम बोर्ड में वर्ष 2016-17 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए बोर्ड कार्यालयों एवं मुख्यालय, बेंगलूरु के अनुभागों के मध्य राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत कार्यालयों/अनुभागों को पुरस्कृत किया गया। बोर्ड के सदस्य सचिव श्री राजित रंजन ओखंडियार, भावसे ने दिनांक 20.06.2019 को आयोजित केरेबो राजभाषा शील्ड समारोह में विजेता कार्यालयों/अनुभागों को शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर उनका मनोबल बढ़ाया। विजेता कार्यालयों/अनुभागों के विवरण निम्न हैं:

#	कार्यालयों/अनुभागों की श्रेणी	राजभाषा शील्ड पाने वाले कार्यालय/अनुभाग	प्रशस्ति-पत्र (द्वितीय स्थान) पाने वाले कार्यालय/अनुभाग
1.	हिन्दी अधिकारी वाले कार्यालय	केन्द्रीय तसर अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, राँची	केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु
2.	हिन्दी कर्मचारी वाले कार्यालय	क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, सहसपुर	क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली
3.	'क' एवं 'ख' क्षेत्र स्थित हिन्दी कर्मचारी रहित कार्यालय	प्रमाणन केन्द्र, वाराणसी	प्रदर्शन सह तकनीकी सेवा केन्द्र, भंडारा
4.	'ग' क्षेत्र स्थित हिन्दी कर्मचारी रहित कार्यालय	रेशम जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला, कोड़ती	क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, कोरापुट, ओडिशा
5.	बोर्ड मुख्यालय, बेंगलूरु के अनुभाग	प्रचार अनुभाग	बिल अनुभाग

स्कटल फ्लाई: रेशम कीट बीज उत्पादन केंद्र के लिए एक नया खतरा

टी. आर. खरे[1], जी.वी. कल्पना[2] एवं आर.के.मिश्रा[3]

मेगासेलिया स्कैलारिस (स्कटल फ्लाई) फोरीडा कीटक परिवार की एक डिप्टरन मक्खी है। यह मक्खी फलों की मक्खी, ड्रोसोफिला से मिलती जुलती है, लेकिन आकार से ड्रोसोफिला मक्खी से थोड़ी बड़ी होती है और इसके तेजी से चलने की विशेषता के कारण इसको स्कटल फ्लाई नाम से जाना जाता है। इस प्रजाति में पीठ पर कूबड़ होने के कारण इसे वैकल्पिक रूप से 'कूबड़ वाली मक्खी' (हंपबैक फ्लाई) भी कहा जाता है। स्कटल फ्लाई केवल 2 मि.मी लंबी, भूरे एवं पीले रंग की होती हैं साथ ही, इसके पेट पर कुछ गहरे निशान पाए जाते हैं (चित्र-1)। यह एक होलोमेटाबोलस कीट है जिनकी अंडा, लार्वा, प्यूपा और पतंगा

स्कटल फ्लाई

चार अलग-अलग अवस्थाएँ हैं। स्कटल फ्लाई एक सर्वाहारी कीट होने के कारण मृत या जीवित जानवरों, मृतप्राय कीड़े, फल, कवक और प्रयोगशाला खाद्य पदार्थों जैसे विस्तृत विविध भोज्य पदार्थो पर पलती है। साथ ही उन्हें केंचुओं, घोंघे, मकड़ियों, मधुमक्खी, दीमक, चींटियों, सेंटीपीड, मिलीपेड, कीटों के अंडे, लार्वा, और प्यूपे के परभक्षियों या परजीवियों के रूप में भी लिया जाता है। वे खुद पलती हैं और उन उपनिवेशों में प्रगुणन करती हैं जिन्हें आर्द्र और गर्म वातावरण की आवश्यकता होती है। इन्हें अक्सर शहरी इमारतों से लेकर उष्णकटिबंधीय वर्षा-वनों तक के आवासों में पाया जाता है। मक्खियाँ मैली परिस्थितियों में जैसे कचरा कंटेनर, सार्वजनिक टॉयलेट, सीवेज पाइप, और कूड़े के बक्से में सड़ने वाले पदार्थों की तेज गंध से आकर्षित होती हैं।

फॉरेंसिक एन्टोमोलॉजी में स्कैटल फ्लाई की भूमिका महत्वपूर्ण है, हाल ही में 2018 के दौरान देबनाथ और रॉय इन दो वैज्ञानिकों ने इसे व्यावसायिक कीटकों (मधुमखी) के प्रजनन के लिए एक घातक कीट के रूप में रिपोर्ट किया हैं।

हाल में, दक्षिण कर्नाटक में लगातार बारिश एवं प्रचलित गर्म और आर्द्र जलवायु के कारण कुछ रेशमकीट बीज उत्पादन क्षेत्रों में अचानक स्कटल फ्लाई मक्खियों का प्रकोप पाया गया। स्कैटल फ्लाई की परजीविता को पहली बार रेशमकीट प्यूपा और साथ ही मादा पतंगों में रिपोर्ट किया गया। इससे रेशमकीट के बीज उत्पादन में बड़ा नुकसान देखने को मिला। क्योंकि रेशमकीट बीज उत्पादन प्रक्रिया में दोनों

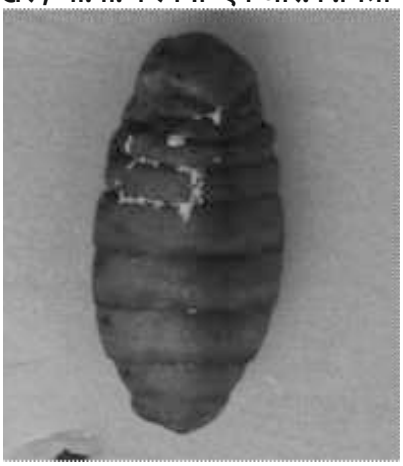

स्कटल फ्लाई द्वारा रेशमकीट प्यूपा के उदर के अंतर खंडीय झिल्लक्षेत्र पर अंडे दिए

लिंगों के रेशमकीट प्यूपा का उपयोग बीज उत्पादन के लिए किया जाता हैं। इस प्रकिया के समय कुछ पिघले हुए रेशम कीट प्यूपा से आने वाले तेज गंध एवं प्यूपा के प्रोटीन समृद्ध शरीर (55.6% प्रोटीन) के कारण स्कटल फ्लाई आकर्षित होते पाए। इस मक्खी को अपने अंडे को परिपक्व करने के लिए प्रोटीन युक्त खाद्य स्रोत की आवश्यकता होती है।

स्कटल फ्लाई लार्वे रेशमकीट मादा पतंग पे भक्षण करते हुए

आकर्षित मक्खियों ने मृत एवं जीवित रेशमकीट प्यूपा के उदर के अंतर-खंडीय झिल्लक्षेत्र पर अंडे दिए, एवं अंड स्पुटन पश्चात नवजात लार्वा द्वारा मृत एवं जीवित प्यूपा के कोमल ऊतकों पर भक्षण किया जिससे अंत में जीवित प्यूपे मृत पाए गए (चित्र-2)। साथ ही स्कटल फ्लाई के कुछ पतंग जीवित एवं मृत प्यूपे के शरीर से निकले तरल पदार्थों पर भक्षण करते पाए गए क्योकि इस तरह के शुगरी पदार्थ स्कटल फ्लाई पतंग के लिए प्राथमिक आहार है (चित्र-3)। स्कटल फ्लाई लार्वे एवं पतंग द्वारा

स्कटल फ्लाई पतंग रेशमकीट मादा भक्षण करते हुए

इस तरह की परजीविता की समस्या कीटशास्त्र के अन्य क्षेत्र में पहले भी रिपोर्ट की गई है।

इसके अलावा, मैथुन के बाद, रेशमकीट की गर्भवती मादा पतंगों को अंडे देने के लिए अंडा उत्पादन कक्ष में रखा गया जिसका तापमान 25°सें आपेक्षिक आर्द्रता 75% थी और यह स्कैटल फ्लाई के मादा पतंग को भी अंडे देने हेतु उपयुक्त हैं। इसलिए इस प्रकिया के दौरान उपयुक्त तापमान एवं आद्रता के साथ ही रेशम कीट मादा पतंग को छोड़कर अन्य जैविक सामग्री की न्यूनता होने के कारण स्कटल फ्लाई के मादा पतंग ने रेशमकीट के जीवित मादा पतंग के पेट पर अंडे दिए (चित्र-4)। क्योंकि स्कटल फ्लाई के पतंग अंडे देने के लिए केवल जैव पदार्थ पसंद करते हैं, जहाँ यह लार्वा भोजन, गर्मी और आर्द्रता पा सकता है। अंड स्पुटन पश्चात नवजात लार्वे जीवित गर्भवती मादा पतंग के कोमल ऊतकों को खाते हैं। परिणामतः प्रभावित रेशम कीट की मादा पूरी तरह से अंडे देने में विफल रही, जबकि कुछ पतंगे केवल कुछ अंडे ही दे पाईं और अंत में संक्रमित रेशमकीट पतंग की मृत्यु हो गई।

नियंत्रण की विधि:

स्कटल फ्लाई मक्खियों की परजीविता से छुटकारा पाने के लिए, प्रतिबंधक उपाय जैसे डेकोल कीट विकर्षक घोल से फर्श की निरंतर सफाई करना, प्यूपा एवं अंडपूर्ण मादा पतंग की यांत्रिक सुरक्षा जैसे की ट्रे, दरवाजे और खिड़कियों में जाल लगाना बेहतर हैं क्योंकि

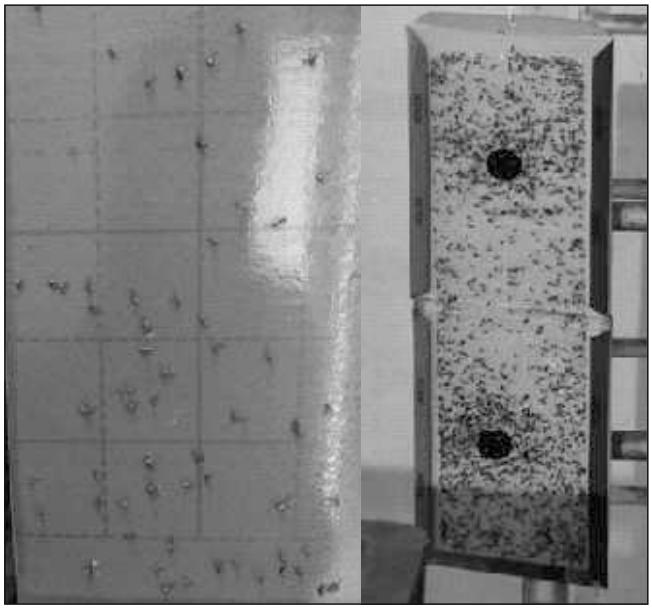

पीले और नीले रंग के चिपचिपे जाल में फसे स्कटल फ्लाई पतंग

रेशमकीट बीज उत्पादन प्रक्रिया के दौरान स्कटल फ्लाई मक्खियों का रासायनिक नियंत्रण उचित नहीं होता है क्योंकि यह रेशम के कीटों के लिए हानिकारक हो सकता हैं। हालाँकि, हमारे केंद्र में मक्खियों के अचानक प्रकोप के बाद, मोस्किटो बैट के इस्तेमाल से नर स्कटल फ्लाई मक्खियों को 70% तक मार दिया गया था और पीले और नीले रंग के चिपचिपे जाल ने स्कटल फ्लाई मक्खियों के नर और मादा दोनों को मारने में मदद की जिसके परिणामस्वरूप कीटों की आबादी में कमी आई (चित्र-5,6)। अनुसंधान संस्थानों द्वारा स्कटल फ्लाई के जैविक नियंत्रण हेतु अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है। जिससे रेशमकीट के बीज उत्पादन केंद्रों को इस मक्खियों को नियंत्रण करने के साथ ही रेशम कीट के बीज उत्पादन को बढ़ाने एवं रेशम उद्योग को भारी नुकसान से बचाने के लिए प्रभावी रूप से मदद हो सके।

- वैज्ञानिक-बी[1] एवं वैज्ञानिक-डी[2], पी3 मूल बीज फार्म, रारेबीसं, केरेबो मैसूरु निदेशक[3], राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, केरेबो, बेंगलूरु

शक्ति के विद्युतकण जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय,
समन्वय उनका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाए

-"प्रसाद" की कामायनी से

हिन्दी कार्यशाला

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, मुख्यालय, बेंगलूरु में 14.12.2018 को एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें कुल 18 कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रथम सत्र में श्रीमती आशा राव, सहायक निदेशक (रा.भा.), केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु ने कार्यालयीन कार्य में अनुवाद का प्रयोग और द्वितीय सत्र में श्री एम.पी.दामोदरन, उप निदेशक (रा.भा.), कॉफी बोर्ड, बेंगलूरु ने हिन्दी टिप्पणी के मानक स्वरूप पर व्याख्यान दिया और प्रतिभागियों से अभ्यास भी कराया।

दिनांक 20.03.2019 को भी एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें कुल 12 अधिकारियों ने भाग लिया। प्रथम सत्र में श्री टेकचंद, उप निदेशक (कार्या.), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलूरु ने राजभाषा नीति और कार्यान्वयन और द्वितीय सत्र में श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, सहायक निदेशक प्रभारी, हिन्दी शिक्षण योजना, बेंगलूरु ने राजभाषा हिंदी के कार्यालयीन स्वरूप एवं इनके प्रयोग पर व्याख्यान दिया।

केन्द्रीय तसर अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, राँची में दिनांक 21.12.2018 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं समस्त कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। कार्यशाला में डॉ.संजय सिंह, वैज्ञानिक-एफ, वन उत्पादकता संस्थान, राँची को मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने कम्प्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी के बढ़ते प्रभाव को रेखांकित किया। संस्थान के निदेशक डॉ.आलोक सहाय ने अध्यक्षीय संबोधन करते हुए कहा कि राजभाषा के विकास केलिए हमें अब परंपरागत बातों से ऊपर उठकर सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी के विकास को गति देने के बारे में सोचना होगा। कम्प्यूटर आज सबकी आवश्कता है तथा कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करने हेतु सुविधाएँ भी उपलब्ध है। कार्यशाला का संचालन करते हुए श्री कमल किशोर बडोला, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिन्दी को कदम से कदम मिलाकर चलना होगा। कार्यशाला में धन्यवाद ज्ञापन डा.जय प्रकाश पाण्डेय, वैज्ञानिक-डी द्वारा दिया गया।

राँची संस्थान में दिनांक 28.03.2019 को भी हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें श्री सूरज पाल सिंह, प्रबंधक राजभाषा, नाबार्ड क्षेत्रीय कार्यालय, राँची को मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। कार्यशाला में उन्होंने कम्प्यूटर पर बोलकर टंकण करने की विधि (गूगल वाइस टूल) के बारे में जानकारी दी।

केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु में मुख्य संस्थान तथा दक्षिण भारत स्थित इसके अधीनस्थ कार्यालयों के वैज्ञानिकों के लिए तकनीकी विषयों पर 20.12.2018 को एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें कुल 23 वैज्ञानिकों/तकनीकी कर्मचारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में डॉ.संजीव कुमार श्रीवास्तव, सी ई ओ तथा नैशनल कॉडिनेटर, सेंटर ऑफ नैनो साईंस एण्ड इंजीनियरिंग, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूरु ने "इनेवलिंग रिसर्च थ्रू आई एस टी ई एम" तथा डॉ. रिचा शर्मा, सहायक प्रोफेसर, निफ्ट, बेंगलूरु ने "डिजाइन व एसथेटिक यूजिंग फोटो – लूमिनेसेंट पिगमेंट" विषयों पर व्याख्यान दिए। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ.सुभास वी.नायिक ने कहा कि विश्व के कई विकसित देशों यथा चीन, रूस, जापान आदि में देश की राजभाषा में ही अनुसंधान व तकनीकी/प्रौद्योगिक कार्य किए जा रहे हैं। हमें भी इन देशों से सीखना चाहिए। स्वागत संबोधन में संस्थान के सहायक निदेशक (रा.भा.) ने कहा कि तकनीकी तथा प्रौद्योगिक क्षेत्रों में अनुसंधान तथा विकास का लाभ इनसे जुड़े सभी को मिलना चाहिए और यह तभी संभव है जब इनके बीच भारतीय भाषाओं या समझने वाली भाषाओं के माध्यम से पहुँचाया जाए। श्री ललन कुमार चौबे, वरिष्ठ अनुवादक (हिन्दी) ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

केरेप्रौअसं, बेंगलूरु में प्रशासनिक तथा तकनीकी कर्मचारियों के लिए 13.03.2019 को भी एकदिवसीय हिन्दी तकनीकी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें कुल 16 कर्मचारियों ने भाग लिया।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बरहमपुर में दिनांक 01.12.2018 को 'राजभाषा की विविध प्रावधान' विषयक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका प्रमुख ध्येय अधिकारियों/पदधारियों को राजभाषा हिंदी के प्रावधानों की समयक जानकारी देने तथा राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा विकसित ई-टूल्स आदि का व्यावहारिक अनुप्रयोग व प्रशिक्षण देना था। इस कार्यशाला में वैज्ञानिक/अधिकारीगण प्रशिक्षित किए गए। प्रारंभ में संस्थान की निदेशक प्रभारी श्रीमती चंदना माझी ने हिंदी कार्यशाला के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर अतिथि वक्ता के रूप में श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक (कार्या.), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र), राजभाषा विभाग, कोलकाता पधारे थे जिन्होंने भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिंदी के लिए निर्धारित नियमों, उपबंधों व इसके प्रचार-प्रसार के लिए केन्द्र सरकार द्वारा उठाए जा रहे नए प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने तिमाही प्रगति रिपोर्ट को भरने और संसदीय राजभाषा समिति की अपेक्षाओं की पूर्ति से संबंधित जानकारी दी। अंत में श्री आर.बी.चौधरी, सहायक निदेशक (रा.भा.) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला की समाप्ति की घोषणा की गई।

बरहमपुर संस्थान में 02.03.2019 को 'राजभाषा के विविध आयाम' विषयक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 20 पदधारियों ने भाग लिया।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, मैसूरु में दिनांक 03.11.2018 को एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 24 तकनीकी सहायकों और तकनीशियनों को हिन्दी में पत्र व्यवहार एवं राजभाषा संबंधी नियमों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। राजभाषा में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलूरु से उप निदेशक (कार्या.) श्री टेकचंद ने व्याख्यान दिया। द्वितीय सत्र में संस्थान के उप निदेशक (रा.भा.) श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय के द्वारा राजभाषा के व्यावहारिक पक्ष पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

मैसूरु संस्थान में दिनांक 20.03.2019 को भी एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 21 वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। पूर्वाह्न सत्र में संस्थान के उप निदेशक (रा.भा.) श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय ने "राजभाषा हिन्दी के विविध आयाम" नामक विषय पर व्याख्यान दिया, साथ ही उन्होंने प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली पर अभ्यास सत्र भी संचालित किया। द्वितीय सत्र में डॉ.सर्वेश मौर्या, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, एन सी ई आर टी, मैसूरु विश्वविद्यालय ने "कार्यालयीन कामकाज में सरल हिन्दी का प्रयोग" विषय पर व्याख्यान दिया।

राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु में कर्मचारियों के लिए दिनांक 22.10.2018 को एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। डॉ. शशींद्रन नायर, वैज्ञानिक-डी, रारेबीसं, बेंगलूरु ने हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन किया। श्री आर.डी.शुक्ला, उप निदेशक (रा.भा.), केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु ने कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन श्री शिवलिंगय्या, उप निदेशक (प्र व ले) ने किया। श्रीमती सी.पी.जयश्री, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने सभी का स्वागत किया। डॉ.शशींद्रन नायर, वैज्ञानिक-डी ने कहा कि केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में हिन्दी में यथासंभव काम करना हमारा कर्त्तव्य है। हिन्दी में काम करते समय व्याकरण पर अधिक ध्यान न देते हुए अधिक-से-अधिक टिप्पण हिन्दी में लिखें। श्री आर.डी शुक्ला, उप निदेशक (रा.भा.), ने बताया कि हिन्दी सरल भाषा है। हर भाषा की अपनी संस्कृति होती है। अन्य भाषाओं की तुलना में हिन्दी में काम करना बहुत आसान है। प्रथम सत्र में उन्होंने यह समझाया कि हिन्दी में कार्यालयीन कार्य कैसे करें और काम करते समय होने वाली कठिनाईयों का सामना कैसे करें। द्वितीय सत्र में श्री अनिल कुमार साहू, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना ने कम्प्यूटर के माध्यम से हिंदी में कार्यालयीन कार्य तथा ईटूल्स के बारे में सिखाया। कुल 18 पदधारियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। श्रीमती अर्चना श्रीवास्तव, आशुलिपिक ग्रेड-I के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

दिनांक 22.01.2019 को भी एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई जिसका उद्घाटन निदेशक, डॉ. आर.के. मिश्रा ने किया। श्रीमती डॉ. सरिता सिन्हा, बेंगलूरु ने कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया जिन्होंने कार्यालय में कैसे सरल भाषा हिन्दी में बातचीत करें – विषय पर व्याख्यान दिया। द्वितीय सत्र में श्रीमती अर्चना श्रीवास्तव ने प्रतिभागियों के साथ इसकी व्यावहारिकता के बारे में चर्चा-परिचर्चा की।

मूगा रेशमकीट बीज संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय एवं क्षेत्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी में दिनांक 13.12.2018 को संयुक्त रूप से एकदिवसीय पूर्णकालीन हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया, तत्पश्चात मंगलगीत प्रस्तुत किया गया। व्याख्यान देने हेतु श्री बदरी यादव, उप निदेशक (पूर्वोत्तर) प्रभारी, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र), राजभाषा विभाग, गुवाहाटी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी राजभाषा ही नहीं राष्ट्रभाषा भी है। इस आयोजन का उद्देश्य केवल सभी को शुद्ध लिखने के लिए प्रेरित करना तथा सामान्य गलतियों की जानकारी देना है। श्री शेख रम्तु बाषा, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने भाषा की सामान्य परिभाषा पर प्रकाश डाला। दूसरे सत्र में श्री यादव ने माइक्रोसॉफ्ट इंडिक इनपुट टूल के संबंध में जानकारी दी। तत्पश्चात श्री शेख रम्तु बाषा, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने मानक हिंदी वर्णमाला की जानकारी देते हुए सही उच्चारण, लिंग एवं वचन आदि पर चर्चा की।

गुवाहाटी स्थित उपरोक्त कार्यालयों में 20.03.2019 को भी हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 25 पदधारियों ने भाग लिया।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, पाम्पोर में दिनांक 31.12.2018 को एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ.भारतेन्दु कुमार पाठक, सहायक प्राचार्य, हिंदी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर मुख्य अतिथि एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित रहे। प्रथम सत्र में राजभाषा हिंदी का प्रशिक्षण तथा दूसरे सत्र में राजभाषा/हिंदी का कार्यालय में बढ़ावा व तकनीकी पारिभाषिक शब्द विषयों पर विस्तृत चर्चा कर प्रतिभागियों से अभ्यास करवाया। दूसरे सत्र में संस्थान के डॉ.पवन शुक्ला, वैज्ञानिक-बी ने राजभाषा/हिन्दी का कार्यालय में बढ़ावा विषय पर व्याख्यान दिया तथा पावर पाइंट के माध्यम से प्रस्तुति देकर अभ्यास कराया। साथ ही डॉ.सहदेव चौहान, वैज्ञानिक-बी ने तकनीकी पारिभाषिक शब्द की जानकारी करायी। कार्यशाला में संस्थान की अधीनस्थ इकाइयों जैसे उप अविके, कुपवाड़ा, उप-अविके, सरनल, पी4 मूल बीज फार्म, मानसबल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी भाग लिया।

पाम्पोर संस्थान में दिनांक 16.03.2019 को भी एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के अधीनस्थ इकाइयों नामतः उप अविके, कुपवाड़ा, उप अविके, सरनल, पी4 मूल बीज फार्म, मानसबल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

क्षेत्रीय कार्यालय, केरेबो, नई दिल्ली में 'सरकारी कार्यों में सरल हिन्दी शब्दों के प्रयोग एवं अनुवाद हेतु जागरुकता' विषय पर दिनांक 20.12.2018 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री शिवगोविन्द, सहायक निदेशक (निरी.), क्षेका, नई दिल्ली ने की। व्याख्यान देने हेतु मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में श्री विनोद संदलेश, संयुक्त निदेशक (रा.भा.), केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गया। श्री शिवगोविन्द ने बताया कि नियमित कार्यशाला के आयोजन द्वारा महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा-परिचर्चा, विचार-विमर्श से राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में गति मिलती है। श्री विनोद संदलेश ने बताया कि दुनिया का कोई भी काम अनुवाद के बिना संभव नहीं है। सरकारी कार्यों में सरल हिन्दी के प्रयोग के संबंध में उन्होंने बताया कि अनुवाद करते समय भाषायी संरचना पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अंत में श्री महेश साव, कनिष्ठ अनुवादक (हिंदी) ने सभी उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

जनवरी-मार्च तिमाही में भी 26.03.2019 को "कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के अभिनव प्रयास" विषय पर हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में दिनांक 26.12.2018 को एक एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के प्रथम सत्र में राजभाषा टूल्स के बारे में प्रशिक्षण तथा दूसरे सत्र में सरकारी पत्राचार के विभिन्न स्वरूप एवं राजभाषा नीति पर व्याख्यान दिया गया। कार्यशाला का प्रारंभ संस्थान के निदेशक प्रभारी डॉ.आर.बी.सिन्हा द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। अतिथि वक्ता के रूप में डॉ.विनय कुमार पाठक, प्राध्यापक (सेवानिवृत्त) एवं अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग, बिलासपुर उपस्थित थे जिन्होंने हिन्दी की अनिवार्यता एवं वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए सरकारी पत्राचार के विभिन्न स्वरूपों एवं टिप्पण लेखन पर रोचक तरीके से व्याख्यान दिया। राजभाषा टूल्स के संबंध में श्री फूल सिंह लोधी, कनिष्ठ अनुवादक (हिन्दी) ने जानकारी प्रदान की। इस कार्यशाला में संगठन के अलावा आँचलिक कार्यालय, केरेप्रौअसं, बिलासपुर एवं बुबीप्रवप्रके, बिलासपुर के कुल 20 अधिकारियों/ कर्मचारियों ने भाग लिया। डॉ.एम.एस.राठौर, वैज्ञानिक-सी ने उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

बिलासपुर संस्थान में दिनांक 26.02.2019 को भी एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संगठन के अलावा आँचलिक कार्यालय, केरेप्रौअसं, बिलासपुर एवं बुबीप्रवप्रके, बिलासपुर के 23 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

केन्द्रीय रेशम जननद्रव्य संसाधन केन्द्र, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, होसूर में दिनांक 27.03.2019 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, इस कार्यशाला में इस केन्द्र के डॉ.गीता एन.मूर्ति, वैज्ञानिक-डी तथा एरेबीउके, होसूर के अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। केन्द्र की श्रीमती शीबा वी.एस., कनिष्ठ अनुवादक (हिन्दी) ने आमंत्रित व्याख्याता श्री विजय कुमार, सहायक निदेशक (रा.भा.) एवं समस्त प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया। श्री विजय ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है तथा अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी के माध्यम से करने पर जोर दिया। उन्होंने राजभाषा हिन्दी का परिचय, राजभाषा नीति और नियम एवं कार्यान्वयन आदि पर प्रकाश डाला। डॉ.गीता एन.मूर्ति, वैज्ञानिक-डी ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिन्दी को सिर्फ सरकारी आदेश का पालन करते हुए व्यवहार में न लाएं, अपितु एक सरल, सुगम एवं विश्व में दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा का सम्मान करते हुए गर्व से अधिकाधिक कार्यालयीन कार्य में उपयोग करें। अंत में समस्त प्रतिभागियों को हिन्दी कार्यशाला को सफल बनाने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, कोलकाता में दिनांक 11.12.2018 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 2 अधिकारियों एवं 9 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला की अध्यक्षता श्री गोपाल कृष्ण सामंत, उप सचिव (तक.) द्वारा की गई। इस कार्यशाला में श्रीमती केसर ज़हां उपस्थित थी जिन्होंने एकवचन से बहुवचन बनाने के संबंध में चर्चा की जिससे सहजता से वचन परिवर्तन एवं उससे जुड़े कार्य किए जा सके। शब्द रचना एवं वर्तनी संबंधी चर्चा भी की गई एवं श्याम पट्ट पर इसका अभ्यास भी करवाया गया। अंत में श्री गोपाल देव, सहायक अधीक्षक द्वारा अतिथि व्याख्याता एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

दिनांक 14.03.2019 को भी एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के कुल 12 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

रेशम जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान प्रयोगशाला, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, कोड़ती, बेंगलूरु में दिनांक 28.03.2019 को हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में "सरकारी काम में राजभाषा का प्रयोग एवं उपयोग और राजभाषा के कार्यान्वयन में विकास" के बारे में व्याख्यान देने के लिए केन्द्रीय रेशम बोर्ड, केन्द्रीय कार्यालय के उप निदेशक (रा.भा.), श्री आर.डी.शुक्ल को आमंत्रित किया गया। इस कार्यशाला में कोड़ती स्थित तीनों कार्यालयों नामतः रेजैप्रौप्र, रेबीप्रौप्र, क्षेरेअके कार्यालयों के अधिकारी एवं कर्मचारी भाग लिए। कार्यशाला में

डॉ. के. एम. पोन्नुवेल, डॉ.विद्युन्माला और डॉ.जलजा उपस्थित थे। श्री आर.डी.शुक्ल ने राजभाषा नीति और कार्यान्वयन के बारे में जानकारी दी और तिमाही रिपोर्ट की गंभीरता के बारे में उपस्थित प्रतिभागियों को जागरुक किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, लखनऊ में "हिन्दी एक भाषायी सागर है" विषय पर दिनांक 31.01.2019 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें श्रीमती मीरा वर्मा, सेवानिवृत्त वैज्ञानिक-डी अतिथि वक्ता द्वारा रोचक व्याख्यान दिया गया। कार्यशाला का उद्घाटन डॉ.प्रमोद कुमार, वैज्ञानिक-डी द्वारा किया गया और उन्होंने बताया कि हिन्दी भारत की प्राचीन भाषाओं में से एक है, इसे बोलना-लिखना आदि भी सहज है। अतिथि वक्ता ने बताया कि बदलते महौल में सरकारी कामकाज में प्रयोग होने वाली हिन्दी भाषा को भी सरल तथा आसानी से समझ में आने वाली भाषा बनाना होगा। राजभाषा में कठिन शब्दों के इस्तेमाल से उसे अपनाने में हिचकिचाहट बढ़ती है। अतिथि वक्ता के रोचक व्याख्यान के बाद धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

क्षेत्रीय कार्यालय, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, मुम्बई में दिनांक 27.03.2019 को अर्द्ध दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन कार्यालय प्रभारी श्री आलोक कुमार, सहायक निदेशक (निरी.) की अध्यक्षता में किया गया। कार्यशाला का आयोजन हिन्दी व्याकरण एवं टिप्पणी लेखन विषय पर किया गया। उन्होंने व्याख्याता के रूप में हिन्दी टिप्पणी कैसै लिखी जाती एवं व्याकरण के संबंध में मार्गदर्शन दिया। श्री पी.जे.कोलारकर, सहायक निदेशक (निरी.) ने सूचित किया कि कार्यशाला आयोजित होने पर कार्यालय के कर्मचारी हिन्दी कार्य करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। हिन्दी व्याकरण एवं टिप्पणी लेखन कैसे लिखना है इस संबंध में बताया। व्याख्यान समाप्ति के बाद श्री कोलारकर, सदस्य संयोजिका एवं कर्मचारियों के प्रति आभार प्रदर्शित कर कार्यशाला के सफल आयोजन की घोषणा की।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, सहसपुर, देहरादून में दिनांक 26.12.2018 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता कार्यालय प्रभारी डॉ. पंकज तिवारी, वैज्ञानिक-डी ने किया। डॉ.तिवारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य हिन्दी में काम करने में आ रही समस्याओं का निराकरण करना होता है। कार्यशाला में श्री के.एम.कोटनाला, शिक्षक, रा.पू.मा.विद्यालय, धूलकोट, देहरादून मुख्य अतिथि वक्ता थे। मुख्य अतिथि वक्ता ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य भारत सरकार के कार्यालयों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना है ताकि कर्मचारी को कार्य करने में सुविधा हो। कार्यशाला का संचालन श्रीमती निवेदिता खंडूरी, तकनीकी सहायक के द्वारा किया गया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री महिदीप उनियाल, सहायक अधीक्षक द्वारा किया गया।

जनवरी-मार्च तिमाही में 23.03.2019 को भी हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, बोको, असम में दिनांक 29.03.2019 को संयुक्त हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें मूगा रेशमकीट उत्पादन केन्द्र, कालियाबारी, बोको, मूगा रेशमकीट बीज संगठन पी3 इकाई, हाहिम, पी3 इकाई, अदोकगिरि और अनुसंधान केन्द्र, कूचबिहार के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। श्री एस.ए.एस. रहमान, वैज्ञानिक-डी ने हिंदी कार्यशाला की अध्यक्षता की जिसमें श्री शेख रम्तु बाषा, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में अधिकतर प्रयोग होने वाले विषयों पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने धारा 3(3) के अंदर आने वाले सभी पत्राचार जैसे – ज्ञापन, कार्यालय आदेश, परिपत्र, कार्यालय नोट आदि प्रयोग के बारे में व्याख्यान दिया और सभी से आग्रह किया कि धारा 3(3) का पालन किया जाए और इसकी जानकारी दी कि टिप्पण-आलेखन को कैसे सरल भाषा में लिखा जा सकता है। डॉ.मानवेन्द्र डेका, वैज्ञानिक-सी ने उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों तथा विशिष्ट व्यक्तियों के सुझाव एवं मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रदर्शन सह तकनीकी सेवा केन्द्र, केरेप्रौअसं, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, कटक में दिनांक 19.12.2018 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन कार्यालय प्रभारी श्री जयंत घोष, वैज्ञानिक-सी की अध्यक्षता में किया गया। उन्होंने व्याख्याता श्री दीनबन्धु सिंह, हिन्दी अधिकारी, एम.एस.एम.ई., भारत सरकार, कटक का स्वागत किया एवं उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ हिंदी वर्तनी के मानकीकरण विषय पर चर्चा की एवं चर्चा के दौरान कर्मचारियों के विभिन्न प्रश्नों का उत्तर दिया। कार्यशाला के अंत में श्री राधेश्याम मिश्र, तकनीकी सहायक ने आमंत्रित अतिथि श्री दीनबन्धु सिंह, हिन्दी अधिकारी, श्री जयंत घोष के प्रति आभार प्रकट करते हुए सभी कर्मचारियों को धन्यवाद देते हुए कार्यशाला समाप्त की। इस कार्यशाला में कुल 10 कर्मचारियों ने भाग लिया।

इस केन्द्र में दिनांक 07.03.2019 को भी हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें कुल 08 कर्मचारियों ने भाग लिया।

रेशम अनुकूलन व परीक्षण गृह/वस्त्र परीक्षण प्रयोगशाला, केरेप्रौअसं, केरेबो, जम्मू में एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन 31.12.2018 को किया गया। कार्यशाला की संचालिका श्रीमती सरोजनी रैना, तकनीकी सहायक रही। श्री सुरेन्द्री भट्ट, वैज्ञानिक-डी ने कार्यशाला में सभी कर्मचारियों को श्वेत पट्ट पर विभिन्न शब्द, वाक्य,

जिन्हें लिखने में कठिनाई होती है, को लिखवाया और त्रुटियों का सुधार किया। इसके साथ-साथ सही उच्चारण का भी अभ्यास करवाया। उन्होंने सभी से अपना ज्यादा से ज्यादा काम हिंदी में करके अपना योगदान देने को कहा।

दिनांक 23.03.2019 को भी एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

बुनियादी बीज प्रगुणन व प्रशिक्षण केन्द्र, केन्दुझर (ओडिशा) में दिनांक 29.12.2018 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। केन्द्र के डॉ. सुब्रत सतपथी, वैज्ञानिक-सी ने इसकी अध्यक्षता की जिसमें 7 कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रारंभ में अध्यक्ष महोदय ने सभी उपस्थित कर्मचारियों का स्वागत करते हुए कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। केन्द्र के श्री स.महापात्र, उ.श्रे.लि ने हिंदी के लिंग एवं वचन के बारे में और श्री रमेश चंद्र पृष्टि, सहायक अधीक्षक ने हिंदी में टिप्पण-आलेखन पर व्याख्यान दिया। अंत में मो. इशरार अहमद, तकनीकी सहायक ने सभी कर्मचारियों को धन्यवाद दिया।

इस केन्द्र में दिनांक 26.03.2019 को भी हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें केन्द्र के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

वस्त्र परीक्षण प्रयोगशाला, केरेप्रौअसं, केरेबो, वाराणसी में एकदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन 28.12.2018 को किया गया। मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में श्री जगदीश नारायण राय, पूर्व सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, भारत सरकार आमंत्रित थे। इनके अलावा वाराणसी स्थित अन्य कार्यालयों, प्रमाणन केन्द्र एवं अनुसंधान प्रसार केन्द्र, भद्रासी के अधिकारी एवं कर्मचारी कार्यशाला में आमंत्रित थे। प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि श्री जगदीश नारायण राय ने राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी नीति विषय पर विस्तार से चर्चा की। द्वितीय सत्र में उपस्थित सदस्यों के बीच मुख्य अतिथि द्वारा पारस्परिक चर्चा की गई। साथ ही उन्होंने लेखनी में वर्तनी पर विशेष ध्यान देने पर जोर दिया। उन्होंने यूनिकोड सॉफ्टवेयर के माध्यम से हिंदी टंकण का निरंतर प्रयास पर जोर दिया। उक्त कार्यशाला में कुल 15 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। अंत में श्री राम सरन प्रसाद, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (विशेष ग्रेड) ने उपस्थित अधिकारियों/ कर्मचारियों को धन्यवाद दिया।

इस केन्द्र में दिनांक 29.03.2019 को भी हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें वाराणसी स्थित अनुसंधान प्रसार केन्द्र, भद्रासी एवं प्रमाणन केन्द्र, वाराणसी के अधिकारी एवं कर्मचारी आमंत्रित थे।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, सेलम में दिनांक 23.03.2019 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जो वैज्ञानिक-डी डॉ.एन.दाहिरा बीवी की अध्यक्षता में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री आर.गोपिनाथन, आशुलिपिक (ग्रेड-II), केरेजसंके, होसूर को आमंत्रित किया गया जिन्होंने राजभाषा हिन्दी से संबंधित व्याकरण, पत्राचार, टिप्पणी, शब्दावली आदि विषयों पर सभी को मार्गदर्शन दिया। डॉ. एन.दाहिरा बीवी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रतिभागियों से हिन्दी कार्यशाला में भाग लेकर उसका पूरा लाभ उठाने की अपील की। कार्यशाला में कुल 15 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। अंत में श्री शिव प्रसाद, अधीक्षक द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव किया गया।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, भीमताल, नैनीताल में दिनांक 28.03.2019 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। केन्द्र प्रभारी श्री सोमेश पालीवाल, वैज्ञानिक-डी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की एवं संचालन श्री ए.एस.वर्मा, वैज्ञानिक-डी ने किया। श्री सोमेश पालीवाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कर्मचारियों को हिन्दी में शासकीय, अर्द्धशासकीय, पत्र लेखन आदि में होने वाली गलती को सही रूप में लिखने के लिए बताया। उन्होंने आगे कहा कि केन्द्र के किसी भी कर्मचारी को हिन्दी लिखने में किसी प्रकार की समस्या होती है तो बिना किसी हिचक वे उनसे मिलकर होने वाली समस्या का समाधान कर सकते हैं। श्री ए.एस.वर्मा ने कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को बताया कि हिन्दी के शब्द, तकनीकी एवं दूसरे शब्दों के एक से अधिक अर्थ भी हो सकते हैं ऐसे में हिन्दी के सटीक शब्द लिखने का प्रयास करना चाहिए। श्री ए.के.कांत, वैज्ञानिक-डी, अविके, हलद्वानी ने हिन्दी में सरकारी कामकाज के महत्व पर प्रकाश डालते हुए केन्द्र के अधिकारियों/ कर्मचारियों को हिन्दी के समानार्थी शब्दों के बारे में बताया व अभ्यास करवाया। श्री एस.पी.टम्टा, उच्च श्रेणी लिपिक ने कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को फाइलों में टिप्पणी लिखने, माँग-पत्र भरने के बारे में बताया। अंत में श्री ए.के.एस.मुण्डा, तकनीकी सहायक ने हिन्दी पर अपने विचार रखे एवं कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापन किया।

***

औरत कभी हारती नहीं है,
उसे हराया जाता है ....
समाज क्या कहेगा? यह कहकर
डराया जाता है ....

- अमृता प्रीतम

आपके पत्र

आपके संस्थान की राजभाषा गृह पत्रिका रेशम भारती के अंक जून 2018 की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में प्रकाशित पठनीय सामग्री जैसे पाम्पोर के बढ़ते कदम एवं तसर रेशम उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि, मूल बीज फार्म प्रबंधन, जननद्रव्य संसाधन केन्द्र की उपलब्धियाँ जैसा देश वैसा भेष, आस्था, गंगा, भ्रष्टाचार, प्रतीति, मनमंदिर आदि लेख एवं कविताएं अत्यन्त रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। जहाँ एक ओर पत्रिका में रेशम अनुसंधान एवं विकास संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियाँ उपलब्ध हैं, वहीं दूसरी ओर राजभाषा कार्यान्वयन एवं अन्य गतिविधियों से संबंधित लेख उच्च कोटि के हैं। पत्रिका में समाहित संदेश, बोर्ड की तस्वीरें, लेख, कविताएँ एवं इनका स्तरीय प्रकाशन अत्यन्त शोभनीय एवं सराहनीय है। पत्रिका की साज-सज्जा एवं चित्रदीर्घा में बोर्ड की उच्च स्तरीय छवि दृष्टिगोचर होती है।

गृह पत्रिका में प्रकाशित सामग्री सहज-सरल, प्रवाहमयी व लालित्यपूर्ण भाषा के प्रयोग के प्रति चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, इसी कड़ी में आपकी उक्त पत्रिका हमारे संस्थान में भी वैज्ञानिक-तकनीकी ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ राजभाषा प्रचार-प्रसार में अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगी।

भविष्य में भी रेशम भारती के ऐसे उत्कृष्ट संस्करणों की आशा के साथ इसके सभी लेखकों एवं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को डेयर परिवार की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

• सुनीता अवस्थी सिंह, वैज्ञानिक-एफ, प्रभारी हिन्दी कक्ष, रक्षा उड्डयानिकी अनुसंधान संस्थापन, पोस्ट बॉक्स सं.9366, सी.वी.रामन नगर, बेंगलूरु-560093

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, मडिवाला, बेंगलूरु के हिन्दी अनुभाग से प्रकाशित रेशम भारती देखने को मिली। इसमें उपलब्ध कराए जा रहे ज्ञान को मैं भी नियमित प्राप्त करना चाहता हूँ जिससे मैं नवीन जानकारी प्राप्त कर सकूं एवं पत्रिका के माध्यम से अपनी जानकारी भी साझा कर सकूं। अतः, महोदय से निवेदन है कि मुझे भी पत्रिका "रेशम भारती" की प्रेषण सूची में सम्मिलित करने की कृपा करें।

• विनय कुमार, सहायक रेशम विकास अधिकारी, कार्यालय उप निदेशक (रेशम), 18/118 तपोवन आश्रम एक्सचेंज, पंचक्रोशी रोड, सारंग तालाब, वाराणसी – 221 007 (उत्तर प्रदेश)

केन्द्रीय रेशम बोर्ड की राजभाषा समर्पित गृह पत्रिका "रेशम भारती" जून-2018 का अंक मुझे प्राप्त हुआ। यह पत्रिका एक प्रकार से केन्द्रीय रेशम बोर्ड की आंतरिक रीढ़ का काम कर रही है। रेशम के मलवरी, तसर, ओक तसर, मूगा और एरी की सामयिक जानकारी पूरे भारत के सभी राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में प्रसारित किया जा सकता है। मेरे द्वारा स्वरचित कविता "मन मंदिर" आपके माध्यम से रेशम भारती में छपा है इसे पढ़कर अन्तर्रात्मा को बहुत ही सुकून मिला इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। साथ ही अन्य लेखकों के लेख पढ़ा वह भी सराहनीय है। यह केन्द्रीय रेशम बोर्ड के लिए गरिमा और गौरव की बात है।

• राकेश कुमार, बुनियादी बीज प्रगुणन व प्रशिक्षण केन्द्र, बिलासपुर – 495 112 (छत्तीसगढ़)

केन्द्रीय रेशम बोर्ड की राजभाषा समर्पित गृह पत्रिका "रेशम भारती" का जून-2018 का अंक प्राप्त हुआ। रेशम भारती के नए अंक की बधाई और भविष्य में प्रकाशित होने वाले अंकों के लिए शुभकामनाएँ।

• बी.अम्मणि, वरिष्ठ प्रशा.अधिकारी, द्रव नोदन प्रणाली केन्द्र, 80 फीट रोड, एय.ए.एल.II स्टेज, बेंगलूरु – 560 008

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी गृह पत्रिका "रेशम भारती" का नवीनतम अंक हमारे संस्थापन को प्राप्त हुआ। धन्यवाद। प्रस्तुत पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख एवं रचनाएँ बहुत ही रोचक, सारगर्भित एवं ज्ञानवर्धक है। इस अंक के प्रकाशन में संपादक मंडल द्वारा किया गया प्रयास अत्यंत सराहनीय एवं प्रशंसनीय है।

आशा है कि गृह पत्रिका "रेशम भारती" आने वाले वर्षों में भी इसी प्रकार सफलता के पथ पर आगे बढ़ती रहेगी। शुभकामनाओं सहित।

• उमा एस.जी., सहायक निदेशक (रा.भा.), वैमानिकीय विकास संस्थापन (एडीई), डी.आर.डी.ओ., रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, न्यू तिप्पसंद्रा पोस्ट, बेंगलूरु – 560 075

आपके द्वारा भेजी गयी पत्रिका "रेशम भारती" अंक जून-2018 प्राप्त हुई। पत्रिका की साज-सज्जा उत्कृष्ट, आकर्षक एवं मनमोहक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख स्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय है विशेषतः कुछ सामग्री बहुत पसंद आयी – उल्लेख करना उचित होगा। 1. जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में जैव-विविधता के महत्व 2. मेरी जापाना यात्रा एक अनुभव 3. रेशम उद्योग : महिला सशक्तिकरण का एक साधन 4. भारतीय रेशम प्रक्रमण उद्योग : वर्तमान स्थिति तथा एस डब्ल्यूओटी विश्लेषण। हमारे कार्यालय को यह पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद। राजभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए आपको एवं पत्रिका से संबद्ध सभी महानुभावों को सादर धन्यवाद एवं आभार।

• रामस्वरूप वर्मा, राजभाषा अधिकारी, एन.टी.सी.लि., कोर-4, स्कोप काम्प्लेक्स, 7-लोधी रोड, नई दिल्ली - 110 003

"रेशम भारती" अंक जून-2018 की प्रति प्राप्त हुई। रेशमकीट एवं उद्यान की मनोरम छटाओं से सज्जित, आकर्षक आवरण पृष्ठ के साथ समसामयिक विषयों पर रोचक लेख, प्रेरक कहानियाँ, कविताएँ तथा भारतीय रेशम उद्योग पर रेशम की मृदुता से पोषित, सुगम एवं सरल शब्दों से स्पंदित, अनुसंधानपरक सूचनात्मक सामग्री उपलब्ध कराने के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। इसमें प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय हैं जो पाठकों के मनोरंजन-मनमंजन के साथ ज्ञानवर्धन भी

कराता है। रेशम भारती का संपादकीय कौशल, विषय संयोजन अनुकरणीय है। विशेषतः देश के कोने-कोने के रचनाकारों की रचनाओँ के समावेशन के जरिए राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का प्रयास स्तुत्य व सराहनीय है।

इस केन्द्र की ओर से श्री राधेश्याम यादव, क.हि.अ.से प्राप्त स्वरिचत कविता "यह भी एक जीवन है," रेशम भारती में प्रकाशनार्थ संप्रेषित है। रेशम भारती की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाओं सहित।

• के.गणेश राज, भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, क्षेत्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र, दक्षिण, आईसाइट कैंपस, मारतहल्लि, बेंगलूरु – 560 037

"रेशम भारती" अंक जून-2018 प्राप्त हुई। रेशम भारती पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद! आशा करती हूँ कि भविष्य में आपका सहयोग भाव बना रहेगा और पत्रिका हमें मिलती रहेगी। धन्यवाद।

• शशिकला एन.एस., प्रशासनिक अधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी, सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया, सं.76 व 77, छठवां तस साइबर पार्क, कियोनिक्स इलेक्ट्रॉनिक सिटी, होसूर रोड, बेंगलूरु – 560 100

आपका पत्र एवं प्रिय "रेशम भारती" पत्रिका का अंक जून-2018 अंक मिला। बहुत धन्यवाद। इस अंक में आपने अनेक अच्छी रचनाएँ प्रकाशित की हैं। इसीलिए पत्रिका का यह अंक मुझे अत्यंत मनोहारी और रोचक लगा। वैसे तो इसकी सारी रचनाएँ अच्छी लगीं, लेकिन जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में जैव विविधता के महत्व, मेरी जापान यात्रा – एक अनुभव, रेशम उद्योग : महिला सशक्तिकरण का एक साधन, एक अटल प्रश्न, शिक्षा का माध्यम स्वदेशी भाषा हिन्दी, भ्रष्टाचार, समस्या और समाधान, जैसा देश वैसा भेष एवं मेरी प्रथम वायुयान यात्रा शीर्षक रचनाएँ ज्ञानवर्धक, रोचक एवं उपयोगी लगीं।

वहीं शक्तिनाद, प्रतीति, विविध भारती, लाख टका मोर मोल, बुढ़ापा, गंगा, बनारस, चिड़िया पेड़ पहाड़ और आकाश, विश्व हिन्दी दिवस, मन मंदिर एवं स्वच्छता अभियान शीर्षक कविताएँ पत्रिका के आकर्षण का केन्द्र रहीं।

आशा करता हूँ कि दिन-व-दिन यह पत्रिका और अच्छी होती जाएगी, यही मेरी शुभकामना भी है। एक अच्छे अंक के प्रकाशन के लिए संपादक श्री आर.डी.शुक्ल के साथ-साथ पत्रिका का संपूर्ण संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

• चेतनादित्य आलोक, साहित्यकार, पत्रकार एवं चिंतक, संस्कार, रोड नं.3, विद्या नगर (पश्चिम), हरमू, राँची-834002 (झारखंड)

"रेशम भारती" अंक जून-2018 की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका अधिक उपयोगी, स्वछंद एवं सराहनीय है। समयानुसार कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा लिखी गई मौलिक रचनाएँ आपको प्रस्तुत की जाएंगी।

• डॉ. के. प्रवीण कुमार, वैज्ञानिक-डी, क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, केरेबो, सिद्धिपेट जिला, मुलुगु-502279, तेलंगाना

"रेशम भारती" का बहुप्रतीक्षित जून-2018 का अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का मुख पृष्ठ आकर्षक और प्रकाशित सामग्री रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका का नियमित न होना खलता है। बोर्ड के कार्यालयों की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ सराहनीय है। कविता, संस्मरण एवं विविध विषयों पर लेखों के प्रकाशन से पत्रिका की उपयोगिता बढ़ती है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक एवं उनके सहयोगियों को बधाई।

• विष्णु वर्मा, ग्रा./पो.- ककोली – 224 195, फैजाबाद, जिला - अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

यह कहते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है कि हिंदी पत्रिका की दुनिया में, रेशम भारती की भी बहुत अच्छी पहचान बन चुकी है। इसके रेशमी कलेवर को देखकर हमारे मन में कई विचारधाराएँ उत्पन्न होने लगती हैं और कुछ लिखने को हमारी आत्मा हमें झकझोरने लगती है। रेशम भारती की बनावट, इसकी बुनावट को देखकर ऐसा कौन हिंदी साहित्यकार होगा जो भारतवर्ष की इस भारती के प्रति कुछ कह उठने को लालायित न हो? इसकी बनावट और बुनावट को देखने से ऐसा लगता है कि मानों, रेशमी धागे से ही इसे बुना गया हो अथवा रेशमी धागे से ही, इसके सभी शब्द तैयार किए गए हों। माँ सरस्वती के प्रांगण में प्रस्तुत की गई पूज्य पत्रिका रेशम भारती को हम प्रणाम करते हैं और इस पवित्र पत्रिका का आशीर्वाद हम चाहते हैं ताकि हमारी कलम, चलती रहे।

इसी प्रसंग में हम यह भी बताना चाहेंगे कि किसी भी रचनाकार की रचना, रचनाकार का चेहरा देखकर रेशम भारती में कभी भी प्रकाशित नहीं की जाती। जितनी भी रचनाएँ इसमें प्रकाशित की जाती हैं वे सभी, यथार्थतः रचनाओं की गुणवत्ता एवं अंतर्निहित भावों को देखकर ही प्रकाशित की जाती है। रेशम भारती का मूल्यांकन तो हिंदी जगत के अनेक समीक्षकों ने बहुत गहराई से किया है। रस की दृष्टि से अगर इस पत्रिका को देखा जाए तो इस दृष्टि से भी यह पत्रिका, कम महत्वपूर्ण दिखाई नहीं देती। इसके सभी अंकों में, हिंदी साहित्य संसार के प्रायः सभी रस, अवश्य देखने को मिल जाते हैं। जून, 2012 की पत्रिका रेशम भारती देखने, पढ़ने हेतु हमें मिली। इसको पढ़ते वक्त इसमें भारत की तस्वीर को हमनें देखा। लुभावनी रेशम भारती के आकर्षक मुख पृष्ठ को देखकर तो इस अंक को धरोहर की तरह रखने का मन करता है। इसके लिए संपादक एवं संपादक मंडल को बधाई।

अब अंत में, मात्र हम इतना ही कहना चाहेंगे कि पत्रिका रेशम भारती में बहुत ही आकर्षण शक्ति है। यह पत्रिका बराबर निकलती रहे हमारी यही इच्छा है।

• डॉ.दयानाथलाल, तीसती गली, राज कॉलोनी, सिविल लाइन्स, जी.टी.रोड, सासाराम-821115, जिला रोहतास, बिहार